ई-अंक - 4

वर्ष-2023-24

शब्द

आयकर विभाग, मुंबई की गृह पत्रिका

प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, मुंबई प्रभार में आयोजित विविध गतिविधियाँ

करदाता लाउन्ज का उद्घाटन

माननीय संसदीय राजभाषा समिति का निरीक्षण

रोजगार मेला

आयकर दिवस समारोह

स्वच्छता पखवाड़ा

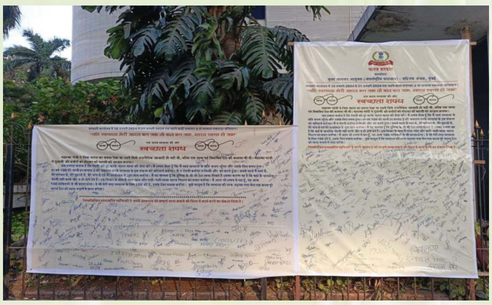

वर्ष-2023-24 ई-अंक - 4

शब्द

आयकर विभाग, मुंबई की गृह पत्रिका

✤ संरक्षक ✤

श्री यशवंत यू. चव्हाण
प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, मुंबई

✤ प्रधान संपादक ✤

श्री सुशील कुमार पोद्दार
प्रधान आयकर आयुक्त(निर्धारण इकाई)-1 एवं राजभाषा अधिकारी, मुंबई

✤ संपादक मंडल ✤

श्री विरेन्द्र ओझा, प्रधान आयकर आयुक्त
श्री मुदित श्रीवास्तव, अपर आयकर आयुक्त
श्री पवन साईल, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
श्री सौरभ राय, अपर आयकर आयुक्त
श्रीमती बबीता सुर्वे, उपनिदेशक(राजभाषा)
श्रीमती सुनीता कुमारी, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

✤ टंकण सहयोग ✤

श्री अंकित राज, आशुलिपिक

✤ आवरण पृष्ठ ✤

मुंबई शहर की ऐतिहासिक धरोहर

✤ संपर्क पता ✤

प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त का कार्यालय,
राजभाषा अनुभाग, कमरा सं. 265, आयकर भवन, महर्षि कर्वे रोड, मुंबई - 400020.
ई-मेल : mumbai.dd.ol@incometax.gov.in

(इस ई-पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ लेखकों के निजी विचार या मंतव्य हैं,
उनसे संपादक मंडल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।)

सत्यमेव जयते

भारत सरकार GOVERNMENT OF INDIA

प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त

PRINCIPAL CHIEF COMMISSIONER OF INCOME TAX

321, आयकर भवन, महर्षि कर्वे मार्ग, मुंबई - 400 020.
321, Aayakar Bhavan, Maharshi Karve Road, Mumbai-400 020.

यशवंत यू. चव्हाण, भा.रा.से.
YESHWANT U. CHAVAN, I.R.S.

शुभकामना संदेश

मुंबई प्रभार की गृह पत्रिका 'शब्द' के 21 वें अंक के प्रकाशन पर मुझे बेहद खुशी हो रही है।

विभाग की कार्य प्रणाली में व्यापक परिवर्तन के बावजूद सभी पदधारियों ने बड़ी ही सूझ-बूझ एवं प्रभावी तरीके से न केवल विभागीय कर-निर्धारण और कर-संग्रहण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है, बल्कि राजभाषा हिन्दी में भी सराहनीय कार्य किया है। संसदीय राजभाषा समिति द्वारा आयकर विभाग, मुंबई के राजभाषा निरीक्षण में भी विभाग का प्रदर्शन काफी अच्छा रहा है।

विभिन्न भाषाओं में लिखा गया साहित्य पढ़ने से हमारे व्यक्तित्व में निखार आता है और लिखने की आदत हमारे विचारों को सूत्रबद्ध व स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने में सहायक होती है। मैं, पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने विभाग में अपने दायित्वों को प्रभावी तरीके से निभाते हुए हिन्दी में अपनी रचनाएं लिखी हैं और अपना सक्रिय योगदान दिया है।

मैं पत्रिका के सफल एवं निरन्तर प्रकाशन की कामना करता हूँ।

यशवंत यू. चव्हाण

शुभकामना संदेश

मुंबई प्रभार की 'शब्द' पत्रिका एक ऐसा माध्यम है जो व्यक्ति की सांस्कृतिक और भाषाई सीमाओं को पार कर उन्हें भावों, ईच्छाओं के सागर से जोड़ती है। राजभाषा हिन्दी के विकास व सरकारी आदेशों, अनुदेशों के कार्यान्वयन की दिशा में 'शब्द' पत्रिका का अनवरत प्रकाशन सराहनीय है। मैं, पत्रिका के संपादक मण्डल व रचनाकारों के योगदान की सराहना करती हूँ तथा पत्रिका के उत्तरोत्तर अच्छे साहित्य के साथ प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएं व्यक्त करती हूँ।

परमिन्दर

प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त (वि.का.अधि.)
प्रभारी मुख्य आयकर आयुक्त-5, मुंबई

मैं आशा करता हूँ कि 'शब्द' पत्रिका आपका मनोरंजन व ज्ञानवर्धन करेगी और विभागीय प्रतिभाओं को विचार अभिव्यक्ति का सशक्त मंच प्रदान करेगी।

मैं 'शब्द' के गौरवपूर्ण प्रकाशन के लिए बधाई देता हूँ।

जयंत मिश्र

प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त (वि.कार्य पदा.)
प्रभारी मुख्य आयकर आयुक्त – 9, मुंबई

आयकर विभाग मुंबई के राजभाषा परिवार ने विभाग की गृहपत्रिका के माध्यम से विभाग में छुपे रचनाकार, कहानीकार, लेखक, कवि इत्यादि क्षमता रखने वाले प्रतिभावान अधिकारियों तथा कर्मचारियों की कला को उजागर किया है। मैं सभी रचनाकारों तथा पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े पदधारियों को पत्रिका की सफलता के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ।

नरेश कुमार बालोदिया

मुख्य आयकर आयुक्त-6, मुंबई

गृह पत्रिका 'शब्द' के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

मुझे गर्व है कि हमारे विभाग में ऐसे कई प्रतिभाशाली कर्मचारी हैं, जो अपने शब्दों के माध्यम से समाज में अद्वितीय प्रभाव छोड़ने के लिए समर्थ हैं।

जहाँजेब अख़्तर

मुख्य आयकर आयुक्त – 7 एवं 10, मुंबई

गृह पत्रिका 'शब्द' साल-दर-साल अपनी उत्कृष्ट रचनाओं के साथ विभागीय पाठकों के बीच लोकप्रिय हुई है। निश्चित रूप से इसमें रचनाकारों एवं सम्पादक मंडल की प्रमुख भूमिका होगी। इस उपलक्ष्य में मेरी अनेकानेक शुभकामनाएं!

डॉ. प्रबोध सेठ

आयकर महानिदेशक (अन्वेषण), मुंबई

शुभकामना संदेश

आयकर विभाग, मुंबई की गृहपत्रिका "शब्द" के वर्ष 2023-24 के अंक के लिए मैं आयकर विभाग के सभी रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि विभाग के अन्य पदाधिकारी भी इससे प्रेरणा प्राप्त करेंगे तथा पत्रिका के लिए भविष्य में अवश्य अपना योगदान देंगे। पत्रिका के संपादक मंडल को मेरी शुभकामनाएँ।

सुमीत कुमार
मुख्य आयकर आयुक्त-3, मुंबई

यह बहुत ही हर्ष का विषय है कि प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, मुंबई कार्यालय द्वारा प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी गृह पत्रिका 'शब्द' के 21 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका के प्रकाशन में अपनी सराहनीय भागीदारी दर्ज करने वाले सभी रचनाकारों एवं प्रकाशन में अतुलनीय योगदान हेतु प्रकाशन समिती के सदस्यों को बधाई देती हूँ।

मालती आर. श्रीधरन
मुख्य आयकर आयुक्त
(अंतराष्ट्रीय कराधान एवं मूल्य अंतरण), मुंबई

आयकर परिवार, मुंबई की गृह पत्रिका 'शब्द' के इक्कीसवें अंक के प्रकाशन की बधाई।

गृह पत्रिका किसी कार्यालय के कार्मिकों की सृजनशीलता एवं रचनात्मकता को प्रदर्शित करती है। पत्रिका वर्षभर की गतिविधियों की झांकी भी प्रस्तुत करती है, जिसके माध्यम से कार्यालय की उपलब्धियों को भी साझा किया जा सकता है।

मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है कि विभाग में अत्यंत धनी प्रतिभा के अधिकारी एवं कर्मचारी हैं, जिनकी रचनाओं से पत्रिका रोचक हो गई है।

'शब्द' पत्रिका के वर्तमान एवं आगामी अंकों के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

नरेन्द्र कुमार चान्द
मुख्य आकर आयुक्त (केंद्रीय)-1, मुंबई

मुंबई प्रभार की गृह पत्रिका 'शब्द' के 21 वें संस्करण में उत्कृष्ट लेख, समीक्षा और कविताओं का संगम देखने का अवसर प्राप्त हुआ है जो अत्यंत ही हर्ष का विषय है। इस पत्रिका का उद्देश्य मनोरंजन, ज्ञान और सोच की गहराई में ले जाना है।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल एवं रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

एम. अनिल कुमार
मुख्य आयकर आयुक्त - 8 एवं 11, मुंबई

मुझे यह जानकार अति प्रसन्नता हो रही है कि मुंबई प्रभार विभागीय पत्रिका 'शब्द' के 21 वें अंक का प्रकाशन कर रहा है।

भारतीय संस्कृति एवं भाषाई विविधता से लबरेज यह पत्रिका आयकर विभाग के विभागीय रचनाकारों के साहित्य के प्रति रुझान को उद्घाटित करती है। आशा है कि पत्रिका के प्रकाशन से पदधारियों में साहित्य के प्रति रुझान एवं जुड़ाव बढ़ेगा।

मैं इस पत्रिका के संपादक मण्डल को उनके अथक परिश्रम एवं रचनाकारों को उनकी सृजनात्मकता के लिए हार्दिक बधाई देती हूँ।

सुरभि वर्मा गर्ग
मुख्य आयकर आयुक्त-2, मुंबई

शुभकामना संदेश

'शब्द' पत्रिका का प्रकाशन कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का राजभाषा हिन्दी के प्रति प्रेम एवं कर्तव्यनिष्ठा को दर्शाता है। 'शब्द' पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि आप सभी अपने कर्तव्यों का समुचित पालन करते हुए इस पत्रिका के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति का नवीन आयाम प्रस्तुत करते रहेंगे।

अमल पुष्प

मुख्य आयकर आयुक्त (स्त्रोत पर कर कटौती), मुंबई

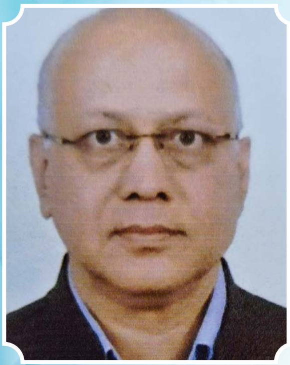

गृह पत्रिका 'शब्द' के 21वें अंक का प्रकाशन आयकर विभाग के लिए बहुत ही प्रसन्नता का विषय है। पत्रिका का प्रकाशन विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा के साथ-साथ ज्ञानवर्धक विचारों एवं सृजनात्मकता को प्रकट करने का अच्छा माध्यम है। इस पत्रिका के जरिए हम लेखन विधा में रुचि रखने वाले कार्मिकों की प्रतिभा से रु-ब-रु हो पाते हैं।

'शब्द' के इस अंक के प्रकाशन में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जुड़े अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

विमलेन्दु वर्मा

मुख्य आयकर आयुक्त (कें.)-2, मुंबई

गृह पत्रिकाओं का प्रकाशन राजभाषा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह प्रदर्शित करता है कि विभाग के अधिकारी/कर्मचारी अपनी व्यस्तताओं के बावजूद कुछ लिखने, रचने का प्रयास करते हैं। इससे उनकी रूचियों को नया आयाम मिलता है एवं उन्हें इससे प्रोत्साहन मिलता है। पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा हिन्दी को लोकप्रिय बनाने में बहुत सहायक है।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास भी है कि यह पत्रिका विभाग के अधिकारियों, कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने की प्रेरणा देगी।

सुलेखा वर्मा

मुख्य आयकर आयुक्त-1, मुंबई

मुंबई प्रभार की गृह पत्रिका "शब्द" का 21वाँ अंक प्रकाशित करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। पत्रिका को दिन-प्रतिदिन और बेहतर, परिष्कृत करने का हमारा प्रयास रहा है। राजभाषा में कार्य को बढ़ावा देने के लिए अधिकारियों और कर्मचारियों को अपनी सहज भाषा में उसे अभिव्यक्ति का माध्यम बनाना जरूरी है। 'शब्द' पत्रिका का प्रत्येक अंक इसमें सहयोगी भूमिका निभाता रहा है। हमारा प्रत्येक प्रयास राजभाषा के प्रति अपने संवैधानिक दायित्व को शिद्दत से पूर्ण करने के लिए बढ़ाया गया कदम है। मैं, इस अवसर पर विभागीय रचनाकारों को उनके सहयोग के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ।

विनय सिन्हा

आयकर आयुक्त (प्रशासन एवं करदाता सेवाएं), मुंबई

गृह पत्रिका एक माध्यम है जिसके द्वारा आयकर प्रभार, मुंबई के पदधारियों ने अपनी भावनाओं, अनुभवों, विचारों को साहित्य के विभिन्न रूपों में जैसे कविताएं, कहानियाँ, नाटक, निबन्ध, पुस्तक समीक्षा इत्यादि के माध्यम से बहुत ही खुबसूरती के साथ प्रस्तुत किया है। विभाग में वर्ष के दौरान आयोजित विभिन्न गतिविधियों एवं क्रियाकलापों को भी इसमें सम्मिलित किया गया है। हमें आशा है कि आपको यह पत्रिका बेहद पसंद आएगी। पत्रिका से प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से जुड़े सभी पदधारियों और संपादक मंडल को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

डॉ. सौरभ देशपांडे

अपर आयकर आयुक्त (मुख्यालय), प्रशासन, मुंबई

सत्यमेव जयते

भारत सरकार GOVERNMENT OF INDIA

प्रधान आयकर आयुक्त (निर्धारण इकाई)-1

PRINCIPAL COMMISSIONER OF INCOME TAX (A.U.)-1

408, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स, चौथी मंजिल, मुंबई-400 051.
408, Bandra Kurla Complex, 4th Floor, Mumbai-400 051.

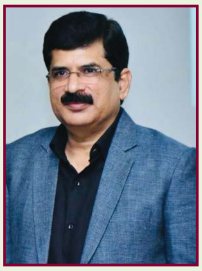

सुशील कुमार पोद्दार, भा.रा.से.
SUSHIL KUMAR PODDAR, I.R.S
राजभाषा अधिकारी, मुंबई

प्रधान संपादक की कलम से....

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। स्पष्ट है, समाज में घटित घटनाओं का उसके अंतर्मन पर सतत् प्रभाव पड़ता रहता है।

इन प्रभावों की अभिव्यक्ति कभी रचित किसी लेख, कविता में परिणित होती है तो कभी समाज उद्बबोधन के लिए। नाटक, कहानी, निबंध, कविता, संस्मरण इत्यादि इन्हीं वैचारिक अनुभूतियों का मूर्त रूप है।

हम सभी अपने कार्यालयीन जीवन के साथ-साथ समाज में घटित इन विभिन्न अनुभवों से होकर गुजरते हैं और यदि हम स्वयं को व्यक्त करने का कोई माध्यम ढूँढ लेते हैं तो शायद ऐसे संप्रेषण हमें खुद से जोड़ते हैं। "शब्द का यही प्रयास है। एक माध्यम है, हमारे अधिकारियों और कर्मचारियों की अभिव्यक्ति का, उनकी रचनात्मक और सृजनात्मक प्रतिभा को मुखरित करने का।

इसी क्रम में प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, मुंबई प्रभार से गत 20 वर्षों से गृह-पत्रिका 'शब्द' का सतत प्रकाशन किया जा रहा है और यह तभी संभव हो पाया है जब विभागीय रचनाकारों का हमें निरंतर सहयोग मिला है। इसी प्रयास में 'शब्द' का 21वां अंक जो सुधी पाठकों के लिए विविध विधाओं में रचनाओं से परिपूर्ण करने की कोशिश है, हम प्रस्तुत कर रहे हैं। इस अंक में पहली बार हमने विभागीय रचनाकारों की पुस्तकों की समीक्षा को भी सम्मिलित किया है ताकि आप सभी इन कृतियों के बारे में जान सकें व इनका आनंद ले सकें। साथ ही कहानी, कविता, नाटक व मुंबई प्रभार में वर्ष के दौरान आयोजित विविध कार्यक्रमों की झलकियों को इसमें समाविष्ट किया गया है।

मैं, विभाग के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों का तहेदिल से शुक्रगुजार हूँ क्योंकि उन्होंने अपने व्यस्त समय में से समय निकालकर हमें निर्धारित समय पर अपनी रचनाएं उपलब्ध करवाई हैं और सम्पादक मंडल ने भी इन्हें अपना पूरा समय देकर संपादन कार्य में सहयोग किया है। हमें आशा है यह अंक आप सभी को पसंद आएगा। आपकी प्रतिक्रियाएं आने वाले "शब्द" के अंक को बेहतर बनाने में सहायक होंगी।

एस. के. पोद्दार

सुशील कुमार पोद्दार

विषय सूची

शीर्षक	रचनाकार का नाम व पदनाम	पृ. क्र.
❖ मिशन इंटरसिटी	अजीत पाल सिंह दैया, अपर आयकर आयुक्त	1
❖ यक्ष – द्रौपदी संवाद	वीरेन्द्र ओझा, प्रधान आयकर आयुक्त	3
❖ हीरो	राजेश उपाध्याय, आयकर अधिकारी	6
❖ धूप का कुँआ	विवेक पेरमपूर्णा, आयकर आयुक्त	7
❖ आज मैं बस मैं बनना चाहती हूँ	तेजश्री तुकाराम घाडीगांवकर, कर सहायक	8
❖ रास्ते का पत्थर	दसारी महेन्द्र, निरीक्षक	9
❖ विभागीय रचनाकारों की पुस्तकों की समीक्षा-		
i. इलाहाबाद डायरी एक गैर मामूली दास्तान	सुशील कुमार पोद्दार, प्रधान आयकर आयुक्त	10
ii. धूप, चाँदनी और स्याह रंग		
iii. ब्लेज (Blaze)	सुनील कुमार झा, प्रधान आयकर निदेशक(अन्वेषण), भुवनेश्वर	
iv. अर्जवम (Arjavam)		
❖ क्यों सच को ढूँढते हो	जसदीप सिंह, प्रधान आयकर आयुक्त	16
❖ ब्रज के छलिया की कृपा	आशीष वर्मा, आशुलिपिक	17
❖ मूक संवाद	वीरेन्द्र ओझा, प्रधान आयकर आयुक्त	18
❖ जो दर्द मेरा तेरी आँखों से बहा होता	जसदीप सिंह, प्रधान आयकर आयुक्त	19
❖ आग्रह	मुदित श्रीवास्तव, अपर आयकर आयुक्त	19
❖ किरण	परवेज़ खान, निरीक्षक	21
❖ गीत	आयुष कुमार कश्यप, निरीक्षक	29
❖ जीवन का सार	अर्पिता अभिजीत सावंत, निरीक्षक	29
❖ हमारा देश भारत	मनु गुप्ता 'संगरिया', आशुलिपिक	30
❖ कुर्सी	रामकृष्ण केडिया, अपर आयकर आयुक्त	31
❖ पांचाली का अपमान	सत्यम ठाकुर, आयकर उपायुक्त	32
❖ राजभाषा हिंदी संबंधी गतिविधियों पर रिपोर्ट	रमणजय सिंह, सहायक निदेशक	33
❖ जिंदगी	मुकेश कुमार, कर सहायक	41
❖ निर्मूल्य	अनुज चौबे, आयकर अधिकारी	41
❖ मेरा बुद्ध हो जाना	अजीत पाल सिंह दैया, अपर आयकर आयुक्त	42
i. अग्रसर	विशाखा (श्रमिका), निरीक्षक	44
ii. कलम्		
iii. माँ		
i. महिला दिवस विशेष	इन्द्र सोलंकी, अपर आयकर आयुक्त	45
ii. मित्रता दिवस विशेष		
❖ भारतीय संस्कृति के अनोखे तत्व	प्रशांत कवडे, वरिष्ठ कर सहायक	46
❖ बाबुल	प्रशांत पौनीकर, निरीक्षक	47
❖ क्या लिखूँ ?	किशोर शुक्ल, वरिष्ठ कर सहायक	48
❖ शाम, कलम और मैं	जसवंत चारण, विविध कार्य कर्मचारी	48
❖ डिजिटल इण्डिया-कितना डिजिटल हुए हम	सुमित कुमार, कार्यालय अधीक्षक	49
❖ हुआ चूरा-चूरा	परवेज़ खान, निरीक्षक	51
❖ हिंदी की उपस्थिति	कुमार गौरव, वरिष्ठ कर सहायक	52
❖ राजभाषा 'हिंदी'	वीरेन्द्र कुमार त्रिपाठी, विविध कार्य कर्मचारी	52
❖ कृत्रिम बुध्दिमत्ता का भविष्य	धीरज झांबरे, कार्यालय अधीक्षक	53
❖ स्लोगन	स्मिता सु. कातोरे, प्रशासनिक अधिकारी	54
❖ कविता	सुनीता कुमारी, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी	55
❖ नया सफर	रोहित कुमार साहू, विविध कार्य कर्मचारी	55
❖ हिंदी: राजभाषा से विश्व–भाषा की ओर	निकिता टाक, आशुलिपिक	56
i. माझी डायरी	मनीष कासोदेकर, आयकर उपायुक्त	58
ii. सरकारी फाइल		
❖ कॉफी	ज्योति रविन्द्र जाधव, आयकर अधिकारी	60
❖ मुंबईची लोकलराणी	वर्षा गणेश खोपकर, प्रशासनिक अधिकारी	61
❖ नातीचरामी	ज्योति रविन्द्र जाधव, आयकर अधिकारी	62
❖ ईश्वरतुल्य बाबाआई	वर्षा गणेश खोपकर, प्रशासनिक अधिकारी	68
❖ हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2024-25 का वार्षिक कार्यक्रम		69

मिशन इंटरसिटी

योजना भवन के आधारतल 'ब' में स्थित एक्जामिनेशन हाल की घड़ी में शाम के पाँच बजने में मात्र चार-पाँच मिनट ही शेष थे। अजय सिंह यूपीएससी की सिविल सेवा परीक्षा का भूगोल द्वितीय का अपना आखरी परचा लिख चुका था और उसकी नज़रें लगातार घड़ी के सेकंड के कांटे के साथ-साथ तीन सौ साठ डिग्री के राउंड लगा रही थीं। इस वक़्त उसके दिमाग में एक ही बात थी कि ठीक पाँच बजते ही एक्जामिनेशन हाल के मेन गेट खोले जाएंगे, उसे सर्वप्रथम भागना होगा और सहपरीक्षार्थियों की भीड़ के रेले में से येन केन प्रकारेण आगे बढ़कर जल्द से जल्द योजना भवन से बाहर हो जाना होगा और कितना अच्छा होगा कि योजना भवन के गेट पर ही उसे एक ऑटो रिक्शा मिल जाए और वह जयपुर रेलवे स्टेशन पर पहुँच

कर इंदौर से आने वाली जयपुर-जोधपुर इंटरसिटी पकड़ सके। इस ट्रेन को रणथंभौर एक्सप्रेस भी कहा जाता है। ठीक पाँच बजे एक्जामिनेशन हाल के गेट खुलेंगे और ठीक पाँच बजकर बीस मिनट पर इंटरसिटी एक्सप्रेस जयपुर रेलवे स्टेशन से जोधपुर के लिए रवाना हो जाएगी। अजय सिंह अन्तर्मन से प्रार्थना कर रहा था कि काश यह ट्रेन दस-पंद्रह मिनट लेट हो जाए तो वह आसानी से टिकट लेकर यह ट्रेन पकड़ पाएगा। पर वह सर्वथा आशंकित था क्योंकि यह ट्रेन शायद ही कभी लेट होती थी। कम से कम पिछले दस-पंद्रह दिनों का रिकॉर्ड तो यही था कि ठीक शाम 5.20 को यह ट्रेन रवाना हो जाती थी। शायद इस प्रकार की उधेड़ बुन में अजय सिंह अकेला न होगा। जोधपुर जैसे छोटे शहर से जयपुर आकर सिविल सेवा की परीक्षा देनेवाले बीसियों परीक्षार्थी इसी प्रकार की जल्दबाज़ी में रहते थे। खासकर मध्यम वर्ग के ये युवक धर्मशाला या सस्ते होटल में रुकते थे और आखिरी परचे के दिन सवेरे ही चेक आउट करके अपना बैग इत्यादि लेकर परीक्षा केंद्र पहुँच जाते थे ताकि उन्हें एक दिन का भाड़ा और न देना पड़े और शाम की इंटरसिटी को किसी प्रकार पकड़ कर जोधपुर के लिए रवाना हो सकें।

अजय सिंह भी सुबह पंचायती धर्मशाला जो रेलवे स्टेशन के पास ही स्टेशनरोड के बाजू में स्थित है, में अपना कमरा खाली कर अपना सामान परीक्षा केंद्र में साथ ले आया था, ताकि शाम को जैसे ही परीक्षा खत्म हो अपना बैग उठाया और रेलवे स्टेशन की ओर चल पड़े। खैर, अजय सिंह अपनी उत्तर पुस्तिकाएँ इनविजिलेटर को पहले ही पकड़ा चुका था। ठीक पाँच बजे परीक्षा खत्म हुई। परीक्षा भवन के गेट खुले और अजय सिंह फुर्ती से बाहर की ओर भागा गोया कि जयपुर में उसकी जान को खतरा है और उसे किसी तरह भागकर अपनी जान बचानी है। वैसे जोधपुर के बाशिंदे होते ही ऐसे हैं, उन्हें अपने शहर से इतना लगाव होता है कि वे शहर से बाहर अत्यंत ज़रूरी हो जाने पर ही जाते हैं और ऐसी कोशिश में रहते हैं कि जितना जल्द घर जा सकें उतना अच्छा हो। सो अपना बैग उठा कर झटपट योजना भवन से बाहर आकर अजय सिंह ने इधर-उधर नज़रें घुमायीं तो चार-पाँच ऑटो नज़र आए पर वे तो पहले से बुक थे। अतः उसको सौ-डेढ़ सौ मीटर पैदल चलना पड़ा तब जाकर एक खाली ऑटो मिला। अजय सिंह व ऑटोचालक में क्षणिक बारगेनिंग हुई। ऑटोचालक पचास के बजाय चालीस में राजी हो गया और अजय सिंह भी समय की नज़ाकत को समझते हुए पच्चीस के बजाय चालीस रुपये देने को तत्पर हो गया। अगर समय का तकाज़ा नहीं होता तो अजय सिंह को पच्चीस रुपये भी बचाने के लिए पाँच-छः किलोमीटर पैदल चलने में कोई गुरेज नहीं था पर अभी एक ही संकल्प था- मिशन इंटरसिटी।

अरे भाई, तुम्हारे खटारे को जल्दी स्टार्ट करो। अजय सिंह ऑटोचालक पर झल्लाया। कर तो रहा हूँ, साहब। ऑटोचालक का प्रत्युत्तर था। किन्तु उसके बोलने का एक निहितार्थ यह भी था कि इतनी जल्दी है तो मेरे ऑटो से उतर जाओ और कोई और ऑटो तलाश करो।

गर्र-गर्र...ऑटो चालू हुआ और ऑटोचालक ने अपनी पूरी क्षमता से ऑटो को दौड़ाया। जयपुर की बढ़ती ट्रैफिक से बचते-बचाते लघुतम मार्ग से लेते हुए ऑटोचालक ने आखिर अजय सिंह को रेलवे स्टेशन के ठीक सामने उतारा। अजय सिंह ने भी फटाफट चालीस रुपये ऑटोचालक को थमाए और बिजली की रफ्तार से टिकट काउंटर की ओर दौड़ा।

पाँच बजकर दस मिनट हो चुके थे। पाँच बजकर बीस मिनट पर इंटरसिटी रवाना हो जाएगी। अब सिर्फ दस मिनट बाकी थे। एक जनरल का टिकट खरीद कर ओवरब्रिज पर चढ़कर प्लेटफॉर्म नंबर तीन पर खड़ी ट्रेन को पकड़ना अब लगभग नामुमकिन ही लग रहा था। अजय सिंह को ज्ञात हुआ कि ट्रेन अपने निर्धारित समय पर ही जयपुर आ चुकी थी और अगले आठ-दस मिनट में निश्चित रूप से रवाना हो जाएगी। लेकिन टिकट काउंटर पर लगी लंबी कतारों को देखकर उसे भारी निराशा हो गयी। उसे कतई नहीं लगा कि किसी भी कतार में खड़े होने पर भी वह कम से कम आधा- पौन घंटे से कम समय में टिकट काउंटर क्लर्क तक पहुँच पाएगा, उसके बाद चिल्लर के लिए क्लर्क अलग जिक-जिक करेगा। अजय सिंह ने एक कतार में काउंटर के पास खड़े होकर कतार में घुसपैठ करने की असफल कोशिश की। कतार में खड़े लोगों ने जोरदार तरीके से प्रतिरोध करते हुए उसे वापस कतार से बाहर धकेल दिया। 'अरे मेरी इंटरसिटी छूट जाएगी...मुझे पहले टिकट लेने दो' अजय सिंह चिल्लाया पर अब किसमें इतनी इंसानियत और धैर्य बचा था। उसकी आवाज़ नक्कार ख़ाने में तूती की आवाज़ की भांति दब गयी थी। उसकी याचना का किसी पर असर नहीं हुआ। टिकट काउंटर के क्लर्क ने भी यह घटनाक्रम देखा पर उसके दिल में भी दया नहीं उमड़ी। अजय सिंह अत्यंत निराश हो चुका था। उसके ललाट पर पसीने की हल्की-हल्की बूंदें उभर आयी।

एक पिलर से सट कर खड़ा अजय सिंह व्यग्र, उद्विग्न और चिंतित था कि यह ट्रेन छूट गयी तो जाने क्या होगा! तभी एक विकलांग व्यक्ति उसके पास आया। अजय सिंह ने उस व्यक्ति को अक्सर टिकट काउंटरों के आस-पास मँडराते देखा था। विकलांग ने अजय सिंह से पूछा- "जोधपुर की टिकट चाहिए? 150 रुपये लगेंगे...जल्दी बोलो अजय सिंह चकित था।" 95 रुपये की टिकट 150 रुपये में...यानि 55 रुपये ज़्यादा! अगर यह इंटरसिटी छूट जाती है तो अगली ट्रेन रात को बारह बजे मिलेगी। यानि मुझे लगभग सात घंटे स्टेशन पर बिताने पड़ेंगे। इन सात घंटों में भयंकर बोर होना पड़ेगा। चाय-पानी, कोक-पेप्सी...यदि डिनर न भी लूँगा तो हल्का-फुल्का स्नैक्स या पेटीज लेने पर भी नब्बे सौ रुपये तो खर्च हो ही जाएंगे। वक्त का तक़ाज़ा यही है कि 150 रुपये देकर टिकट ही खरीद लिया जाए, कम से कम समय तो बचेगा। साढ़े दस-ग्यारह तक घर पहुँच जाऊंगा, नहीं तो रात बारह तो यहीं बज जाएंगे और पूरी रात लोकल डिब्बे की भयंकर भीड़ में बैठ कर काटनी पडेगी" कुछ ही सेकंडों में अजय सिंह ने बहुत कुछ हिसाब-किताब कर लिया। अब बिना देर किए, उसने विकलांग को 150 रुपये थमाये। यद्यपि, अजय सिंह के मन में एक आशंका तो थी कि कहीं यह व्यक्ति उसके 150 रुपये लेकर चंपत ही न हो जाए पर नहीं, ईमानदार टिकट ब्लैकमेलर चंद सेकंडों में एक सामान्य श्रेणी का टिकट ले आया। अजय सिंह की बांछे खिल गयी, उसने झट से टिकट झपटा और प्लेटफॉर्म तीन की ओर सरपट दौड़ा। दो-ढाई मिनट मात्र शेष। अजय सिंह अभी ओवरब्रिज पर ही पहुँचा था। इंटरसिटी का हूटर बज चुका था। इंटरसिटी के पहिये धीरे-धीरे गति पकड़ रहे थे।

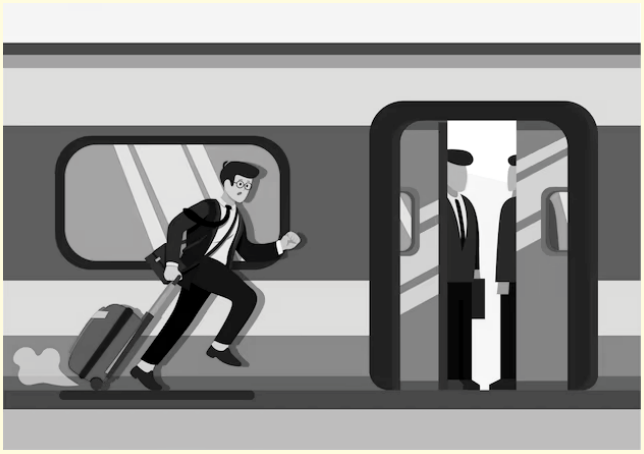

इंटरसिटी फुलेरा जंक्शन पहुँच चुकी थी। अजय सिंह को अभी भी यकीन नहीं हुआ। वह ट्रेन के सबसे आखिर में लगे सामान्य दर्जे के डिब्बे में अभी भी हाँफ रहा था।

अजीत पाल सिंह दैया
अपर आयकर आयुक्त

यक्ष - द्रौपदी संवाद

वह वीर पांडव थे
मृत पड़े धरा पर
वह यक्ष था
प्रश्न कर रहा युधिष्ठिर से
वह युधिष्ठिर थे
उत्तर दे रहे यक्ष को

वह द्रौपदी थी सुन रही थी सारे संवादों को
खोयी प्रश्नों के लालित्य
और उत्तरों के पांडित्य में

युधिष्ठिर ने माँगा जीवन नकुल का
द्रौपदी मन में ही चीख पड़ी
युद्ध का अब क्या होगा
मेरे अपमान का क्या होगा ?
आत्मसम्मान संरक्षित कैसे होगा
मेरे केश कैसे बँधेंगे ?
रक्त दुस्साशन का कौन लाकर देगा ?
मुझे पुनः धर्म की वेदी पर चढ़ाया गया
अपमान को फिर से पीना होगा
अब कौन लड़ेगा युद्ध
धर्म के लिये,
समाज के लिये ,
न्याय के लिये ,
ध्वंस के लिये ,
निर्माण के लिये ,
मेरे लिये

वह चीख़ रही थी अपने ही अंदर
कहा यक्ष से
हे यक्ष मुझे भी अवसर दो

तू भी नश्वर मैं भी नश्वर
दिख रहे जगत में सब योद्धा नश्वर
मोह उसी के आता है
जो जीवन में आसक्ति को ग्राहयता है
पितामह - द्रोण - कृपाचार्य - कर्ण
मौन सब महावीर अन्याय तांडव सभागृह

तू कर हुंकार शब्द-बाणों से
कर शास्त्रार्थ अतल तल प्रश्नों से
समय आज वह आया है
लिख धर्म इतिहास - नवीन संवाद - संधानों से
देख खड़ा वह नराधम
आँखों में जिसके लिप्सा है
देख प्रतापी सब योद्धा
मृत्यु मुकुट तेजेंद्र लिये

सम्मुख तेरे वह दिग्विजयी
हरि अस्त्र गहाने संकल्प लिये
श्वेत वस्त्र में लिपटा है
तुणीर दास का स्वामी है

कहते हैं उसको महागुरू
राज्य- लोभ से प्रेरित है
दिव्यास्त्रों का वह ज्ञाता है
अपराजेय जगत में घोषित है
पर अन्याय संग वह ज्ञानवान
मृत्यु सुनिश्चित ईश्वर योग

परशुराम शिष्य वह अभिशापित
कवच - कुंडलों से जो शोभित है
दानवीर वह योद्धा है
वचनों की मर्यादा से वह च्युत है

कलुषित विकृत वह दुर्योधन
दुशासन महापाप अपराधी
शकुनि की माया का ध्वंस
जीवन का उद्बोधन है

सौ पुत्रों को जिसने जन्मा है
राज्य - लालसा ग्रसित वह
षड्यन्त्रों का वह भागी है
पुत्रों की हत्या का अपराधी
पाप कर्म का वह संरक्षक

हे यक्ष तुम्हारा स्तुतिगान
जग में होगा नित यशोगान
कीर्ति सुदर्शन तेजवान
अवसर दे हित स्वाभिमान
कर रही अनुरोध अग्नि - जन्मान
अंतिम अवसर दे दो मुझको
एक न्याय युद्ध से लड़ने को
परिवर्तन अभीष्ट को पाने को

न्याय नहीं हो पाता है
जब व्यक्ति विवेक - शून्य हो जाता है
व्याख्या धर्मों की व्यक्तिनिष्ठ हो जाती है
आत्म-सम्मान की ध्वजा उठाकर
न्याय- युद्ध का परचम लेकर
न्याय- विधान प्रत्यंचा लेकर
अंबुधि विशाल लहरों पर चढ़कर
निस्तब्ध निलय में प्रण लेकर
रक्त -केश अभिलाषा जी कर
दशो दिशाएँ साक्षी मानकर
महा- शक्ति आमन्त्रित कर
स्निग्ध भावों को धारण कर
अग्नि- देव की स्तुति कर
न्याय - सिंहासन हेतु आह्वान कर
करती उद्घोष द्रुपद नंदिनी इस युग्म प्रहर की
बेला पर
करती आमन्त्रित प्रश्न-शस्त्र वार
ग़र पराजित जल समाधि संकल्पित होकर

प्रश्नातुर प्रस्तुत महाभारती
हे देव यक्ष
प्रस्तुत करो प्रश्न ..
करो प्रस्तुत प्रश्न

नभ में तेजपुंज चहुँओर
कौन्तेय पड़े मृत धरा ओर
स्थिर वायु स्थित-प्रज्ञ जल
नहीं कोलाहल कोई शोर
नयनों का नयनों से संभाषण
नीरवता व्याप्त हर दिशा ओर
चक्षु ओज उगलता गगन ओर

हे अग्निसुता,
आंचल से पोंछ मस्तक किसी एक का
ले ले तू भी जीवन एक योद्धा का
जिस पर तेरा अनुराग समाहित

हे देव किसे मैं चुन लूँ
किसके हित में कर दूँ मैं न्याय-विभाजन
सव्यसाची-महाबाहु-पार्थ
जिसके योगासन - मुद्रा ने मुझको जीता है
भीमसेन वह महाबली जो कुल का एक गौरव है
माद्री पुत्र सहदेव वह रूपवान सबका अनुरागी है
माता का अति स्नेही है ,
भ्राताओं का वह जीवन है
मुझे भी उत्तर देना है
कुंती माता का मातृत्व प्रधान

हे जंगल के संरक्षक देव
न्याय हेतु विधान करो
कुछ वर्षों का जीवन दे दो
निर्माण हेतु सन्नद्ध सभी

मैं प्रस्तुत होऊँगी सम्मुख तेरे
अपने पतियों को साथ लिये
नहीं कुछ गुप्त तुमसे हे देव
केश मेरे अति पीड़ावान
स्त्री मर्यादा का संरक्षण
है सबका जीवन लक्ष्य महान

अगर नहीं दे सकता जीवन
मेरे सारे पतियों का
हे देव मुझे भी ले ले तू
अपने शरणों के संरक्षण में

दे दे अनुमति जल-कुंड प्रवेश
जल समाधि को प्रस्तुत मैं

नभ में विद्युत, वन में कोलाहल
यक्ष नभ में गरज रहा
देवि - देवि तू अति महान
तेरा विचार- आचरण अति सम्मान

मन्त्र - उच्चारण नभ में
यक्ष प्रच्छालित जल हर ओर
उठ रहे योद्धा सारे सम्मुख
यक्ष विलीन अंतरिक्ष ओर ।

युधिष्ठिर बोला भास्वर स्वर में

पृशति - पुत्री का आराधन
अग्नि-जन्मा अति विनयवान

कृष्ण प्रिया वह कृष्णेयी
महाभारती अति नीतिवान

अग्नि से वह जन्मी है
अग्निसुता वह अति तेजवान

द्रुपद-तनुजा हे पांचाली
कौन्तेय करता तुझे प्रणाम

यज्ञसेनी - पंचमणी - नित्यायौवनी - मालिनी -
पत्नी भी है माता भी है
मेरे सारे अनुजों की

जीवन इनका पाकर मैं
अति कृतार्थ तेरा हूँ मैं
इतिहास करेगा पाठ तेरा
नित्य नवीन ओज स्वरों में

गूँजा सहसा नील नभ गर्जित स्वर
होगी - होगी जय
जिस ओर द्रौपदी वास सदा ।

वीरेन्द्र ओझा
प्रधान आयकर आयुक्त

देश की शान है हिंदी,
देश की पहचान है हिंदी,
क्योंकि हर भारतीय के
दिल में विराजमान है हिंदी

हीरो

राजेश उपाध्याय, आयकर अधिकारी

रोहन ने जब मुंबई की ट्रेन पकड़ी तो वह बहुत खुश था। उसका हमेशा से यही सपना था कि वह एक दिन मुंबई जायेगा और वहाँ बॉलीवुड में काम करके खूब शोहरत और पैसा कमाएगा। उसके कॉलेज के दोस्त-यार सभी उसकी कद-काठी और अंदाज को देखकर यही कहते कि उसे फिल्मों मे काम करना चाहिये। उसे बार-बार ये बात याद आ रही थी कि कैसे जब वो टिकट लेने ट्रैवल एजेंट के कार्यालय में गया और बातों ही बातों में उसने वहाँ की खूबसूरत रिसेप्शनिस्ट से मुंबई जाकर हीरो बनने की बात कही तो उसने एकदम से ही कहा कि सर आप जरूर हीरो बनोगे और मैं दुनिया को बताऊंगी की आपकी मुंबई की टिकट मैंने बना कर दी थी। रोहन का आत्मविश्वास देखकर उसके इरादों और सफलता में किसी को कोई सन्देह नहीं था। बस एक उसके माँ-बाप ही थे जो उसके सपनों को अहमियत देने के बजाय उसे खुद से दूर नहीं जाने देना चाहते थे। रोहन के लाख कहने के बावजूद वे यही कहते कि बेटा तुम हमारे इकलौते बेटे हो, ईश्वर की दया से तुम्हारे और हमारे गुजारे के लिये हमारा व्यापार भी सही चल रहा है और हम यही चाहते हैं कि तुम हमारे साथ ही रहो। तुम हमारे बुढ़ापे का सहारा हो, अगर तुम ही चले जाओगे तो हमें कौन सम्भालेगा। हम नहीं चाहते तुम बम्बई जैसे शहर में अकेले रहो और वहाँ संघर्ष करो। वैसे भी फिल्मों में काम मिलना इतना आसान भी नहीं है। ये सब सुनकर रोहन को बहुत गुस्सा आता। अपने सपनों के महल को ढहते देख एक दिन उसने मुंबई में फिल्म इंडस्ट्री से जुड़े अपने एक दोस्त से बात की और साल भर के खर्चे लायक पैसा लेकर, बिना माँ-बाप को बताये मुंबई के लिये निकल पड़ा। उसने सोचा कि मुंबई जाकर वो घरवालों को फोन पर बता देगा।

मुंबई में जब उसने पहली बार कदम रखा तो उसने ऐसे महसूस किया जैसे भविष्य के किसी स्टार ने अपना पहला कदम रखा हो। पहले तो रोहन कुछ दिन एक अच्छे होटल में रुका और मुंबई के आस-पास की जगहों पर घूमा जिसमें उसको काफी मजा आया। उसने अपने दोस्त को भी बुला लिया था। चूंकि, रोहन को मुंबई में लम्बे समय तक रहना था तो उसने अपने दोस्त के साथ ही रहने का फैसला किया। मुंबई पहुँचने के बाद रोहन को आगे का रास्ता बहुत आसान दिख रहा था लेकिन जब वो अपने दोस्त के पास पहुंचा तो उसका उत्साह ठंडा पड़ गया। उसने देखा कि कैसे एक छोटे से कमरे में उसके दोस्त के साथ तीन लोग और रहते थे। सभी फिल्म सिटी में छोटा-मोटा काम करके गुजारे लायक पैसे कमा रहे थे। बात चीत में रोहन को पता चला कि सभी अपने घर से हीरो बनने के लिये ही निकले थे। अब रोहन को अपने घर की याद आने लगी। पर उसका संकल्प पक्का था। उसे हर हाल में हीरो तो बनना ही था। अभी रोहन को मुंबई आये एक महीना ही हुआ था कि देश भर में कोरोना महामारी का असर फैलने लगा। सरकार ने पहले 21 दिन का देशव्यापी लॉकडाउन लगाया और फिर उसे आगे बढ़ाती गई। लोगों का काम-धंधा, रोजगार बंद हो गया था। मुंबई जैसे शहर में गरीबों को खाने के लाले पड़ गये। रोहन के घर पर बूढ़े माँ-बाप थे जो रोहन की चिन्ता में घुले जा रहे थे तो दूसरी तरफ़ रोहन को भी ऐसे समय में अपने माँ-बाप के पास न रहने का अफ़सोस हो रहा था। पर वो करे भी तो क्या ? एक तरफ उसके सपने उसके पांव की जंजीर की तरह उसे रोक रहे थे तो दूसरी तरफ लॉक डाउन की वजह से बस, ट्रेन, हवाई जहाज सब बंद थे। रोहन रोज चुपचाप बीमारी और लॉक डाउन की खबरें पढ़ता, सुनता। उसे गरीबों और मजदूर वर्ग के लिये बहुत तरस आता।

ऐसे ही एक दिन रोहन टीवी देख रहा था तो उसने देखा कि मजदूरों के कई समूह पैदल ही अपने गाँव जाने के लिये निकल पड़े हैं। सड़क पर बच्चों और बूढ़ों के पैदल चलने के हृदय-विदारक दृश्य देखकर उसका मन पसीज उठता। एक दिन तो हद हो गई जब उसने खबरों में सुना कि कुछ लोग चलते-चलते थक कर ट्रेन की पटरी पर ही सो गये और ट्रेन उनके ऊपर से गुजर गई। समाचार चैनलों को

एक बड़ा मुद्दा मिल चुका था। उस दिन उसकी माँ भी रोहन से बात करते-करते रो पड़ी थी। रोहन भी अब तक लॉकडाउन और अपने अकेलेपन से परेशान हो चुका था। उसको बहुत मन हुआ कि वह किसी तरह अपनी माँ के पास पहुँच कर उसके आँसूओं को पोंछ सके। उस रात रोहन यही सब सोचते-सोचते बहुत देर तक जागता रहा। भोर की आहट के साथ ही उसको नींद लगी। जब उठा तो दोपहर हो आई थी पर उसका मन बहुत हल्का था। वह मन ही मन कोई निर्णय ले चुका था। मुंबई में गुजारे के लिये अब भी उसके पास काफी पैसा था। उसने अपने दोस्त को अपनी योजना बताई। फिर दोनों काम पर लग गये। एक तरफ रोहन निजी बसों की तलाश में लग गया तो दूसरी तरफ रोहन के दोस्त और उसके साथियों ने मुंबई में फंसे दैनिक मजदूरों और छोटे-मोटे काम करने वाले लोगों का पता लगाना शुरु किया। रोहन ने थोड़ी भाग दौड़ कर के कुछ बसों का इंतजाम कर लिया और उनके लिये यात्रा की परमिशन भी ले ली। इसी बीच थोड़े ही दिनों में सबने करीब 1 हजार लोगों की जानकारी इकट्ठा कर ली जो मुंबई में लॉकडाउन की वजह से फंसे हुये थे और किसी भी तरह अपने घर जाना चाहते थे। उन सभी के लिये आवश्यक कागजी लिखा-पढ़ी और प्रशासनिक स्वीकृति की व्यवस्था करते-करते 10 दिन बीत गये। रोहन ने अपना सारा पैसा इसी काम के लिये लगा दिया था।

ठीक बारहवें दिन करीब हजार लोगों को लेकर कई बसें अलग-अलग ठिकानों की ओर बढ़ रहीं थीं जिसमें से एक बस में रोहित भी था। रोहित आज वो शहर छोड़ कर जा रहा था जहाँ वो हीरो बनने आया था। पर उसे इस बात का कोई अफ़सोस नहीं था क्योंकि आज उसकी वजह से हजार लोगों की आखों में चमक लौटी थी, सैकड़ों मायें फिर से अपने बच्चों से मिलने वालीं थीं। रोहित बस उनकी ख़ुशियों के बारे में सोचकर ही खुश था। उसे ख़ुशी थी कि वो भी कुछ ही घंटों बाद अपनी माँ से मिल पायेगा। इन सबके बीच रोहित ये भूल ही गया कि वो मुंबई में फिल्मों का हीरो बनने आया था जबकि हज़ारों लोगों के लिये रोहित सचमुच का हीरो बन चुका था। हाँ! रोहित का सपना पूरा हो चुका था। उसे पता नहीं था पर वो असलियत में हीरो बन चुका था।

विवेक पेरमपूर्णा
आयकर आयुक्त

धूप का कुँआ

मैं अकेला बैठता हूँ
रेत की गठरियाँ बिछा कर
वे मेरी करवटों के साथ बदलती हैं
घिसटती हैं, घिसकती हैं
और मेरे जाने के बाद मेरे इंतज़ार में ,
मेरे होते हुए होने की काया याद रखती हैं
पता नहीं उन्हें पता है या नहीं ,
की अकेले का अकेलापन तो आसान है,
पर किसी के साथ का अकेलापन बड़ा मुश्किल,
और मुझे लगता है
की गठरियाँ मुझसे ज़रूर प्रेम करती होंगी ,
लेकिन ये नहीं पता,
की क्या उन्हें इस प्रेम का अफ़सोस है ?

फिर भी,
उनके स्वप्नों में मैं ज़रूर आता होऊँगा,
जैसे किसी षोडशी के स्वप्न में राजकुमार आते हैं,
पीछे पीछे सुनहरे घोड़े आते हैं ,
घोड़ों की बग्घी में दो शहनाई वाले आते हैं ,
एक बजाने वाला, दूसरा मौन की गवाही सुनने वाला

मैं गठरियों के बिस्तर पर सो जाता हूँ ,
मैं सोता हूँ तो नींद भी सो जाती है,
नींद सोती है, तो स्वप्न भी सो जाते हैं ,
स्वप्न सोते हैं तो धूप आ जाती है,
धूप के कुएँ से
छन छन कर,
एक एक क्षण

आज मैं बस "मैं" बनना चाहती हूँ

मेरी जिंदगी की किताब
मैं खुद लिखना चाहूँगी
हर कहानी का अंत सुखद देखना चाहूँगी
अनचाहे रिश्तों की जंजीरों से खुद को आज़ाद करना चाहती हूँ
इस तयशुदा जिंदगी से दूर भागना चाहती हूँ,
आज मैं बस "मैं" बनना चाहती हूँ।

अगर मुमकिन हुआ तो
फिर उस वक्त में जाना चाहूँगी
वक्त को वक्त के जरिए थोड़ा सा बदलना चाहूँगी
देर तक बेफिक्र सोते रहना चाहती हूँ
जहाँ अश्क से दूर दूर तक का वास्ता ना हो
उस बचपन में लौट जाना चाहती हूँ,
आज मैं बस "मैं" बनना चाहती हूँ।

कुछ पाने की कोशिश में
सब छूटता जा रहा है
मैं मनाने की कोशिश में हूँ
और ख्वाब रूठता जा रहा है
उन रुठे ख्वाबों को फिर एक बार मनाना चाहती हूँ,
आज मैं बस "मैं" बनना चाहती हूँ।

आज दिन नया है,
मैं वही पुरानी हूँ
सुखद अंत को तलाशती
अधूरी सी कहानी हूँ
इस कहानी का अंजाम खूबसूरत देखना चाहती हूँ,
आज मैं बस "मैं" बनना चाहती हूँ।

जिंदगी की उलझन से परे
उसकी सुलझन बनना चाहती हूँ
तो कुछ उलझनों को बस उलझने देना चाहती हूँ
किसी के लिए अच्छी तो किसी के लिए बुरी ही ठीक हूँ
हर किसी से सुलझना नहीं
एक पहेली बनना चाहती हूँ,
आज मैं बस "मैं" बनना चाहती हूँ।

जिन सवालों से मुझे फर्क पड़ता हो
उन सवालों के जवाब ढूँढ़ना चाहती हूँ
जिनका अधूरा होना ही उन्हें पूरा करता हो
ऐसे सवाल बस छोड़ देना चाहती हूँ
समझने, समझाने से आगे बढ़ना चाहती हूँ
जिससे भी मिलूँ उसके लिए एक यादगार याद बनना चाहती हूँ,
आज मैं बस "मैं" बनना चाहती हूँ।

चाहे कपड़ा नया हो या पुराना
कुछ सिलवटें तो रह ही जाती हैं
कोशिश रहती है कमियाँ ना रह पाएँ
फिर भी कुछ ना कुछ कमी तो हर बार रह ही जाती है
मेरी उन्हीं कमियों को स्वीकारना चाहती हूँ,
आज मैं बस "मैं" बनना चाहती हूँ।

चाहती हूँ की आँखों को धुँधला कर दे ऐसी रोशनी बन जाऊँ
दौलत की लत ना हो ऐसी हस्ती बन पाऊँ
हर चीज़ पैसे से ना तोलूँ
कुछ पल अपने लिए भी जी लूँ

कमाने, बचाने से आगे किसी मोड़ पर ठहर जाऊँ
जिंदगी के उस ठहराव तक बस पहुँचना चाहती हूँ
पल दो पल फिर उसी पल में ठहरना चाहती हूँ,
आज मैं बस "मैं" बनना चाहती हूँ।

रोकना चाहती हूँ खुद को कमजोर बनने से
रोकूँ ना इतना की पत्थर बन जाऊँ
काश कि आसान होता इतना
जो बनना चाहूँ, वो बनना
तो बन जाती मैं वो मुकम्मल उम्मीद
या वो अधूरे सपने, वो छोटी-छोटी खुशियाँ जिन्हें
पूरे होते देखनी की आस है उन्हें
उनकी आँखों में अपने लिए थोड़ा-सा ही सही गुरूर
देखना चाहती हूँ
बस मेरे स्वार्थ के खातिर मैं एक 'आदर्श बेटी'
बनना चाहती हूँ
मेरा 'मैं' बनने का तात्पर्य यही है,
इसी तरह आज मैं बस "मैं" बनना चाहती हूँ।

हर बात पर ज़ज्बात जाया नहीं करना चाहूँगी
कुछ हासिल करने की ज़िद नहीं अब
जो फिसल रहा है मुट्ठी से उसे छोड़ देना चाहूँगी
समय के साथ बिखरना नहीं, निखरना चाहती हूँ,
आज मैं बस "मैं" बनना चाहती हूँ।
आज खुद से मिलना चाहती हूँ
अकेले पड़ना नहीं, अकेले रहना चाहती हूँ
वक़्त के साथ बदलना नहीं है मुझे
वक़्त बदलना चाहती हूँ
जो चाहूँ वो करना चाहती हूँ,
आज मैं बस "मैं" बनना चाहती हूँ।

अंत में मैं बस यही कहना चाहती हूँ कि
सीख गई हूँ कितना कुछ
नज़रिया अब नया है
कुछ और सिखाया हो या ना हो जिंदगी ने
रंग बदलना सिखाया है।

तेजश्री तुकाराम घाडीगांवर
कर सहायक

रास्ते का पत्थर

कौन आया और कौन गया,
उसको कहां कभी कुछ फर्क पड़ा है।
अनभिज्ञ का दोस्त और जागरूक का दुश्मन बना है।
कुर्सी ना होगी तो बैठने की व्यवस्था वो करेगा,
किसी से टकराने पर अपशब्दों की अगवानी भी
करेगा ।
कभी पिट्ठू और कभी क्रिकेटर का स्टंप भी बनेगा,
झगड़े का शास्त्र तो कभी माँ का सिलबट्टा भी बनेगा,
अमीर - गरीब, धर्म जाति, गोरा काला, सब के लिए
एक समान,
रास्ते का पत्थर हूँ जनाब !

दसारी महेंद्र, निरीक्षक

पुस्तक समीक्षा

विभागीय रचनाकारों की पुस्तकों की समीक्षा

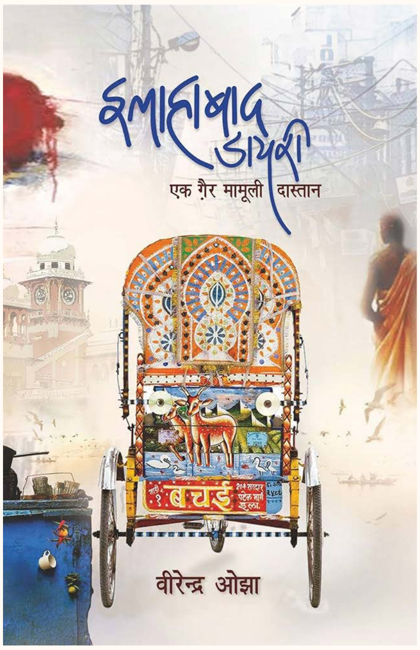

"इलाहाबाद डायरी - एक ग़ैर मामूली दास्तान"

लेखक - श्री वीरेंद्र ओझा,
प्रधान आयकर आयुक्त, मुंबई

"इलाहाबाद डायरी - एक ग़ैर मामूली दास्ताँ" जिसे वीरेंद्र ओझा ने लिखी है, पिछले साल ही प्रकाशित हुई है। वीरेंद्र ओझा वर्तमान में प्रधान आयकर आयुक्त के रूप में मुंबई में पदासीन हैं।

मेरे विचार

कहा जाता है ज़िंदगी में आयी चुनौतियाँ कुछ लेने के बज़ाय हमें बहुत कुछ दे जाती हैं। ख़ासकर वे चुनौतियाँ जो हमारी महत्वाकांक्षा को प्राप्त करने के संघर्ष-पथ से जुड़ी हों। जैसा कि लेखक ने कहा है कि कुछ ख़्वाब सिर्फ़ आपके नहीं होते, कालांतर में आपके परिवेश के भी हो जाते हैं। इस ख़्वाब की महत्ता तब और भी बढ़ जाती है जब वह आपके साथ आपकी माँ के भी हो जाएं।

जी हाँ, यह ख़्वाब है इस कहानी के नायक अनुराग शर्मा का, जिनको इनके शहर इलाहाबाद ने बहुत कुछ सिखाया और बहुत कुछ दिया भी। शहर के यूनिवर्सिटी रोड के कॉलेज और उसके साथ लगे छात्रावास की गहमागहमी से इनको भारतीय सिविल सर्विस प्रतियोगिता में बैठने की प्रत्यक्ष रूप से प्रेरणा मिली और जब इन्होंने इस प्रतियोगिता में बैठने का निर्णय लिया तब उनके महाज्ञान की यात्रा का प्रारंभ होता है और वह है "ख़ुद में ख़ुद की खोज" इस खोज का आग़ाज़ करते हुए अनुराग की माँ उनसे कहती है कि उन्हें उनका मोक्ष नहीं बल्कि अनुराग का चयन चाहिए। उसके बाद अनुराग का संघर्ष, अपने को साधने में और इस परीक्षा की तैयारी करने व अपनी कमियों को समझते हुए, शुरू होती है। इसे पढ़ते ऐसा लगा मानो अनुराग अपने चयन से अपनी माँ के मोक्ष का मार्ग प्रशस्त कर रहा हो। अनुराग को पता था कि अगर उसका चयन होता है तो वह एक नये सच की परंपरा शुरू करेगा। इन्हें यह भी पता था कि इनकी माथे की लकीरें सिर्फ़ भाग्य ही नहीं बल्कि आत्मविश्वास भी लक्षित करती हैं। इन मान्यताओं के साथ अनुराग आगे बढ़ता है। अनुराग की सबसे अच्छी बात जो मुझे लगी वह थी उन्हें अपनी कमियों का एहसास था न सिर्फ़ एहसास बल्कि उसके लिए कहीं-न-कहीं आदर भाव भी। तभी तो उन्होंने उन कमियों का खुल कर ज़िक्र किया है। अंग्रेज़ी में बात करना इनके लिए कितना दुष्कर था उसे कहते इन्हें तनिक भी झिझक नहीं होती। झिझक तो दूर, कई जगह तो उन्होंने इस प्रसंग का ज़िक्र करते हुए अपना उपहास उड़ाया है। शायद पाठकों को पढ़ते अच्छा भी लगे। क्यों न लगे, हम सभी अपनी कमियों के साथ जो जी रहे हैं। अनुराग ने कहीं-न-कहीं एक संदेश भी देने की कोशिश की है कि सफलता का सोपान सर्वप्रथम अपनी कमियों को समझना है।

अनुराग को आख़िरकार सफलता मिलती है। कितनी मिली वह हर पाठक का अपना अंदाज-ए-बयां

होगा। पर एक बात तो तय है, उसकी सफलता से कहीं ज़्यादा बड़ी लगी उसकी माँ का इसी भौतिक जीवन में अनुराग की सफलता से प्रस्फुटित उनके मोक्ष के क्षण।

कभी साइकिल चलाते अनुराग ने मन ही मन कहा कि इलाहाबाद की सड़कों का क़र्ज़ इस जन्म में तो उतरेगा नहीं उसके लिए उन्हें बोधिसत्व की तरह जन्म लेना होगा। मुझे लगता है लेखक वीरेंद्र ओझा ने "इलाहाबाद डायरी" लिखकर उन्होंने बोधिसत्त्व की तरह जन्म लेते उन सड़कों का क़र्ज़ उतारा है।

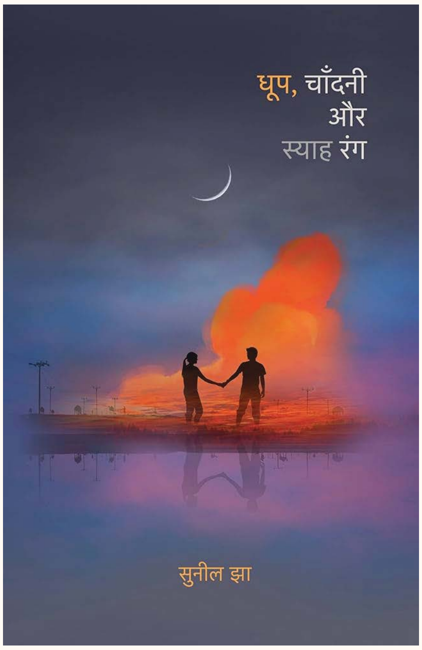

"धूप, चाँदनी और स्याह रंग"

- कविता संग्रह

रचनाकार - श्री सुनील कुमार झा

प्रधान आयकर निदेशक (अन्वेषण), भुवनेश्वर

सुनील कुमार झा, जो वर्तमान में आयकर विभाग में प्रधान आयकर निदेशक (अन्वेषण), भुवनेश्वर में कार्यरत हैं द्वारा रचित पुस्तक "धूप, चाँदनी और स्याह रंग" हाल ही में प्रकाशित हुई है की पुस्तक समीक्षा।

समीक्षा

जिस तरह हमारी साँसें हमें प्रकृति से जोड़ कर रखती हैं ठीक उसी तरह कुछ ऐसे कला और साहित्यिक कार्य हैं जो हमारे और समाज के बीच सेतु का काम करते हैं। ये वे घटनाएँ हैं जो अमूमन हमारे आसपास होती रहती हैं और जिसका संज्ञान शायद चेतन मन में न होता हो, उससे अवगत कराते हैं। हमें झकझोरते हैं, उनके प्रति एक नए दृष्टिकोण के लिए। हमें विवश करते हैं आत्मावलोकन के लिए-शायद आसपास हो रही घटनाओं के प्रति संवेदनशीलता संचार करने के लिए। अगर ऐसा हो पाता है तो यह किसी भी कला-साहित्यिक कार्य के लिए इससे बड़ी सार्थकता नहीं हो सकती।

सुनील कुमार झा की किताब "धूप, चाँदनी और स्याह रंग" जो उनकी रचित कई कविताओं का संग्रह है, इन्हीं प्रश्नों का जवाब तलाश करती है। चाहे वह प्रश्न वैशाख की चमकती धूप में लिप्त असहज करने वाली उसकी ऊष्मा का हो या आशा और उम्मीद प्रस्फुटित करती रात के अंधेरे की चाँदनी का हो या फिर, नाउम्मीद स्याह रोज़मर्रा की ज़िंदगी के हमारे अथक और अनवरत प्रयास। सही कहा है उद्देश्य ऐसे कई प्रश्नों का उत्तर ढूँढने में नहीं बल्कि उनका चेतन मन से सामना करने में है। शायद इस किताब में इनकी लगभग 100 कविताएँ इस उद्देश्य की प्राप्ति करने में सफल होती दिखती हैं।

"बिखरा हुआ है मेरा घर मेरे अंदर ही "

"भीड की कोई जात नहीं होती, जात आदमी की होती है जो भीड़ में होता "

"रिढ़ के बल सीधा चलना अब सरासर पिछड़ापन था, जबकि रेंगना प्रगतिशीलता की पहचान बन गया था..."

"असली संघर्ष रोटी पकाने के लिए आग जलने का है..."

और फिर, ऐसी कई पंक्तियों के बीच ये कहना कि-

"परछाइयाँ भी वक्त की पाबंद होती हैं" हमें लगता है सोए से जगा रही हो।

इस पुस्तक में प्रयुक्त शब्दों का चयन अति सरल तरीके से किया गया है जिससे आम पाठकों तक कविताओं में निहित भाव बड़े ही सहजता से प्रेषित होते हैं। कई जगहों पर आंचलिक शब्दों का भी बखूबी प्रयोग किया गया है जिससे रचना प्रादेशिक ख़ुशबू से महक उठी है।

समीक्षक - श्री सुशील कुमार पोद्दार

प्रधान आयकर आयुक्त, मुंबई.

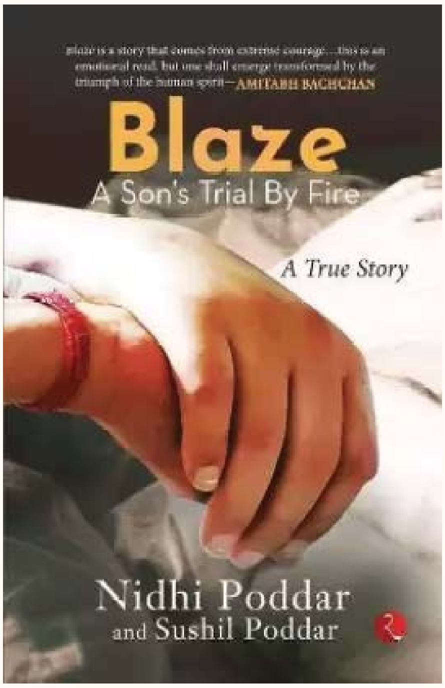

Blaze

- A Son's Trial By Fire by
Nidhi and Sushil Poddar

समीक्षा

कभी-कभी कोई ऐसी किताब हाथ आती है जो पढ़ना ख़त्म करने के बाद भी आप के साथ रह जाती है, बल्कि, अंतर्मन में गहरे जाकर बस जाती है। निधि और सुशील पोद्दार की 'Blaze - A Son's Trial By Fire' भी ऐसी ही एक किताब है। किताब तो समाप्त हो जाती है, लेकिन आपका मन इसके प्रभाव से नहीं निकल पाता है। आख़िर ऐसा क्या है इस किताब में जो सामान्य पाठकों से लेकर अनेक लेखक-कलाकार-फ़िल्म मेकर्स जैसे अलग-अलग क्षेत्र के लोगों को प्रभावित कर गई और उनमें से कईयों ने अपने भाव लिख कर भी व्यक्त किए, जिनमें से कुछ इस पुस्तक में संकलित भी हैं।

'Blaze' मूल रूप से एक युवा दिव्यांश आत्मन की कहानी है, जो महज़ 22 साल की उम्र में इस दुनियावी-जीवन से मुक्त होकर उस अनंत यात्रा पर चल देता है, जो हर एक व्यक्ति के जीवन में अवश्यम्भावी है। पर, इस छोटे से जीवन-काल में ही वह एक ऐसा जीवन जी लेता है जो मानवीय जिजीविषा का, मानवीय क्षमताओं का, हिम्मत और साहस का एक प्रेरणात्मक आख्यान बन जाता है।

दिव्यांश को ब्लड-कैंसर था। लगभग आधा जीवन वह इससे लड़ता रहा, जूझता रहा, लेकिन उसने हार नहीं मानी, तब भी नहीं जब उसने इस नश्वर संसार से विदा ले लिया, क्योंकि मृत्यु पराजय नहीं है, पराजय है मृत्यु के सामने घुटने टेकना जो उसने कभी नहीं किया। किताब पढ़ते हुए आप इतनी कम उम्र के एक लड़के का जीवन के प्रति सम्मान देख कर दंग रह जाते हैं। ब्लड-कैंसर जैसे भयावह रोग के कठिन उपचार और चिकित्सा-प्रक्रिया के बीच वह अपनी पढ़ाई जारी रखता है, एक सामान्य जीवन जीने की कोशिश करता है, यहाँ तक कि अमेरिका के एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए न केवल उसे दाख़िला मिल जाता है, बल्कि उसकी क्षमताओं को देख कर विश्वविद्यालय उसे पूरी स्कॉलरशिप भी स्वीकृत कर देती है। गहन चिकित्सा- प्रक्रिया के बीच भी वह अकेले हॉस्टल में जाकर रहता है।

दिव्यांश का व्यक्तित्व आकर्षक है, बहुआयामी है। वह एक बेहतरीन कवि है, उसकी कविताओं में अत्यंत प्रगाढ़ मानवीय संवेदनाएँ हैं जो शायद उसके उस जीवन-अनुभव से आएँ हैं। इस छोटे से जीवन में ही प्रारब्ध उसे इतना अनुभव दे गया है जो शायद किसी शतायु व्यक्ति के जीवन में भी घटित नहीं होता ! दिव्यांश ब्लॉग लिखता है और अलग-अलग विषयों पर बहुत ही गंभीरता से अपना मत व्यक्त करता है जो किसी बहुत ही परिपक्व व्यक्तित्व के लिए ही संभव है। दिव्यांश 'फूडी' है, और विभिन्न व्यंजनों के बारे में उसके विचार न केवल व्यंजनों के बारे में उसकी समझ को दर्शाते हैं, बल्कि यह भी कि जिन तत्वों से जीवन में ख़ूबसूरती है उन सब की ख़ुशबू उसके अंदर कितनी संजीदगी से बसी है- फिर चाहे वह कोई व्यंजन हो, संगीत हो या फिर कविता हो। वह अपने ब्लॉग्स में इन तत्वों की तुलनात्मक प्रस्तुति भी करता है, जो उसके विचारों की मौलिकता को दर्शाता है।

किताब में दिव्यांश के जीवन-यात्रा और उसके संघर्षों के साथ-साथ उसके माता-पिता निधि और सुशील पोद्दार का अपना संघर्ष भी चलता है जो प्रत्यक्षतः तो एक दूसरे से जुड़े हैं लेकिन, बहुत ही सूक्ष्म स्तर पर संघर्ष की उनकी अपनी धारा भी है जो संघर्ष के इस महासमुद्र में मिली हुई है पर अलग से पहचानी भी जा सकती है।

दिव्यांश की बीमारी का पता चलने के बाद सुशील को यह भी पता चलता है कि उसके परिचय के दायरे में इसी

बीमारी से ग्रसित एक और बालक इलाज के लिए इज़राइल गया और स्वस्थ हो कर आ भी गया। उम्मीद की इसी डोर से बंधा यह परिवार भी इज़राइल का रुख़ करता है, जहाँ 'बोन मैरो ट्रांसप्लांटेशन' उनके लिए उम्मीद की किरण है।

इज़राइल में दिव्यांश और सुशील की यात्रा और दिव्यांश की चिकित्सकीय- यात्रा के साथ-साथ वहाँ के जीवन, वहाँ के लोग, वहाँ की संस्कृति वहाँ के प्रमुख स्थल इन सब का इतना सजीव वर्णन है कि यह भाग मेरे लिए अनायास ही इस पुस्तक का सबसे यादगार हिस्सा बन जाता है। इज़राइल की चिकित्सा-व्यवस्था का मानवीय पक्ष पुस्तक में बहुत ही ख़ूबसूरती से उभर कर आया है और इस क्रम में वहाँ दिव्यांश के मुख्य चिकित्सक डॉक्टर रुबन ऑर, नर्स डेविड, एक सहृदय वृद्धा ल्यूमा और कई और ऐसे ही पात्र आपको अपनी मानवीय संवेदनाओं से गहरे छू जाते हैं। विशेषकर, उम्र के बड़े फ़ासले के बावजूद नर्स डेविड के साथ दिव्यांश का मित्रवत् रिश्ता देखते बनता है। वहीं एक और पात्र हैं- नवदीप सिंह, जो दोस्ती की ऐसी मिसाल बन कर उभरते हैं जिसकी जितनी भी सराहना की जाए वह कम है।

इज़राइल के बाद दुर्भाग्य से दिव्यांश को चिकित्सा के लिए अमेरिका जाना पड़ता है। इस संदर्भ में लेखकों ने इज़राइल और अमेरिका, दो अलग-अलग देशों में चिकित्सा के प्रति रुख़ और दृष्टिकोण के अंतर को भी बड़ी स्पष्टता से वर्णित किया है। इसी क्रम में हमें अमेरिका के 'रीहैब' व्यवस्था के बारे में पता चलता है जो अस्पताल और दवा कंपनियों की मिलीभगत का परिणाम है और यह भी कि यह बाज़ार की ताक़त है जो इस व्यवस्था के मूल में है। दिव्यांश और उसकी माँ निधि के अमेरिका में रहते हुए 'रीहैब' के जीवन का बेहद सजीव चित्र उभर कर आता है। ख़ासकर एक पात्र है मलीना- उसके बाह्य कठोर आवरण के भीतर की कोमलता जब निधि के साथ मिलते हुए धीरे-धीरे उभर कर सामने आती है तो मानव स्वभाव की गहराई के प्रति मन आश्चर्य से भर उठता है। लेखकों ने मलीना के अनोखे व्यक्तित्व को उसकी ख़ामियों और उस से भी ज़्यादा छुपी हुई ख़ूबियों को सामने लाकर बेहद ख़ूबसूरती से प्रस्तुत किया है।

इज़राइल में दिव्यांश को एक बुज़ुर्ग महिला ल्यूमा का अत्यधिक स्नेह मिलता है। किताब में एक अंश है जब दिव्यांश अगली बार इज़राइल जाता है और उसे पता चलता है कि ल्यूमा को कैंसर 'डिटेक्ट' हुआ है। वह ल्यूमा से उम्र में बहुत छोटा है, पर, इस बीमारी का सामना करने के मामले में वह ल्यूमा से कहीं अधिक अनुभवी है और इसी अनुभव को आधार बनाकर वह ल्यूमा को एक पत्र लिखता है जिसमें इस बीमारी का सामना उन्हें कैसे करना है यह वर्णित है। मेरी समझ से यह छोटा- सा पत्र अपने आप में एक जीवन-दर्शन है।

एक और वैसा ही वाक़या है अमेरिका में अपने हॉस्टल से अस्पताल जाते हुए दिव्यांश की अपने 'उबर' ड्राइवर से बातचीत, जो मानवीय जीवन के सहृदयता का एक जीवंत दस्तावेज है।

अमेरिका में अस्पताल में रहते हुए बर्फ़बारी का दृश्य और उसे देखकर उसके माता-पिता का दिव्यांश का कश्मीर जाकर बर्फ़बारी देखने की इच्छा का याद आना, इज़राइल में चिकित्सा की समाप्ति पर डॉक्टर रुबन ऑर का दिव्यांश और उसके पिता को डिनर के लिए ले जाना और दिव्यांश का आभार स्वरुप उन्हें पत्र देना और पढ़ कर सुनाना - किताब में कई सारी ऐसी घटनाओं का चित्रात्मक वर्णन है, कई ऐसे न भूले जा सकने वाले वाक़यात हैं, जो आपको गहरे छू जाते हैं और एक पाठक के तौर पर बाँधे भी रखते हैं।

एक और बात जिसकी चर्चा आवश्यक है वह है लेखकों का अपने वर्णन में कठोर ईमानदारी बरतना। संबंध और व्यवहार के वर्णन में ईमानदारी बरतना क़तई आसान नहीं होता, ख़ासकर जब आप बिना नाम बदले या छुपाए उन लोगों के बारे में लिख रहे हैं जो आपके करीबी हैं। लेखकों ने बड़ी हिम्मत से अपने लेखन में इस ईमानदारी का निर्वाह किया है, जो इस किताब के कथानक की विश्वसनीयता को एक नया आयाम देती है।

किताब के आख़िर में दिव्यांश की कविताओं को संकलित किया गया है जो इस किताब को पूर्णता देती है, क्योंकि दिव्यांश को उसकी कविताओं के बिना जानना असंभव है।

'Blaze - A Son's Trial By Fire' कोई फिक्शन नहीं है, इसमें वह जीवन है जो इसके लेखकों ने जिया है, दिव्यांश ने जिया है, जो यह बताता है कि कठिन चुनौतियों के बाद भी जीवन खूबसूरत है और अपने इसी संदेश के साथ दिव्यांश, निधि और सुशील पोद्दार और यह किताब अनेकों उन लोगों के लिए प्रेरणास्रोत बन जाते हैं जो अपने-अपने जीवन में अलग-अलग लड़ाइयाँ लड़ रहे हैं। इसी क्रम में मुझे अमृता प्रीतम की एक पंक्ति ध्यान में आती है:

"कहानी लिखने वाला बड़ा नहीं होता, बड़ा वह है जिसने कहानी अपने जिस्म पर झेली है"

'Blaze' एक ऐसी ही कहानी है जिसे दिव्यांश ने, इसके लेखकों ने, अपने जिस्म पर झेली है, पर, बिना किसी कड़वाहट के पूरी ईमानदारी से पाठकों के सामने रख दी है, इसीलिए यह कहानी मन को इतना गहरे छूती है, इतनी प्रेरणास्पद लगती है। 'Blaze' को पढ़ना आपको समृद्ध करता है, आपके विचार-प्रक्रिया को झकझोड़ देता है, आपकी अपनी संवेदनाओं को नए सिरे से उद्वेलित करता है और इसीलिए यह किताब एक ज़रूरी किताब है।

किताब अमेजॉन और फ़्लिपकार्ट पर उपलब्ध है।

साल 2022 में मैंने इस किताब का हिन्दी अनुवाद किया जो 'ब्लेज़: एक बेटे की अग्निपरीक्षा' के नाम से प्रकाशित हुई है।

समीक्षक - श्री सुनील कुमार झा
प्रधान आयकर निदेशक (अन्वेषण), भुवनेश्वर

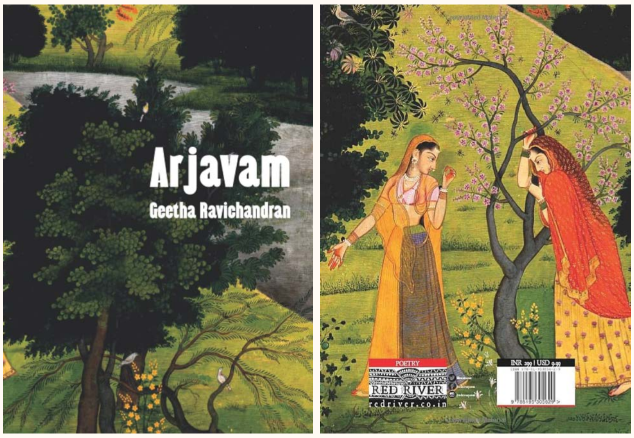

Arjavam

by Geetha Ravichandran

Poetry is a sublime art of expression. It has no language, it exists in it's own space. Language is the vehicle which conveys the feelings which could be conveyed only through poetry. 'Arjavam' is a collection of poems by Mrs Geetha Ravichandran. If we see the dictionary meaning of this Sanskrit word 'Arjavam', it is straightforward, open-hearted, simple. The poetry written by her has all these elements. Her poems invite readers to reflect on the complexities of human emotions, the challenges of communication, and the profound desire for understanding and acceptance.

Her style could be described as conversational, realistic but emotional and introspective. There are poems which exudes philosophy of life and existence, there are poems which have sublime remembrance. City life, small incidents and events seen through a poetic lens in some of these poems, gets aesthetically and beautifully enhanced in its connotations. 'The House That Holds Us Together', 'What Was Ours', 'Evening', 'Raintree' are some of the poems where feelings and emotions are conveyed with beautiful subtlety, which stays with you for a long period of time.

Then there is 'Neither a Bang nor a Whimper' which is so unique in its expression that It would only be apt to quote the closing lines of the poem:

"Sometimes, passion ends this way-
with a few chuckles and some chatter
as run-down batteries and crumpled sheets
are tossed out of sight."

The impact of a poem often lies not just in what is expressed but how it is expressed. Poets use a range of literary techniques, such as metaphor, simile and alliteration to bring their words to life. These techniques, combined with the careful selection and arrangement of words, give poems their unique ability to express the ineffable and stir the reader's soul. The author in these poems has used those

techniques beautifully to create a mesmerising effect with words.

The poet has explored multiple feelings in this collection. Such as there are poems which explore the space between life and death, between existence and vanished, between departure and possibility of coming back. I Wish to specially mention 'The Sting' which is one of such poems which explores that space beautifully. Few lines from this poem would provide a glimpse of the thought process and expressions of the poet:

“The silence is ominous,
even as stories of the reborn
circulate like bursts of light
from a heavenly comet.
Watching the ritual grief
of mannequin mourners,
from the void,
fear that churned
a lifetime,
dissipates.

The grinning skull
Knows the answers.”

Honestly speaking summing up a poet's entire body of work in a few words is challenging, but poems in “Arjavam” could be described as specimen of the exquisite craftsmanship of the poet which gives an insight into the emotions she experienced.

Interpreting a poem can be a deeply personal experience, as different readers might connect with different aspects of the poem. It's about finding meaning within the lines that resonates with you. While understanding the poet's intended meaning can enhance your appreciation, poetry is subjective, and, hence, there's no 'right' or 'wrong' interpretation. However, when reading these poems it's essential to not rush through but take your time to absorb each line and image. The rhythm, the sounds of the words, the way they are arranged on the page – all these elements contribute to the overall effect of the poems.

Book cover as well as the inside pages of the book are very artistic which gels beautifully with the sublime expression of the poems. The book is available on Amazon. I must say it's a treat for connoisseurs of poetry.

समीक्षक - श्री सुनील कुमार झा
प्रधान आयकर निदेशक (अन्वेषण), भुवनेश्वर

पुस्तक अवश्य पढ़ें।

क्यूँ सच को ढूँढते हो

जसदीप सिंह, प्रधान आयकर आयुक्त

कहाँ अब सच को ढूँढ़ते हो
लगा कर जब बाज़ार बैठे हो
ठिकानों पर झूठ ही तो होगा
सजा के जब कारोबार बैठे हो

गर दुकानों में सच बसाओगे
तो क्या क़ीमत बताओगे
गर सच कह दिया जानो
तो कैसे मुनाफ़ा कमाओगे

कैसे सच ख़ुद को बेचेगा
कैसे वो ख़ुद को खींचेगा
वो कैसे झूठ बोलेगा
कैसे ग़लत को तोलेगा

कैसे अदाएं बताएगा
प्रपंच कैसे सजाएगा
जब धोखा नहीं देगा
तो दाम कैसे लगाएगा

भरोसा बेचते हैं लोग
नीयत भी बिकते बिकती है
सौदे ईमानों के ही होते हैं
इज़्ज़त भी रज के बिकती है

हाँ सच का ढोंग बिकता है
ख़ुदा का रोग बिकता है
तमाशे सड़कों पे लगते हैं
बनावटी सोग बिकता है

क़समों पे बात बिकती है
शोलों की राख़ बिकती है
रस्मों में लूट चलती है
रिश्तों की साख़ बिकती है

बिक के अख़बार बिकता है
ख़बर का व्यापार चलता है
नेता बिक बिक के बिकता है
सियासी बाज़ार चलता है

सच का वास्ता देकर
सभी इश्तेहार चलते हैं
सच का आसरा ले कर
धरम दरबार चलते हैं

जब सच को मानना नहीं है
तो क्यों सब स्वांग होता है
ये फरेब सदियों से फिर क्यों
हम सब पर होता है

सच को मानने वालों
उसकी फितरत तो पहचानो
खरीद-ओ - फरोख्त से निकलो
उसकी तबियत को पहचानो

सच कड़वा ही होता है
ज़हर मीठी बात होती है
सच नंगा ही होता है
झूठ की अजब पोशाक होती है

सच इक ख्वाब की मानिंद
जो इक ऐतबार देता है
झूठ को झेल कर जीने का
अदद इक अंदाज़ देता है

कहाँ अब सच को ढूँढ़ते हो
लगा कर जब बाज़ार बैठे हो
ठिकानों पर झूठ ही तो होगा
सजा के जब कारोबार बैठे हो

ब्रज के छलिया की कृपा

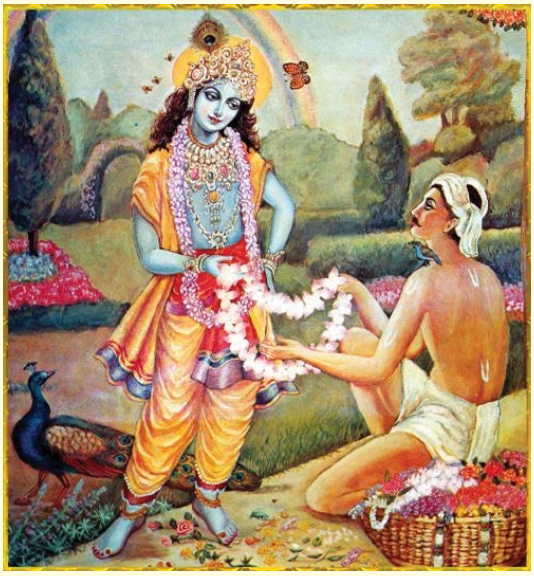

आशीष वर्मा, आशुलिपिक

आज से लगभग 70 वर्ष पूर्व वृन्दावन में मदन मोहन जी मन्दिर के निकट किसी कुटिया में अन्धे बाबा रहते थे। उनका नाम कोई नहीं जानता था, सब लोग उन्हें मदन टेर के अन्धेबाबा के नाम से पुकारते थे, क्योंकि वे मदन टेर पर ही अधिक रहते थे। दिन भर राधा-कृष्ण की लीलाओं का स्मरण करते हुए आँसू बहाते, संध्या समय गोविन्द देव जी के मन्दिर में जाकर रो-रो कर उनसे कुछ निवेदन करते हुए चले आते। लौटते समय 2-4 घरों से मधुकरी (भिक्षा) मांग लेते और खाकर सो जाते। पर आते-जाते, खाते-पीते हर समय उनके आँसू बहते रहते। आँसू बहने के कारण वे अपनी दृष्टि खो बैठे थे। इस कारण वे तनिक भी घबराये नहीं, घबराना तो तब होता जब वे इस जगत से कोई सरोकार रखते। जो नेत्र प्रभु का दर्शन नहीं करा सके थे, उनका ना रहना ही अच्छा था उनके लिए।

दिन-रात रोते-रोते 40 साल बीत चुके थे। जीवन की संध्या आ पहुँची थी। अब उनसे रहा न जाता, विरह वेदना असहय हो चली थी। वे कभी-कभी उस वेदना के कारण मूर्छित हो घण्टों मदन टेर की झाड़ियों के बीच अचेत पड़े रहते थे। उनसे सहानुभूति करने वाला वहाँ कोई न था, केवल वहाँ के पक्षी, मोर, कोकिल आदि अपने कलरव से उनकी चेतना जगाने की चेष्टा किया करते।

एक दिन जब वे मदन टेर पर बेठे रो रहे थे, तो राधा-कृष्ण टहलते हुए उधर आ निकले। बाबा को रोते देख राधाजी ने श्रीकृष्ण को कहा 'प्यारे ! या बाबा बड़ो रोये है जाकर हँसा दो,

श्रीकृष्ण ने बाबा के पास जाकर कहा- 'बाबा ! क्यों रो रहे हो, आप को किसने मारा है, कोई आपसे कुछ छीन के ले गया है ?'

बाबा ने कहा-'ना, तू जा यहाँ से।'

श्रीकृष्ण ने कहा-'बाबा ! आप के लिए कुछ ला दूँ, रोटी ला दूँ और कुछ कहें सो ला दूँ, तू पर रो मत।'

बाबा ने कहा 'तू जा ना जा के अपनी गईया चरा, तुझे काह मतलब मुझसे।'

कृष्ण ने राधाजी से जा कर कहा- 'बाबा तो नहीं मान रहे मुझसे और बहुत रो रहे हैं।'

राधाजी ने कहा-'प्यारे, तुम नहीं हँसा सके उनको, अब मैं हंसाती हूँ उनको।'

श्रीराधा ने बाबा के पास जाकर कहा-'बाबा तू क्यों रो रहा है ? तेरा कोई मर गया है क्या ?'

बाबा हँस दिए और बोले-'लाली ! मेरा कोई नहीं है।'

राधाजी बोलीं-'अच्छा तो, जब तेरा कोई नहीं है तो तू क्यों रो रहा है ?'

बाबा बोले-'लाली ! मैं इसलिए रो रहा हूँ, क्योंकि जो मेरा है वो मुझे भूल गया है।'

श्रीराधा बोलीं-'कौन है तेरा बाबा ?'

बाबा बोले-'तू न जाने मैं ब्रज के छलिया के भजन करते-

करते बुढ़ा हो गया और उसने एक झलक भी नहीं दिखाई, और लाली क्या कहूँ उसके संग से लाली राधे भी निष्ठुर हो गयी हैं।'

राधाजी चौंक पड़ी और बोली-'मैं निष्ठुर! दूसरे ही पल अपने को छिपाते बोली' मेरो नाम भी राधे है, तू बता तू का चाहे ?'

बाबा बोले-'भोरी तो तू है जिस समय वे अपने कर-कमलों से स्पर्श करेंगे, आँख में ज्योति ना आ जाएगी ?'

भोरी लाली से और रहा ना गया, उसने अपने कर-कमलों से बाबा की एक आँख स्पर्श कर दी, उसी समय कान्हा ने भी बाबा की दूसरी आँख स्पर्श कर दी। स्पर्श करते ही बाबा की आँखों में ज्योति आ गयी। सामने खड़े राधा-कृष्ण के दर्शन कर वे आनन्द के कारण मूर्छित हो गए। मूर्छित अवस्था में वे सारी रात वहीं पड़े रहे।

प्रातःकाल वृन्दावन परिक्रमा में निकले कुछ लोगों ने उन्हें पहचान लिया। वे उन्हें उसी अवस्था में मदन मोहन जी के मन्दिर ले गए। मन्दिर के गोस्वामी समझ गए की उनके ऊपर मदन मोहन जी की विशेष कृपा हुई है। उन्होंने उन्हें घेर कर सब के साथ कीर्तन किया।

कीर्तन की ध्वनि कान में पड़ते ही उन्हें धीरे-धीरे चेतना हो आई। तब गोस्वामी जी उन्हें एकांत में लेकर गए। उनकी सेवा के बाद जब उन्होंने उनसे मूर्छा का कारण पूछा तो उन्होंने रो-रो कर सारी घटना बता दी।

बाबा ने जिस वस्तु की कामना की थी, वह उन्हें मिल गयी, फिर भी उनका रोना बन्द नहीं हुआ। रोना तो पहले से और भी ज्यादा हो गया। राधा-कृष्ण से मिल कर बिछुड़ जाने का दुःख उनके ना मिलने से भी कहीं ज्यादा तकलीफ वाला था। इस दुःख में रोते-रोते वे कुछ दिन के बाद देह त्याग कर साकेत धाम को चले गए ।

हिंदी दिवस पर हम सब मिलकर जश्न मनाएं,
हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका को याद दिलाएं।

मूक संवाद

वीरेन्द्र ओझा
प्रधान आयकर आयुक्त

एक मूक संवाद था
सीता का राम से
जब राम ने सीता का निष्कासन किया
युधिष्ठिर का द्रौपदी से
जब युधिष्ठिर ने यक्ष से नकुल का जीवन माँगा
अहिल्या का अपने पति से
जब वह शापित हुई थी

यह संवाद हर बार एक ही बात कहता था
मेरे स्वाभिमान का , सम्मान का कोई मोल नहीं

एक संवाद है
शिशु का माँ से
कभी स्तनपान करते हुये
कभी गिर कर चोटिल होते हुये
कभी माँ की आशाओं पर खरा न उतरते हुये
हर बार एक ही बात
माँ मुझे तेरा सहारा चाहिये
जीवन में स्वाभिमान के लिये , सम्मान के लिये

एक संवाद है
खुला संवाद
कामुकता का
अहंकार का
मनमर्ज़ी का
पुरूष का स्त्री से
जिसे लोग बलात कृत्य कहते हैं
पर स्त्री जब स्वीकारती है
तब वह संस्कारी कहलाती है
जब विद्रोह करती है तब अपरबल

मुझे ऐतराज है
तथाकथित संस्कारों से
चुप रहने से
क्योंकि
मुझे बनाया गया है विद्रोह के लिये
कभी स्वयम् करती हूँ
कभी किसी को तैयार करती हूँ
अपने खून से सींचकर कायनात के लिये ।

जो दर्द मेरा तेरी आँखों से बहा होता

जसदीप सिंह, प्रधान आयकर आयुक्त

कभी दर्द कोई मेरा, तेरी आँखों से बहा होता
तुझे हमदर्द कहने पाते, तू हमदम भी हुआ होता

तेरी जुबानी कभी जो मेरी, दास्ताँ बयान होती
मेरी तासीर तुम भी पाते, हर ज़ख्म जिया होता

ख़्यालों में कभी मेरा, ख़्याल किया होता
मेरी तदबीर जान जाते, मरहम भी दिया होता

पर कहानियों में तेरी, मेरी आवाज़ तक नहीं है
मेरे एहसासों का तुझे तो, अंदाज़ तक नहीं है

तेरे जलसों में नहीं, गुंजाईश मेरे शगुन की
तेरे सरोकारों में तो, मेरे अल्फ़ाज़ तक नहीं हैं

कैसे मुआमले हाथों में, तेरे मेहफ़ूज़ रहेंगे
मेरे मुतालबों का तो तुझे, एहसास तक नहीं है

मेरे जीने का मेरी उम्मीद का, सबब तो जान लो
तुम्हे तो मेरी गिनतीओं का, हिसाब तक नहीं है

मुझको भी शामिल करो, हर इजलास-ओ-जुलूस में
ये तोहमतें मिटा दो, मेरे उरूज-ओ-ख़ुलूस से

कभी मेरी रहगुज़र पर, तेरा भी कदम होता
मेरे पैरों के छालों का, तुझको भी इल्म होता

कभी दर्द कोई मेरा, तेरी आँखों से बहा होता
तुझे हमदर्द कहने पाते, तू हमदम भी हुआ होता

आग्रह

मुदित श्रीवास्तव, अपर आयकर आयुक्त

जिस दिव्य की परिकल्पना, ईश्वर ने न की हो स्वयं
उस दिव्य की पराकाष्ठा भारत-भू पर मुझको चाहिए ।
जिस शक्ति की आराधना, हो स्वप्न में भी असंभव
उस शक्ति का आभास, भारत-भू पर मुझको चाहिए ।

जिस लोक का निर्माण स्वयं, ब्रह्मा भी हो न कर सके
उस लोक का आधार भारत-भू पर मुझको चाहिए ।
स्वर्ग जैसा शब्द तक जिस अनुभूति को न जन्म दे
उस अनुभूति का स्त्रोत भारत-भू पर मुझको चाहिए ।

एक बूँद से जिसकी युगों की प्यास मानो शांत हो
उस सुधा का कलश भारत-भू पर मुझको चाहिए ।
जिसकी किरण अज्ञान-रूपी अंधकार को चीर दे
वह तमस - हारी सूर्य भारत-भू पर मुझको चाहिए ।

दृश्य एक ऐसा कि जिसमें पीड़ा हो न दुःख हो
उस दृश्य का विस्तार भारत-भू पर मुझको चाहिए ।
एक लौ वह जिसकी ज्योति से हर चित्त चेतन हो उठे
उस लौ का दावानल अब भारत-भू पर मुझको चाहिए ।

ईश से आग्रह यही पर सर्वप्रथम होगा मेरा
यदि ईश मुझसे पूछ ले- "वह क्या जो तुझको चाहिए?"
"हो कोई भी योनि, अवस्था या दशा, मेरे प्रभु
हर अवतरण अपना अब भारत-भू पर मुझको चाहिए।"

आयकर विभाग मुंबई द्वारा
अखिल भारतीय राजस्व सांस्कृतिक कार्यक्रम 2023
में प्रस्तुत नाटक – किरण

किरण

परवेज़ खान, निरीक्षक

मंच सज्जा -

मंच के दाएं कोने में अदालत का दृश्य स्थापित है। मध्य में एक दरवाजा है। दाएं कोने में एक घूमने वाली दीवार है, जिस पर एक और साधारण घर की दीवार का दृश्य चिपकाया गया है दूसरी ओर अस्पताल का दृश्य चिपकाया है।]

पर्दा उठता है। मंच धीरे-धीरे प्रकाशित होता है।

दृश्य - 1

[अदालत के कटहरे में किरण, एक किन्नर, खड़ी है। कुछ लोग अदालत की कार्रवाई देखने के लिए बठे हैं। उनमें से कुछ वो हैं जिन्होंने किरण पर मुकदमा दाखिल किया था।]

वकील: किरण जी! आप पर आरोप है आपने एक 2 माह के बच्चे को अगवा किया फिर उसके अंग को काटकर उसे किन्नर बना दिया। और फिर जब समाज के लोगों ने आपसे वो बच्चा छीनने की कोशिश की, तो आपने उसका कत्ल कर डाला। ये घिनौना और मानवता को तारतार कर देने वाला अपराध करते हुए आपका हृदय ज़रा भी नहीं लरज़ा? आप अदालत को वो सब सच-सच बता दीजिए जो आपने पुलिस को बताया था कि इस दिल दहला देने वाले अपराध को आपने कैसे और क्यों अंजाम दिया।

किरण! मैं अपने ऊपर लगे सभी अपराधों का खंडन करती हूँ (लोगों की खुसपुसाहट होने लगती है) और अदालत के सामने पुलिस को दिए अपने बयान वापस लेती हूँ। क्योंकि ..... क्योंकि जो बयान पुलिस ने अदालत में दाखिल किया है, वो मैंने कभी दिया ही नहीं। जबरदस्ती मुझसे दस्तख़त कराये गए थे उस पर और.....

वकील: और क्या...? क्या बोलेंगी ......किरण जी आपको अदालत की इज्ज़त करनी चाहिए। आप कटहरे में खड़ी हैं और सच बोलने की कसम भी खाई है।

किरण: सच ही तो बोल रही हूं मैं! कटहरे की बात करते हो वकील साहब (हंसती है) .... कटहरे में तो मैं पैदा होते ही खड़ी हो गयी थी.....रही बात बच्चे की....(दुख से आवाज़ भर जाती है) मैं तो उसकी माँ हूँ और भला एक माँ अपने बच्चे का कैसे कत्ल कर सकती है?

वकील: अब ये नया ड्रामा रचा है आपने (व्यंग्य से हंसता है) माँ....हाहाहा....माँ....(अदालत में बैठे सब लोग हंसने लगते हैं)

जज: ऑर्डर ऑर्डर .... ऑर्डर ऑर्डर... (सब लोग शांत हो जाते हैं).....किरण जी आपका वकील कहाँ है...?

किरण: जज साहब मैं ही हूँ खुद की वकील। मैं खुद ही बहस करूँगी। प्लीज इजाज़त दें।

जज: इजाज़त है। (लोगों की खुसपुसाहट की आवाज़ आने लगती है।).....ऑर्डर ऑर्डर .....

किरण: जज साहब! मैं चाहती हूँ कि आप मेरे जन्म से लेकर आज तक कि कहानी सुने तभी आप इस केस में न्याय कर पाएंगे।

वकील: योर ऑनर! ये अदालत का समय बर्बाद करना चाहती हैं और अदालत को मुद्दे से हटाकर अपने किन्नर होने की सहानुभूति का फायदा उठाना चाहती हैं।

जज: ऑब्जेक्शन ओवररूल्ड। किरण! बोलिए आप क्या कहना चाहती हैं।

किरण: मेरी दादी को दो पोतियों के बाद पोता चाहिए था वंश चलाने के लिए .....

मंच पर धीरे-धीरे अंधकार होता है।

दृश्य -2

[और मंच के बाएं कोने में बने घर के सेट पर प्रकाश होता है। आंगन में एक खाट पड़ी है, जिस पर किरण की दादी

और किरण के पापा बैठे हैं।]

दादी: देख दीपक, मैं साफ कह चुकी हूँ, मुझे पोता चाहिए बस। अरे छोरियों से किसका वंश चला है? वंश तो छोरे ही चलावें हैं....हाँ और क्या? इस बार योगी बाबा ने भी कहा है कि वो दवाई देंगे और पक्का छोरा ही होवेगा....हाँ।

पिता: पर माँ डॉक्टर ने कहा है कि दो बच्चे ऑपरेशन से होने के बाद तीसरा बच्चा पैदा करने में खतरा है....(बात बदलने के लिए अपनी पत्नी को आवाज लगाता है) सरिता! सरिता! रोटियां लेकर आओ जल्दी....मां की थाली में रोटी नहीं हैं।

सरिता: (सरिता हाथ में रोटी लिए दौड़ती आती है, उसके सर से पल्लू सरक रहा है, दादी की थाली में रोटी रखने वाली है)

दादी: (गुस्से से दिखती है) क्यों री, कितनी बार मैं समझा चुकी हूं कि जब दीपक मेरे पास हो तो तेरे सर से पल्लू ना हटे। बेहया कहीं की! ले जा...बस खा लिया हमने और खवा दिए तूने!

पिता: (मां की तरफ सहमा सा देखता है) मां...

दादी: देख क्या रही खड़ी हुई टुकुर टुकुर! उठा के लेजा थाली।

सरिता: (थाली उठाने को झुकती है)

दादी: हां हां, ले जा ना...

दीपक: (सहमा सा) मां छोड़ ना....खा...

दादी: अरे ये तो चाहती ही है मुझे भूखा मारना....तभी तो जानबूझकर ऐसे ओठम करती है जिससे मेरा जी जले।

सरिता: माजी, वो जल्दी में पल्लू...

दादी: चुप खड़ी रह। और एक शब्द नहीं

दीपक: (पास जाकर मनुहार करता है) मां, छोड़ना, खा ले खाना। मैं करता हूँ इससे बाद में बात, चल खाले (टुकड़ा तोड़ कर खिलाने को होता है, दादी उसके हाथ का निवाला लेकर खुद खाने लगती है।) सरिता जाओ तुम रसोई में, यहां क्या कर रही हो खड़ी हुई।

सरिता: (अपना पल्लू ठीक करती हुई निकलती है)

दादी: (खाते हुए) हां तो क्या कह रहा था तू! खतरा! कैसा खतरा? किसको है खतरा? .... बहु की जान को....? होने दे....ज्यादा से ज्यादा मर ही जावेगी! मुझे पोता देकर मर भी जाये तो कोई बात नहीं, सीधा स्वर्ग में जाएगी।

पिता: (दादी की ओर असमंजस भरी निगाहों से देखते हैं)

दादी: (खाना खाकर, थाली में ही हाथ धो रही। पैर लटकाकर खाट पर बैठती है। टांगो में दर्द है, हाथ रखकर थोड़ा कराहती है।) राम राम राम राम (जप रही है) दीपक ...चल आराम कर ले। सोती हूं मैं भी

दीपक: (अपनी थाली खाट के नीचे सरकाता है और आँखों पर बांह रखकर लेट जाता है)

(उठकर अंदर जाती है,) हाय राम, मेरे गोड़ों का दर्द (कराहती है)

सरिता: (अंदर से आवाज आती है) मांजी मैं दबा दूं क्या आपके पैर!

दादी: (अदंर से ही आवाज आती है) जा रहने दे.... तू पैर तो क्या पर मेरा गला जरूर दबाना चाहती है। करमजली कहीं की....कुल का वारिश तो दे ना पाई...

(थोड़ी देर कराहती है। राम राम करती है। फिर दादी के खर्राटों की आवाज आने लगती है)

सरिता: (अंदर से कुछ बर्तन रखने की आवाज आती है। धीरे से कुंडी लगती है कमरे की बाहर से और बाहर आती है। अपने आंचल को हवा में लहराती है, जैसे कि वो आज आजाद हुई हो। अपने पति के पैरों के पास बैठ जाती है।)

ऐ! सुनिए ना.... सो गए क्या! देखिए ना आज कितना प्यारा मौसम है।

दीपक: (आंखों से बांह हटाते हुए) सरिता.... तुम

सरिता: (उसके होठों पर उंगली रखते हुए) शश्श.....कुछ ना बोलो....अहा......कितना साफ आसमान है। देखो देखो....चंदा और चकोर कितने सुंदर दिख रहे हैं (सरकते सरकते हल्के सिरहाने हो जाती है और दीपक के बालों को सहलाने लगती है)

(प्रकाश मद्धिम होने लगता है)

मंच पर अंधकार होता है।

दृश्य – 3

[दीवार को घुमाकर अस्पताल का दृश्य बनाते हैं। गैलेरी में दरवाज़े के पास एक लकड़ी की बेंच पड़ी है]

[नैपथ्य से किरण की आवाज आ रही है - उस दिन पापा बहुत घबराए हुए थे, माँ का दर्द के मारे बुरा हाल था। पापा और दादी, माँ को लेकर अस्पताल पहुंचे]

[किरण के पापा और दादी अस्पताल की गॅलरी में बेचैनी से टहल रहे हैं और बातें कर रहे हैं। रह रह कर, प्रसव पीड़ा से कराह रही किरण की माँ की आवाज आ रही है।]

दादी: ऐ दीपक ! तूने ठीक से चेक करवाया था ना। पक्का छोरा ई बताया ना उस डाक्टर ने...?

पिता: हाँ... हाँ.....माँ (चेहरे पर बेचैनी और घबराहट है। पीड़ा से चिल्ला रही पत्नी की आवाज सुनकर और बेचैन हो जाता है।]

दादी: (खुश होते हुए) भगवान अब जल्दी से मेरा पोता मेरी गोदी में दे दे।

[डॉक्टर घबराया हुआ दोनों के पास आता है।]

डॉक्टर: दीपक जी! आपकी पत्नी की हालत बहुत नाजुक बनी हुई है.....मैंने आपसे पहले ही कहा था की तीसरा बच्चा पैदा करने में उनकी जान को खतरा हो सकता है, मगर आपने मेरी एक नहीं सुनी देखिये अब शायद........।

पिता: डॉक्टर साब ....कुछ भी कर के मेरी पत्नी को बचा लीजिये, मैं आपके आगे हाथ जोड़ता हूँ (रोने लगता है)

दादी: डॉक्टर साब बच्चा तो ठीक रहेगा ना? अब बच्चे की खातिर ही तो ये खतरा मोल लिया ना.... चाहे जो भी हो बस बच्चा ठीक ठाक पैदा हो जाना चाहिए।

पिता: (आँखों में आंसू, चेहरे पर पछतावा और गुस्सा) माँ! ये कैसी बात कर रही है तू?

दादी: ठीक ही तो कह रही हूँ दीपक।

डॉक्टर: (पिता के कंधे पर हाथ रखते हुए) ईश्वर से प्रार्थना करो। मैं ऑपरेशन की तैयारी करता हूँ...(निकलता है)

[दोनों प्रार्थना करते हैं।]

दादी: हे भगवान! मेरे पोते को कुछ ना हो, सही सलामत मेरी गोद में डाल दे।

पिता: हे कान्हा, जगत के पालन हार, मेरी पत्नी और बच्चे, दोनों के प्राणों की रक्षा कर। पुत्र मोह में, मैंने अपनी पत्नी की जान को संकट में डाल दिया....हो सके तो मुझे क्षमा कर देना.....(रोता है)

[बच्चे के रोने की आवाज़ आती है।]

दादी: भगवान ने मेरी सुन ली ....भगवान ने मेरी सुन ली.... मेरा कुल दीपक आ गया.... अरी नर्सों जल्दी लाओ मेरे पोते को मेरे पास (बेचैनी से आवाज लगाती है)।

[नर्स बच्चा गोदी में लिए आती है। दादी दौड़ कर बच्चा अपनी गोदी में ले लेती है और पागलों की तरह बच्चे को चूमने लगती है और उससे बातें करने लगती है। पीछे-पीछे डॉक्टर उदास चेहरा लिए आता है]

पिता: (भय और ख़ुशी का मिश्रण चेहरे पर लिए) डॉक्टर साब ....डॉक्टर साब .....क...कक...क्या....क्या हुआ डॉक्टर साब .....? मेरी पत्नी कैसी है....? कैसी है सरिता?......आप कुछ बोलते क्यों नहीं ...?

डॉक्टर: (कुछ देर की चुप्पी के बाद) आई एम सॉरी दीपक जी.....हमने पूरी कोशिश की...मगर हम ....आपकी पत्नी को नहीं बचा पाये। (दीपक के कंधे पर हाथ रखता है)।

पिता: (विह्वल होकर रो रहा है और पछता रहा है।) हे भगवान! ये मैंने क्या कर डाला? मैंने..... मैंने अपनी पत्नी के प्राण ले लिये! मैं कातिल हूँ अपनी पत्नी का.....मैं कातिल हूँ...सरिता....सरिता...हो सके तो मुझे माफ़ कर देना....

दादी: (सुनकर थोड़ा बेचैन होती है, मगर अगले ही पल बेपरवाह होकर फिर से बच्चे को प्यार करने लगती है)

डॉक्टर: (दीपक के कंधे पर हाथ रखे हुए) संभालिए अपने आपको दीपक जी। अब अपने आपको कोसने से क्या होगा..? मुझे आप से एक बहुत जरूरी बात करनी है, आपके बच्चे के बारे में....वो....वो....

पिता: (परेशान होते हुए) अब मेरे बच्चे को क्या हुआ डॉक्टर साब? वो....स्वस्थ नहीं है क्या....क्या उसको भी

.....नहीं नहीं ....साफ-साफ बताओ ना डॉक्टर साब.....

डॉक्टर: वो...दरअसल बात ये है कि आपका बच्चा लड़का नहीं है.....वो...

पिता: क्या वो लड़की है.....(राहत की सांस लेते हुए) कोई बात नहीं डॉक्टर साब.... मुझे कोई दुख नहीं है।

दादी: (त्यौरियाँ बदलने लगती है। अभी तक बच्चे को कलेजे से चिपकाए हुए थी, हाथों में बच्चे को लिए कलेजे से दूर कर लेती है।)

डॉक्टर: दीपक जी.....दरअसल वो बेटी भी नहीं हैं.....वो एक एक......(पिता और दादी, डॉक्टर के बिल्कुल करीब आ जाते हैं और डॉक्टर के चेहरे को घूर कर देखने लगते हैं। दादी के हाथ बच्चे को लिए और दूर होने लगते हैं।) वो एक किन्नर है। (डॉक्टर अपने माथे का पसीना पोंछते हुए) उसके अंगों कि बनावट इतनी काम्प्लिकेटेड है कि हम लोग ये डिसाइड ही नहीं कर पा रहे हैं कि उसको मेल कहें या फ़ीमेल.....ऐसी सिचुएशन में बच्चे के टीन ऐज में पहुंचने पर ही कुछ डिसाइड हो पाता है कि उसका रुझान किस जेंडर की तरफ है....

[डॉक्टर, दीपक के कंधे पर हाथ रखता हुआ, पसीना पोंछता हुआ निकलता है। पीछे-पीछे नर्स भी निकलती है।]

पिता: (असमंजस की स्थिति में खड़ा है, जैसे वहीं पर जड़ हो गया हो)

दादी: (बच्चे को अपने बदन से दूर किए हुए, जैसे कि उसको पटक देगी। अचानक से आँखें फाड़कर बच्चे को घूरती है और फिर दायाँ हाथ ऊपर उठाती है। और फिर जैसे उसके बदन में बिजली सी कौंधती है, बच्चे का गला दबाने लगती है)

पिता: (जैसे ही उसकी निगाह पड़ती है, मानो वो किसी और दुनिया से खिंचा आया है। तेजी से अपनी माँ पर झपटता है। दादी के हाथ को गला दबाने से पहले ही रोकता है। बच्चे को छीनता है, दादी को धक्का देकर गिराता है और बच्चे को अपने कलेजे से लगाता है।) क्या करने जा रही थी माँ....इस नन्ही सी जान ने तेरा क्या बिगाड़ा है? क्यों इसको मारना चाहती है? इसने तो अभी ठीक से आंखे भी नहीं खोलीं और तू इसे ......(नफरत से अपना मुँह अपनी एक ओर फेर लेता है)

दादी: क्या करेगा इसे जिंदा रखकर भी? अरे कलंक है ये कलंक! बदनामी.....इसका तो मरना ही बेहतर है। ये इसके पहले जन्म के पापों का फल है जो ऐसा पैदा हुआ है। अरे भगवान ....(ऊपर देखते हुए हाथ उठती है) तुझे भी हम ही मिले थे......एक पोता मांगा था और थमा दिया ये....एक हिजड़ा....क्या करूँ मैं इसका.....? (फिर से झपटती है)

पिता: (बच्चे को अपनी माँ से बचाते हुए) माँ! तेरा दिमाग फिर गया है क्या? कैसा कलंक? कौन सा पाप? अब ये जो भी है और जैसा भी है, मेरा बच्चा है, सरिता की आखिरी निशानी, मैं इसको पालूंगा, इसकी माँ बनकर, इसका बाप बनकर, इसका सब कुछ बनकर (बच्चे को सीने से चिपकाते हुए)

दादी: (व्यंग्य से) और नाम क्या देगा इसे तू...? हैं....बता ....बेटा या बेटी .....क्या बोलेगा इसे....?

पिता: (असमंजस से बच्चे को देखते हुए) मैं इसको....मैं इसको....

दादी: अब जो भी है, और तू इसको पालना ही चाहता है और मुझे ज़िंदा देखना चाहता है तो सुन .....तू इसे बेटा बनाकर पालेगा...समझा ना तू.....और इस बात का खास खयाल रखना है कि किसी को इसकी असलियत का पता ना चलने पाये। डाक्टर को भी कह दे ये बात।

पिता: (सहमति से सर हिलाते हुए) अ अ अ हाँ.....ठीक है.....इसका नाम ....इसका नाम किरण रखेंगे

....किरण...

[मंच पर अंधेरा होता है।]

दृश्य – 4

[नैपथ्य से किरण की आवाज़ आती है- मेरे पापा मुझे हमेशा अपने साथ रखते थे। जब मैं छोटी थी तो मुझे एक झोली में लटका कर बांध लेते थे।]

मंच पर धीरे-धीरे प्रकाश होता है।

[पिता के हाथ में साइकल है, बच्चा कमर में बंधा हुआ है। कसला कंधे पर है। खेत में काम करने जा रहे हैं]

पिता: (अपनी बड़ी बेटियों को आवाज लगाते हुए)

सुमन और चमन सुनो, दादी को परेशान मत करना। दादी के पेशाब करने कि बाल्टी खाली करके उनके पास रख देना। और हाँ थोड़ी-थोड़ी देर में पानी देते रहना दादी को। मैं जल्दी ही लौट आऊँगा। ठीक है......?

(अंदर से दोनों बच्चियों की आवाज आती है......ठीक है पापा जी)

[नैपथ्य से किरण की आवाज़ आती है- मेरी पैदाइश के दो साल बाद दादी को फालिस पड़ गया था। खाट पर पड़ी पड़ी बस मुझे कोसती रहती थी।]

[विंग से दादी की आवाज आती है- अरी करमजलियों मेरा दम घुट रहा है.....जो मैं मर जाऊं तो अपने बाप से कह दियो के असेने किरण का हाथ ना लगने दे मुझे। - दादी के खांसने और कराहने की आवाज़ आती है। दोनों बच्चियों के रोने और घबराने की आवाज़ आती है। औरतों, मर्दों की आवाज़ आती है]

[किरण की आवाज़ आ रही है- उस दिन पापा जब लौटे तो देखा की दादी मर चुकी थी।]

पिता: (साईकल गिराता है, कसला फेंकता है और तेजी से दरवाजे में घुसता है। विलाप करने लगता है)

धीरे - धीरे मंच पर अंधेरा होता है।

दृश्य - 5

[घर की दीवार का रंग खराब हो चुका है। दरवाजे पर खाट पड़ी है। पिता खाट पर बैठे हैं]

[किरण की आवाज आ रही है- पापा उस दिन बहुत खुश थे मैंने बारहवीं में टॉप किया था। मगर मुझे दुखी भी लग रहे थे]

मंच पर धीरे धीरे प्रकाश होता है।

[तरुणावस्था, पैंट-शर्ट पहने, वक्षों का उभार विदित हो रहा है। किरण अपने पापा के पास खुश होते हुए आती है]

किरण: पापा देखो मेरे मार्क्स कितने अच्छे आये हैं....सरकारी कॉलेज में एडमिशन हो जाएगा मेरा अब। मैं फ़ैशन डिजाइनिंग का कोर्स करूँगी....(एकदम संभलते हुए) ....करूँगा। (पिता की ओर से कोई प्रतिक्रिया न पाकर, आवाज़ की चहक चिंता में बदल जाती है] पापा क्या हुआ...?आप...आप...इतने उदास क्यों हैं...? (नीचे बैठते हुए, पापा के हाथ पकड़ती है।) बताओ ना पापा....

पिता: (किरण के चेहरे को देखता है, नज़रें, चेहरे से गर्दन और फिर उसके उभरते वक्षों पर आकर टिकती हैं, जो शर्ट में छिप नहीं पा रहे)

किरण: (ये देखकर सकपका जाती है)

पिता: बेटा लोगों को तुम पर शक होने लगा है.....लोग तुम्हारे बारे में तरह - तरह की बातें बनाते हैं.... अब तुम्हारी पहचान छुपाना मुश्किल है.....तुझे पता है, सुमन और चमन के ससुराल वालों ने.....(रोने लगता है)....शादी करने से इनकार कर दिया....कहते हैं कि लोग उनके बेटों को चिढाएंगे कि उनका साला....उनका साला......(आंसू पीते हुए शब्दों को चबा जाता है)

किरण: (आंखे डबडबाई हुईं हैं) आप फ़िक्र मत करो पापा....ये शादी होकर रहेगी.....कुछ दिन बाद उनसे फिर बात करना.....वो मान जाएंगे......पापा! (कुछ सोचते हुए) अब वक्त आ गया है। आपके बेटे किरण को मरना होगा हमेशा के लिए। (दृढ़ता से)

पिता: क्या? (घबराकर)

किरण: हाँ पापा, इसमें ही सब की भलाई है।

पिता: नहीं बेटा....तू ऐसा कुछ नहीं करेगा बेटा (घबराते हुए किरण का हाथ पकड़ लेता है)

किरण: पापा ! आप घबराइए नहीं। किरण मरेगा और किरण पैदा होगी। समाज के लिए मेरा अस्तित्व खत्म हो जायेगा और फिर मेरे अस्तित्व को नई पहचान मिलेगी, मेरी पहचान...! (चेहरा आत्मविश्वास से दमकने लगता है) अब मुझे हमेशा के लिए जाना होगा, ये घर, ये आंगन ये गलियां और ...और आप सब को छोड़कर (आंखें डबडबाने लगती हैं)

पिता: (आंखों में आंसू भर आते हैं। किरण का हाथ पकड़ लेता है। गर्दन हिलाकर नहीं जाने को बोलता है। किरण दरवाजे में घुसती है। पिता पीछे - पीछे जाते हैं।) किरण बेटा ये मत कर ....ये मत कर बेटा....! मंच पर अंधेरा होने लगता है।

दृश्य - 6

[किरण के पापा और मुहल्ले के कुछ लोग बैठें हैं। किरण

की तस्वीर पर माला चढ़ी है। लोग किरण के पिता को ढांढस बँधा रहे हैं।]

पिताः (रोते हुए) मेरे बच्चे की लाश भी नहीं मिली! उसका संस्कार भी अपने हाथों से नहीं कर पाया। किरण की बहनों का ससुरः भाईसाहब संभालिये अपने आपको। अब जैसा कुदरत को मंजूर। वैसे भी जो होता है अच्छे के लिए ही होता है। आप चिंता ना करो सुमन और चमन के हाथ पीले करने की सोचो। हमें अब इस रिश्ते से कोई ऐतराज नहीं है। हम लोग तय किये दिन पर ही बारात लेकर आएंगे। मंच पर धीरे-धीरे अंधेरा होने लगता है। पिता के रोने की आवाज़ आ रही है।

दृश्य – 7

[किरण की आवाज़ आ रही है- अपनी बहन के कुछ कपड़े लेकर मैं घर से निकल गयी थी। मेरे अंदर की औरत कब से अपना असली रूप निहारने के लिए तड़प रही थी। अब तक मैं चोरी छिपे अपनी बहन के कपड़े पहन कर देखती थी। आज पहली बार, लड़की बनकर लोगों के बीच से गुज़र रही थी)

मंच पर धीरे-धीरे प्रकाश आता है।

(किरण सूट सलवार पहने, मुंह पर दुपट्टा लपेटे, लोगों की नजरों से बचते हुए जा रही है। विंग से एक हाथ किरण को खींचता है। पीछे से संगीत और घुंगरु की आवाज़ आती है।)

किरणः (थोड़ी देर बाद बाहर निकलती है। सर के बाल लंबे हैं वही सूट पहना है। होठों पर लिपस्टिक लगी है। आँखों में उदासी, पछतावा और डर है। एक कुर्सी पर बैठी है अपने आप में सिमटती हुई। कई किन्नरों ने उसको घेरा हुआ है। कोई दौड़ कर गजरा ला रही है तो कोई चूनर ओढ़ा रही है। गुरु मां, बलाएं ले रही है। एक छोटी किन्नर, किरण को बड़े प्यार और सम्मान से निहार रही है)

छोटी किन्नरः (किरन के कंधे पर अपना सर मुंह रखते हुए, उसके कंधों को प्यार से सहलाती है) दीदी बताओ ना, कैसा लगता था स्कूल में, बताओ ना दीदी! मैं तो कभी स्कूल नहीं गई ना (मायुस होती है) (किरन का जवाब नहीं सुनकर, आगे आती है और उसकी गोद में सर रख देती है और मनुहार करते हुए पूछती है) दीदी आपके पापा आपको बहुत प्यार करते हैं ना! (किरण उसका सर सहलाने लगती है। छोटी किन्नर रुआंसी होकर बोलती है) मेरे पापा तो बहुत मारते थे मुझे गालियां भी देते थे...और फिर उस दिन .... उस दिन मुझे घर से निकाल दिया....(ज़ोर - ज़ोर से रोने लगती है,) और वो लड़के....मुझे.....

किरणः (उसको गले से लगाकर रोती है)

गुरुजीः ऐ छोटी चल हट यहां से (बांह पकड़ कर हटाती है) देखूं तो कैसी लग रही है मेरी जान....बिल्कुल चांद का टुकड़ा (बलाएं लेती है)

किरणः (गुरुजी का हाथ पकड़ते हुए)! गुरु मां! मुझसे ये सब नहीं होगा.....नहीं होगा....(सिसकने लगती है)

गुरुजीः देख किरण! यही तेरी पहचान है, तेरा अस्तित्व यही है....हाँ यही है तेरा अस्तित्व .....हिजड़ा है तू .....जितना जल्दी तू इसको स्वीकार ले उतना बेहतर है तेरे लिए....और यही काम है हिजड़ो का, नाचना गाना, बधाई माँगना....!

किरणः ये सब ही क्यों? क्या हमें कोई हक़ नहीं अपनी जिंदगी को एक आम नागरिक की तरह गुज़ारने का? मेरा जो भी अस्तित्व है, मैं स्वीकारती हूँ उसको। मगर मैं सम्मान पूर्वक जीना चाहती हूँ।

गुरुजीः सम्मानपूर्वक ...!... हाहाहा...... सम्मानपूर्वक. ..... हाहाहहहा (हँसते - हँसते आंखे भर आती हैं। रोने लगती है) हम हिजड़ों को इस समाज में सम्मान पूर्वक जीने का कोई हक़ नहीं है, मेरी बच्ची (किरण के चेहरे को छूते हुए)। न जाने कितनी भ्रांतियाँ पाले हुए है ये समाज हमारे बारे में। कोई हमें पहले जन्म का घोर पापी करार देता है तो कोई शापित मानता है हमें। हाँ कुछ लोग हैं जो हमें शुभ मानते हैं और अपने नवजातों और नव विवाहितों को हमारा आशीर्वाद दिलाते हैं और बदले में कुछ बधाई देते हैं। इस सब के बीच लोग ये भूल जाते हैं कि ...कि आखिर हैं तो हम भी इंसान ही... बेटा ये जो तुम थोड़ा पढ़ लिख गयी हो ना, इसने तुम्हारा दिमाग फेर दिया है.....ये ख़ुशफहमी निकाल दो दिमाग से और चलो आज से इस सफर कि शुरूआत करो....(बाहें पसार कर उसे अपने पास आने का इशारा करती है)

किरणः (गुरुजी की बाहों में सिमट जाती है। सिसकने

लगती है) गुरुजी.....मैं एक औरत की तरह जीना चाहती हूँ.....एक बीवी, एक बहू और....और माँ बनना चाहती हूँ.....(रोने लगती है)

गुरुजी: (किरण के चेहरे को अपने हाथों में लेते हुए) अब ये सब बातें छोड़ और चेहरे पर मुस्कान ओढ़ ले। आज मुखिया के यहां पोता होने की खशी में प्रोग्राम है। बधाई गानी है चल.....

किरण: (आंसू पोंछती हुई मुस्कुराती है। संगीत बजने लगता है। तालियाँ बजाने लगती है। धीरे - धीरे ठुमकने लगती है। गुरुजी मुस्कुराती है, और बलाएँ लेने लगती है। किरण और मस्त होकर नाचने लगती है। नाचते नाचते विंग में चली जाती है।)

मंच पर अंधेरा होने लगता है।

दृश्य - 8

[किरण की आवाज़ आ रही है- अब मेरा यही काम था, नाचना गाना, बधाई मांगना। मेरे परिवार और जान-पहचान वालों के लिए तो मैं मर चुकी थी। मेरी बहनों की शादी हो चुकी थी, उनके बच्चे थे। बस मेरे पापा को पता था मेरे बारे में सब। मैं उनसे मिलने जाती रहती थी।]

मंच पर प्रकाश आने लगता है।

[किरण की आवाज़ आ रही है- उस दिन मैं पापा से मिलने जा रही थी। मैं गली के छोर पर पहुंची, तो देखा लोग एक दूसरे को मारने के लिए दौड़ रहे थे। दंगे भड़क चुके थे]

[विंग से, दोनों दिशाओं से लोग हथियार लिए, मारो-मारो, करते हुए दौड़ रहे हैं। एक बाद एक लाशें गिर रही हैं। दंगों का दृश्य।]

किरण: (देखती है कि उसके पापा पड़े हुए आखिरी साँस ले रहे हैं। किसी ने उनके सर पर डंडा दे मारा। भागकर उनके सर को गोदी में रखती है।) पापा (ज़ोर से चिल्लाती है)....कोई एम्ब्युलेन्स बुलाओ....मत मारो .....(पापा दम तोड़ते हैं। किरण बद-हवाश सी इधर-उधर दौड़ती है लोगों के डंडे हथियार उस पर पड़ते हैं ।) रूक जाओ, मत मारो.....बंद करो ये दंगा....(तभी उसकी नज़र पड़ती है कि लाशों के बीच में एक बच्चा पड़ा है। वो तेजी से दौड़कर बच्चे को अपने कलेजे से लगा लेती है।)

भीड़: (विंग के एक तरफ से लोग चिल्लाते हैं- मारो - मारो ये बच्चा दूसरे धर्म वालों का है। दूसरी तरफ वाले चिल्लाते हैं - नहीं, ये उनके धरम का बच्चा है, मारने दो।)

किरण: चुपपपपपपपपप.....(किरण ज़ोर से चिल्लाती है) ये इंसान का बच्चा है, और तुम में से एक भी इंसान कहलाने लायक नहीं है। (नफरत से थूकती है) सारे के सारे वहशी जानवर! मेरा है ये बच्चा, हाँ मेरा है, मेरा है....(बच्चे को बेतहाशा चूमने लगती है। छाती से लगा लेती है)

भीड़: मारो साले को, ये तो साला हिजड़ा है....मारो बच्चे को भी मार डालो.....मारो मारो मारो.....

किरण: [दौड़ती है। भीड़ पीछे दौड़ती है। जैसे-तैसे वहाँ से बच कर भाग जाती है]

मंच पर अंधेरा होने लगता है।

दृश्य – 9

मंच का अदालत वाला सेट प्रकाशित होता है.।

[अदालत में किरण खड़ी है।]

किरण: जज साब ! जिस बच्चे को दोनों पक्षों के लोग मारने पर तुले थे, अचानक से दोनों पक्ष उस बच्चे को अपने अपने धरम का बताने लगे! (हँसती है) वाह रे राजनीति, और ये पागल अधपका इंसान, इसे जो अपने स्वार्थ के लिए नचाए, ये नाचने लगता है! (संभलती है) दंगे थम चुके थे। मगर दंगों से फायदा उठाना तो अब शुरू हुआ था। मुझे तरह-तरह की धमकियाँ मिलने लगीं। मैं एक अदना सी किरण, जिसका कोई अस्तित्व नहीं था, कोई मज़हब नहीं था मीडिया ने रातों - रात मुझे न जाने क्या-क्या बना दिया। किसी ने क्रिमिनल, किसी ने किसी बड़े गैंग का मोहरा, किसी ने बहरूपिया, किसी ने विपक्ष का मोहरा और न जाने क्या-क्या? कोई मुझे जेहादी बताता तो कोई कट्टरपंती। कुछ ही वक़्त में, मैं किन्नर से मज़हब वाली हो गयी थी, हिंदु, मुसलमान.....! (व्यंग्य से हंसती है) कोई कहता कि बच्चे को किन्नर बनाकर अपनी जमात में शामिल करना चाहती हूँ। लोग पूछते हैं कि आखिर मेरा धरम क्या है? क्या इंसान होना सबसे बड़ा धरम नहीं? हम किन्नरों में कम-से-कम ये एक बात बहुत अच्छी है, यहाँ ना कोई धरम, ना कोई जात-पात और न कोई उंच - नीच। (थोड़ा संभलती है)

फिर मैं अंडर ग्राउंड हो गयी। उस बच्चे की ममता पाकर मैं अभिभूत हो गयी थी। मगर ये भी तो संभव नहीं था कि ऐसे जिया जाये, कम-से-कम मेरे किरण के लिए तो ये ठीक नहीं था। हाँ, हाँ मैंने उसका भी नाम किरण ही रखा था। मैं पब्लिक में आई। बहुत सारी प्लानिंग की थी। मैंने लोगों को बताया कि बच्चा मर चुका है। ये खबर लगते ही जैसे मीडिया में बाढ़ आ गई। चारों तरफ फिर से किरण की ही बातें(व्यंगय से हँसती है)। और फिर ये केस और मैं यहाँ, कटहरे में।

वकील: योअर ऑनर! देखा! किस तरह ये अदालत का वक़्त बर्बाद कर रही हैं। इस से तो कोई निष्कर्ष नहीं निकलता कि बच्चे का क्या हुआ। किरण जी आप ये बताइये कि आखिर आपने बच्चे की बॉडी को कहाँ और कैसे डिस्पोज़ किया?

किरण: ठहर जाइए वकील साहब, मेरे बच्चे के बारे में ऐसे शब्द मत बोलिए। वो कोई बॉडी नहीं है, जीता जागता है, मेरा बच्चा! (आवाज लगाती है। गुरुजी बच्चे के साथ प्रवेश करती है। बच्चा मम्मा मम्मा करता हुआ दौड़ता है। पूरी अदालत भौचक्की होकर देखती है) जज साब इस घटना को आज कई साल गुजर गए मगर किसी परिवार ने इस बच्चे के लिये क्लैम दाखिल नहीं किया है। मैं अदालत से निवेदन करती हूँ कि अगर अदालत मानती है कि मैं भी इंसान हूँ तो मुझे कानूनी तौर पर इस बच्चे की माँ करार दिया जाये। मैं वादा करती हूँ कि इसको एक अच्छा इंसान बनाकर पालूंगी।

जज: किरण जी! मैं आपकी भावनाओं की कद्र करती हूं। मग़र अदालत के फैसले भावनाओं में बह कर नहीं लिए जाते। मगर इस बच्चे के लालन-पालन की जिम्मेदारी आपको देना, इस बच्चे के भविष्य के लिए अच्छा नहीं होगा। एक नार्मल बच्चा होने के बावजूद इसको बहुत-सी मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा।

किरण: पर जज साहिबा ! मैं इसको किसी मुश्किल से नहीं गुजरने दूंगी। आप मुझे एक मौका....तो दीजिए। (उम्मीद से जज की ओर देखती है)

जज: सभी गवाहों और सबूतों को मद्देनज़र रखते और दोनों पक्षों की बहस को ध्यान में रखते हुए अदालत इस निष्कर्ष पर पहुंची है कि बच्चे की कस्टडी एन. जी. ओ. किलकारी को दी जाती है। (एन जी ओ वाले बच्चे के पास आते हैं उसको चॉक्लेट, खिलोने दे रहे हैं मगर बच्चा किरण की ओर देख रहा है। भागकर किरण से लिपट जाता है। माँ - माँ कहकर पुकारने लगता है। किरण उसे प्यार करती है। बेतहाशा चूमती है। एक पुलिस कांस्टेबल बच्चे को छीन कर एन जी ओ वालों को दे देती है। किरण खड़ी - खड़ी रो रही है। तभी गुरुजी उसके पास आती है।)

गुरु जी: रो मत मेरी बच्ची! रो मत! (और खुद भी रोने लगती है) इस समाज में पारिवारिक ज़िन्दगी जीने का हमें कोई हक नही है, कोई हक नही!

किरण: पर गुरुजी! (शून्य में निहारते हुए) क्या इनको और हमको एक मालिक ने ही नहीं बनाया है? (एक दम से बदहवाश सी हो जाती है। जोर से चिल्लाती है) मेरा बच्चा.... ठहरो! आप सब को बड़ा गुरूर है ना अपने मर्द और औरत होने पर! अरे मैं पूछती हूं क्या तुमने खुद से खुद को बनाया है? तुम्हें और मुझे बनाने वाला वही है जिसे तुम में से कोई अल्लाह कोई ईश्वर तो कोई भगवान बोलता है। अगर भगवान, खुदा आपका है तो खुदा मेरा भी है...अब मैं आप लोगों से शिकायत भी क्या करूं आपकी बिसात ही क्या है?...ऐ खुदा, मालिक, भगवान, मैं पूछती हूं तुझसे कि अगर हमें ऐसा बनाया तो इज्ज़त की जिंदगी क्यों नहीं बख्शी.....ये फैसला इन नासुकरे मर्द औरतों के हाथ में क्यों...? बजाओ री......आज मैं खुल कर नाचूंगी..... (नाचने लगती है, रोते हुए)

[पर्दा गिरता है।]

समाप्त.......

ऊँचाई के शिखर पर हिंदी को पहुँचाओ,
हिंदी की पहचान पूरी दुनिया में बनाओ।

गीत

आयुष कुमार 'कश्यप'
निरीक्षक

कोशिशें तो बहुत हमने की थीं मगर
तुमको पाने की संभावना व्यर्थ थी।

हमने सोचा था तुमको सुनाएंगे पर
प्रेम के गीत पृष्ठों में ही रह गये
नींद की नींव पर जो बनाये महल
एक दिन वो विरह धार में बह गये
फिर कभी गीत कोई रचा ही नहीं
फिर किसी से कोई भावना व्यर्थ थी
कोशिशें तो बहुत हमने की थीं मगर
तुमको पाने की संभावना व्यर्थ थी।

कंटकों पर लगातार चलते रहे
हमने देखा कहां साथ हो या नहीं
वेदना की पराकाष्ठाओं में भी
अपने नैनों को हमने भिगोया नहीं
व्यर्थ था मेरे यौवन का हर बचपना
अनगिनत जो सही वेदना व्यर्थ थी
कोशिशें तो बहुत हमने की थीं मगर
तुमको पाने की संभावना व्यर्थ थी।

पांव से जैसे कांटा निकाले कोई
इस तरह उस हृदय से निकाले गए
फिर निरंतर तमस उर में भरता रहा
मेरे जीवन से सारे उजाले गए
दीप उर में जलाए रखा था मगर
रोशनी की कोई कल्पना व्यर्थ थी
कोशिशें तो बहुत हमने की थीं मगर
तुमको पाने की संभावना व्यर्थ थी।

एक ये दुख कि तुम लौट आए नहीं
एक ये दुख कि हमने पुकारा नहीं
ये हृदय कह रहा था चलो उस तरफ
और मन कह रहा था दुबारा नहीं
यह समझने में हमको लगे दो बरस
एक निर्जीव से प्रार्थना व्यर्थ थी
कोशिशें तो बहुत हमने की थीं मगर
तुमको पाने की संभावना व्यर्थ थी।

जीवन का सार

अर्पिता अभिजीत सावंत, आयकर निरीक्षक

जीवन एक संघर्ष है, प्रतिदिन नयी परीक्षा
कभी आशा है, तो कभी है निराशा।
तुझे बस चलते ही रहना है
ना रोना है, ना थक जाना है।
ना तू मायूस हो, ना हार मान मेरे प्यारे
तेरे जीवन रूपी बगीचे में, खुशियों के फूल खिलेंगे न्यारे-न्यारे।
स्वयं पर भरोसा रख, तू सोचेगा वही पायेगा
अच्छे विचारों से तेरा जीवन, आनंदमय हो जायेगा।
लोग तो तुझे बदनाम करने का, नीचा दिखाने का ढूंढते रहेंगे अवसर
पर तू अपने मन पे न होने देना, उसका इतना भी असर।
ध्यान रख जिंदगी, एक बार ही मिलती है
उसे तुझे गले लगाकर, तहे दिल से जीना है।
तेरा मन क्या कहता है, उसकी आवाज है तुझे सुननी
लोगों से ज्यादा, अपने दिल की बात है तुझे समझनी ।
अच्छी सोच, अच्छे लोग, अच्छा विचार, अच्छा आचार
यही है तेरे जीवन का, अनमोल सच्चा सार।
किसी की चुभती हुई बातों को, तू अनसुनी कर देना
जीवन की असफलता में भी, धैर्य से अग्रसर होना।
तुझे बस अच्छे जीवन के लिए, सकारात्मक है सोचना
जिंदगी की इस सच्चाई को, तू जरूर लोगों में प्रकाशित करना।

हमारा देश भारत

मनु गुप्ता 'संगरिया', आशुलिपिक

हमारा भारत ऐसा अनोखा राष्ट्र है, जिसका निर्माण विविध भाषा, संस्कृति, धर्म के तानो-बानो, अहिंसा और न्याय के सिद्धांतों पर आधारित स्वतंत्रता संग्राम तथा संस्कृति के समृद्ध इतिहास द्वारा अनेकता में एकता के सूत्र में बाँध कर हुआ है। एक साझा इतिहास के बीच आपसी समझ की भावना ने विविधता में एक विशेष एकता को सक्षम किया है, जो राष्ट्रवाद की एक अद्वितीय लौ के रूप में सामने आती है।

देश के विभिन्न क्षेत्रों की अपनी एक अनोखी पहचान भी है। उत्तर में जहाँ भारत के ताज के रूप के विख्यात जम्मू-कश्मीर धरती का स्वर्ग है वहीं दक्षिण भारत के मंदिरों को देखकर मन गदगद हो जाता है और इस विषय पर विचार किए बिना आप रह नहीं सकेंगे कि प्राचीन काल में जब दुनिया में चेतना का संचार भी नहीं हुआ था उस समय भी हमारी सूक्ष्मकला अपने शीर्षबिंदु पर थी। पश्चिम में मरूस्थल जहाँ विशेष तौर पर देशी-विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करता है तो वहीं पूर्व में ट्रैकिंग, नौकायान एवं राफ्टिंग रोमांचित कर देने वाला है। जम्मू-कश्मीर में विश्व का अपनी तरह का अनोखा तैरता हुआ डाकघर, गुजरात में तुलसी श्याम पहाडियां जो गुरुत्वाकर्षण के विरूद्ध गति करवाती प्रतीत होती हैं, महाराष्ट्र में बुलढाणा जिले के लोनार में लोनार झील उल्कापिंड निर्मित है, राजस्थान के देशनोक में करणी माता मंदिर विचित्र आकर्षणों में से एक है जहाँ चूहों द्वारा प्रसाद चखने के बाद भक्त प्रसाद खाते हैं, मिजोरम में बिना दुकानदार के खरीदारी परंपरा, देवभूमि उत्तराखण्ड, गुवाहाटी में मासिक धर्म का उत्सव, उत्तर प्रदेश में लट्ठमार होली के दौरान महिलाओं द्वारा पुरुषों को एक अनुष्ठान के रूप में लंबी लाठियों से पीटना, हिमाचल प्रदेश में दुनिया का सबसे ऊंचा क्रिकेट मैदान, केरल का प्रसिद्ध टाइगर प्ले पुली काली, पश्चिम बंगाल में मिट्टी से दुर्गा की मूर्ति बनाना आदि दृश्य एक ओर गौरवमयी इतिहास तो दूसरी ओर प्रगतिशील भारत का गुनगान करते प्रतीत होते हैं।

हमारा भारत देशी-विदेशी पर्यटकों की प्रत्येक उत्सुकता को पूर्ण करता प्रतीत होता है। देश की नदियाँ स्वच्छ जल प्रदान करती हैं तो इनके किनारे पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, घने वन यहाँ की जैव विविधता को संजोए हैं तो हिमालय को निहार लेने की चाहत भला कौन नहीं करता।

समय और तकनीक ने संपर्क और संचार के मामले में दूरियों को कम कर दिया है। ऐसे युग में जो गतिशीलता और आगे बढने की सुविधा प्रदान करता है, विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान के सामान्य दृष्टिकोण के द्वारा आपसी रिश्तो में मजबूती करना और राष्ट्र-निर्माण महत्वपूर्ण है। आपसी समझ और विश्वास भारत की ताकत की नींव है और भारत के सभी नागरिकों को सांस्कृतिक रूप से एकीकृत रखे हुए है। राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के लोगों के बीच पारस्परिक संपर्क बढ़ाया जाए ताकि देश भर में समझ की एक सामान्य भावना प्रतिध्वनित हो। देश के प्रत्येक राज्य और केन्द्र शासित प्रदेश को एक वर्ष के लिए किसी अन्य राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश के साथ विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से जोड़ा जाना चाहिए, इस दौरान वे भाषा, साहित्य, भोजन, त्योहारों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, पर्यटन आदि क्षेत्रों में एक दूसरे के साथ जुड़ें। भागीदार राज्य/ केन्द्र शासित प्रदेश आपस में एक दूसरे को सांस्कृतिक रूप से अंगीकृत करें। यह देश को मजबूती प्रदान करने की दिशा में एक अच्छी व शुभ पहल होगी।

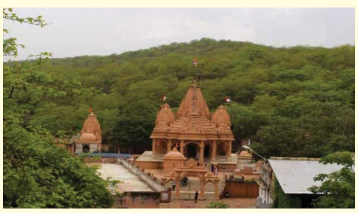

कुर्सी

राम कृष्ण केडिया, अपर आयकर आयुक्त

पद है कुर्सी, मद है कुर्सी ।
सामर्थ्य की हद है कुर्सी ।।
मान-सम्मान-स्वाभिमान है कुर्सी ।
शान-अरमान-श्रीमान है कुर्सी ।।
किसी के होंठों की मुस्कान तो किसी का
प्राण है कुर्सी ।
अब आप ही अंदाजा लगाइए कि कितनी
महान है कुर्सी ।
हाँ कुर्सी आय देती है, जी हाँ न्याय देती है ।
रजा देती है, तो सजा भी देती है ।।
अजी तलवार है कुर्सी, चमत्कार है कुर्सी
सरदार है कुर्सी, असरदार है कुर्सी
अजी दरबार है कुर्सी, दरकार है कुर्सी
भाई कुर्सी के क्या कहने कि सरकार है कुर्सी
मगर-जब से कुर्सी बनी चटोर, आदमखोर
प्रशंसनीय न रही, विश्वसनीय न रही
स्वार्थ के दलदल में धँस गई कुर्सी
संकीर्णता के दायरों में सिमट गई कुर्सी
आज कुर्सी के पर्यावरण में सड़े हुए पत्ते हैं ।
असामाजिक तत्व इस कुर्सी के हत्थे हैं
हाँ सैकडों इल्जाम इसी कुर्सी के मत्थे हैं
अहम सवाल है कि आखिर और कब तक
बहकाएगी कुर्सी
मानवता को जहर के घूँट पिलाएगी कुर्सी
आज जिम्मेदारी है हम नौजवानों पर
कि इस कुर्सी की ताकत को पहचानें
समझें इसकी अहमियत, जानें इसकी असलियत
संकीर्णता और स्वार्थ के दायरों से बाहर आएं
मजबूत चट्टानी इरादों से एक टिकाऊ कुर्सी बनाएं
लाएं जागृति, मिटाएं विकृति
बनाएं भारत वर्ष की असीम सुन्दर आकृति
बचाएं अस्तित्व कुर्सी का, सँवारें व्यक्तित्व
कुर्सी का
हाँ! जब बचेगा अस्तित्व, बनेगा व्यक्तित्व
तो कुर्सी दिखेगी - मानवता की प्रतिमूर्ति, आम
जरूरतों की पूर्ति
कुर्सी दिखेगी कुर्सी, बिल्कुल किसी जन्नत
की हूर सी
फिर हर कोई दिल से कहेगा -
वाह! क्या खूब है कुर्सी ।
वाह! क्या चीज है कुर्सी ।।

पांचाली का अपमान

सत्यम ठाकुर, आयकर उपायुक्त

द्रुपद की आग की रूपा
नारी शक्ति की स्वरूपा,

कृष्ण की चहेती, धृष्टद्युम्न की बहना
पाण्डवों की भार्या, द्रुपद की कन्या,

द्रौपदी हुई भरी सभा में लज्जित
सभा जो थी धर्मावलम्बियों से सुसज्जित,

व्यसन के वश में भूली सारी सीमा
चौसर में लगी दांव कुरु वंश की गरिमा,

न आये भीष्म, न कृपाचार्य, न गुरु द्रोण
पाण्डु पुत्र भी तो खड़े रहे वहां मौन,

क्या एक भी क्षत्रिय ना बचा था सभाजनों में?
क्या इतने अंधे हो चले धृतराष्ट्र पुत्र-मोह में?

माँ-तुल्य भाभी का जब खींच रहा था वस्त्र,
क्या कुण्ठित हो गए थे पाण्डवों के अस्त्र-शस्त्र?

जिन पाँचों के पौरुष पर करती थी अभिमान
घोर अधर्म पर भी ना उठे उनके तीर-कमान,

चौसर में हारकर अपमान सहना ही क्षत्रिय-धर्म
क्या इसी धर्म के पालन हेतु होता रहा कुकर्म?

या फिर सभा की मूकता का कुछ अन्य था कारण?
संभवतः नारी का अपमान समाज की बात है साधारण,

यदि ऐसा है तो प्रण लो कि नारी की रक्षा हो
यह भारत भूमि स्त्री-सम्मान की विस्तृत कक्षा हो,

अब किसी दुःशासन की भेंट ना चढ़े कोई दामिनी
क्योंकि सदा से अनैतिकता है विध्वंस की सहगामिनी,

और भावी विनाश पर मुण्डों संग नाचती है माँ काली
जब-जब कुधर्मियों के हाथों अपमानित होती पांचाली

अपने कार्यालय में ये कार्य हिंदी में करें।

- सभी फाइलों पर विषय द्विभाषी रूप में लिखे जाएं।
- छुट्टी, त्योहार अग्रिम, सामान्य भविष्य निधि, आकस्मिक व्यय के लिए मंजूरी आदि के आदेश, कार्यभार ग्रहण, कार्यमुक्ति, रिटेन्शन, प्रभार हस्तांतरण आदि जैसे स्थापना व प्रशासन संबंधी सभी कार्य हिंदी में ही किए जाएं।
- फाइलों में टिप्पणियां हिंदी में लिखी जाएं।
- रजिस्टरों पर विषय द्विभाषी रूप में और उनमें प्रविष्टियां हिंदी में की जाएं।
- स्थानांतरण व तैनाती, परिपत्र, करार जैसे धारा 3(3) के अधीन आने वाले सभी कागजात द्विभाषी रूप में जारी किए जाएं।
- विभिन्न विषयों पर भेजी जाने वाली रिपोर्ट के प्रोफार्मा द्विभाषी रूप में भेजे जाएं और इन्हें हिंदी पत्रों में गिना जाए।
- विभिन्न कागजात, रिपोर्ट आदि भेजते समय अग्रेषण पत्र हिंदी में भेजे जाएं।
- निर्धारितियों से संबंधित फाइलों पर नाम और पते द्विभाषी रूप में लिखे जाएं।
- सभी प्रकार की नोटिसों पर निर्धारितियों के नाम-पते हिंदी में लिखे जाएं।
- राजभाषा नियमावली, 1976 के नियम 5 अनुसार हिंदी में प्राप्त/हिंदी में हस्ताक्षरयुक्त पत्र का उत्तर हिंदी में दिया जाए।
- नियम 11 के अनुसार रबर स्टांप, नामपट, लेटरहेड जैसी सभी प्रकार की लेखन-सामग्री द्विभाषी होनी चाहिए।
- ई-मेल हिंदी में भेजे जाएं। प्राप्त ई-मेल की प्राप्ति रसीद हेतु मेल में ऑटो रिप्लाय में हिंदी में मेसेज बनाकर रखें जो ई-मेल भेजनेवाले को प्राप्ति रसीद के रुप में प्राप्त होगा।
- अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में दिए जाएं।
- मूल रुप से सभी पत्र हिंदी में ही भेजने का प्रयास किया जाए।
- यदि किसी अन्य फॉर्म की आवश्यकता हो, तो अनुवाद हेतु अंग्रेजी फॉर्म राजभाषा अनुभाग में भेजें।

आयकर विभाग, मुंबई में राजभाषा हिंदी संबंधी गतिविधियों पर रिपोर्ट

रमणजय सिंह, सहायक निदेशक (रा.भा.), मुंबई

आयकर विभाग, मुंबई में राजभाषा हिंदी संबंधी गतिविधियों पर रिपोर्ट

: रमणजय सिंह, सहायक निदेशक (रा.भा.), मुंबई

हिंदी पखवाड़ा, 2023 :

प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, मुंबई प्रभार में दिनांक 14.09.2023 **से दिनांक** 29.09.2023 **तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इस अवसर पर आयकर भवन के शामियाने में दिनांक** 18.09.2023 **से दिनांक** 22.09.2023 **तक विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे निबंध (18.09.2023), टिप्पण-आलेखन (20.09.2023), राजभाषा प्रश्नोत्तरी (20.09.2023), अनुवाद (21.09.2023), श्रुत लेखन (21.09.2023), संकेत-बिंदुओं के आधार पर कहानी लेखन (22.09.2023), स्व-रचित कविता पाठ (22.09.2023) का आयोजन किया गया**

इस आयोजन से संबंधित संदेश एवं कुछ प्रतिनिधि स्नैप विभागीय ट्वीटर हैंडल एवं विभागीय वेबसाइट www.incometaxmumbai.gov.in **पर उपलब्ध करवाए गए। सभी 7 प्रतियोगिताओं के 41 सफल प्रतिभागियों का परिणाम दिनांक** 07.11.2023 **को घोषित किया गया।**

भारत सरकार की 'प्रोत्साहन योजना - 2022-2023 :

वित्त वर्ष 2022-2023 के दौरान 'ख' क्षेत्र स्थित इस आयुक्तालय के सभी 17 प्रधान/मुख्य आयकर आयुक्त/आयकर महानिदेशक(अन्वे.) प्रभारों में सरकारी कामकाज (टिप्पण/आलेखन) मूल रूप से हिंदी में करने वाले पदधारियों को नकद राशि से पुरस्कृत करने संबंधी सभी आवेदनों पर संबंधित मूल्यांकन समिति एवं उनके मुख्य आयकर आयुक्तों की संस्तुति प्राप्त होने के बाद कुल 89 पदधारियों को अंतिम रूप से पुरस्कार हेतु पात्र पाया गया व रू.3,24,000/- की राशि पुरस्कार में दी गई।

इन दोनों कार्यक्रमों के विजेता व पात्र पदधारियों को पुरस्कृत करने के उद्देश्य से तत्कालीन प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, मुंबई श्री संजय कुमार की अध्यक्षता में दिनांक 14.12.2023 को कौटिल्य भवन के 'तक्षशिला सभागार' में सिने जगत के प्रख्यात अभिनेता, गीतकार, संगीतकार, पटकथा लेखक, रंगकर्मी, नाटककार श्री पीयूष मिश्रा की उपस्थिति में 'राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह' का आयोजन किया गया व उत्तर-पुस्तिकाओं के जांचकर्ताओं को मोमेन्टो तथा लाभार्थियों को प्रशस्ति-पत्र का वितरण किया गया। उपस्थित दर्शकों की मांग पर मुख्य अतिथि ने अपना सुप्रसिद्ध 'आरंभ है प्रचंड ...' युद्धगीत सहित अन्य गीत एवं अनुभव शेयर किए। श्री सुशील कुमार पोद्दार, आयकर आयुक्त (लेखा परीक्षा)-2 एवं राजभाषा अधिकारी, मुंबई के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस आयोजन से संबंधित संदेश एवं कुछ प्रतिनिधि स्नैप विभागीय ट्वीटर हैंडल एवं विभागीय वेबसाइट www.incometaxmumbai.gov.in **पर उपलब्ध करवाए गए। हिंदी पखवाड़ा-2023 के सफल प्रतिभागियों व प्रोत्साहन योजना-2022-2023 के लाभार्थियों की सूची निम्नानुसार है।**

हिंदी सप्ताह - 2023
प्रतियोगिता परिणाम

1. **निबंध प्रतियोगिता (हिंदी)**

उत्तर-पुस्तिका जांचकर्ता : श्री शिवेंद्र कु. मिश्रा, आ.उपा.(मुख्या.)-4, मुंबई

क्र.सं.	नाम तथा पदनाम (सर्वश्री/सुश्री)	कार्यालय का नाम	पुरस्कार की श्रेणी	पुरस्कार की राशि (रु)
1.	सुमीत कुमार, कार्यालय अधीक्षक	प्रधान आ.आ. (नि.ई)-12	प्रथम	5000
2.	निकिता टाक, आशुलिपिक	अपर आ.आ. (मु.) (कार्मिक)	द्वितीय	3000
3.	सौरभ सुमन पांडे, वि.का.कर्मचारी	अपर आ.आ.(सत्यापन एकक)-2	तृतीय	2000
4.	हेमंत खंडेलवाल, आयकर निरीक्षक	अपर आ.आ., रेंज-4(1)	विशेष	1000

निबंध प्रतियोगिता (हिंदीतर)

उत्तर-पुस्तिका जांचकर्ता : श्री शिवेंद्र कु. मिश्रा, आ.उपा.(मुख्या.)-4, मुंबई

क्र.सं	नाम तथा पदनाम (सर्वश्री/सुश्री)	कार्यालय का नाम	पुरस्कार की श्रेणी	पुरस्कार की राशि (रु)
1.	धीरज धनाजी झांबरे, कार्या. अधीक्षक	संयु. आ.आ. (मु.)(समन्वय)	प्रथम	5000
2.	प्रशांत कवडे, वरि.कर सहायक	अपर आ.आ., रेंज- 6(1)	द्वितीय	3000
3.	छाया सोनकुसले, प्रशा.अधिकारी	आयकर आयुक्त (न्यायिक)	तृतीय	2000
4.	तेजश्री धाडीगांवकर, कर सहायक	प्रधान आ.आ. (कें)-2	विशेष	1000

2. **टिप्पण व आलेखण प्रतियोगिता (हिंदी)**

उत्तर-पुस्तिका जांचकर्ता : श्री सत्यम ठाकुर, आ.उपा.(मु.)(परियोजना व क.दा.से), मुंबई

क्र.सं.	नाम तथा पदनाम (सर्वश्री/सुश्री)	कार्यालय का नाम	पुरस्कार की श्रेणी	पुरस्कार की राशि (रु)
1.	विजय कुमार डवास, वरि.कर सहा.	आयकर आयुक्त (टी पी)-3	प्रथम	5000
2.	निकिता टाक, आशुलिपिक	अपर आ.आ (मु.)(कार्मिक)	द्वितीय	3000
3.	विवेक कुमार सिंघल, आयकर निरीक्षक	अपर आ.निदे.(अन्वे) यूनीट-2	तृतीय	2000
4.	निखिल कुमार साहू, कार्या.अधी.	संयु. आ.आ (तक. ई.)-1(2)	विशेष	1000

टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता (हिंदीतर)

उत्तर-पुस्तिका जांचकर्ता : श्री सत्यम ठाकुर, आ.उपा.(मु.)(परियोजना व क.दा.से), मुंबई

क्र.सं.	नाम तथा पदनाम (सर्वश्री/सुश्री)	कार्यालय का नाम	पुरस्कार की श्रेणी	पुरस्कार की राशि (रु)
1.	प्रशांत ज्ञा. शितोले, आ. निरीक्षक	आयकर आयुक्त (टी पी)-2	प्रथम	5000
2.	सोपान जाधव, कार्या. अधीक्षक	आयकर निदेशक (सतर्कता)	द्वितीय	3000
3.	संगीता मो. नलावड़े, निरीक्षक	अपर आ.आ. (मु.)(कार्मिक)	तृतीय	2000
4.	संतोष गोविंद आंब्रे, कर सहायक	मुख्य आ.आ.-2, मुंबई	विशेष	1000

3. राजभाषा प्रश्नोतरी प्रतियोगिता

उत्तर-पुस्तिका जांचकर्ता : श्री उमेश कुमार शर्मा, सहायक निदेशक (रा.भा.)(सेवानिवृत्त), मुंबई

क्र.सं.	नाम तथा पदनाम (सर्वश्री/सुश्री)	कार्यालय का नाम	पुरस्कार की श्रेणी	पुरस्कार की राशि (रू)
1.	धीरज धनाजी झामरे, कार्या.अधी.	संयुक्त आ.आ. (समन्वय)	प्रथम	5000
2.	रंजन कुमार, वरि.कर सहा.	अपर आ.आ (अं.करा.)-3(3)	द्वितीय	3000
3.	नागेश कुमार, वरि.कर सहा.	मुख्य आयकर आयुक्त- 10	तृतीय-1	1000
4.	आयुष कुमार, आय.निरीक्षक	अपर आ.आ.(मु.)(कार्मिक)	तृतीय-2	1000
5.	सुमीत कुमार, कार्या.अधीक्षक	अपर आ.आ.(नि.ई.)-12(2)	विशेष	1000

4. अनुवाद प्रतियोगिता

उत्तर-पुस्तिका जाँचकर्ता : श्री आशुतोष कुमार सिंह, आ.उपायुक्त (मु.)(कें.)-1, मुंबई

क्र.सं.	नाम तथा पदनाम (सर्वश्री/सुश्री)	कार्यालय का नाम	पुरस्कार की श्रेणी	पुरस्कार की राशि (रू)
1.	संदीप पांडे, आयकर निरीक्षक	मुख्य आ.आ.(केंद्रीय)-1	प्रथम	5000
2.	अनुज झा, आयकर निरीक्षक	प्रधान आ.आ. (केंद्रीय)-4	द्वितीय	3000
3.	शाहनवाज़ आलम, कार्या.अधी.	अपर आयकर आयुक्त, रेंज-3(2)	तृतीय	2000
4.	धीरेंद्र जांगीड, आय.अधिकारी	प्रधान आ.आ.-17, मुंबई	विशेष	1000

5. श्रुत-लेखन प्रतियोगिता (हिंदी)

उत्तर-पुस्तिका जांचकर्ता : श्री उमेश कुमार शर्मा, सहायक निदेशक (रा.भा.)(सेवानिवृत्त), मुंबई

क्र.सं.	नाम तथा पदनाम (सर्वश्री/सुश्री)	कार्यालय का नाम	पुरस्कार की श्रेणी	पुरस्कार की राशि (रू)
1.	वैशाली चौरसिया, आशुलिपिक	अपर आ.आ. (मु.)(कार्मिक)	प्रथम	5000
2.	अनुज, कार्यालय अधीक्षक	प्र.आ.आ. (नि.ई)-5	द्वितीय	3000
3.	रवि दुबे, कार्यालय अधीक्षक	डीडीओ, आ.उपा.(प्रशा.)	तृतीय	2000
4.	सिद्धार्थ शुक्ला, वरि.कर सहा.	प्रधान आ.आ.-4	विशेष	1000

श्रुत-लेखन प्रतियोगिता (हिंदीतर)

उत्तर-पुस्तिका जांचकर्ता : श्री उमेश कुमार शर्मा, सहायक निदेशक (रा.भा.)(सेवानिवृत्त), मुंबई

क्र.सं.	नाम तथा पदनाम (सर्वश्री/सुश्री)	कार्यालय का नाम	पुरस्कार की श्रेणी	पुरस्कार की राशि (रू)
1.	गुरुसेवक सिंह, आशुलिपिक	मुख्य आ.आ.-1	प्रथम	5000
2.	चित्रा अय्यर, आ. निरीक्षक	अपर आ.आ.(मु.)(कार्मिक)	द्वितीय	3000
3.	प्रमोदा नटराजन, आ.अधिकारी	आ.आ. (लेखा परीक्षा)- 2(7)	तृतीय	2000
4.	योगेश म.पाटोले, कर सहायक	मुख्य आ.आ.- 3	विशेष	1000

6. संकेत बिंदुओं के आधार पर कहानी लेखन प्रतियोगिता

उत्तर-पुस्तिका जाँचकर्ता : सुश्री नमिता पटेल, आ. उपा.(मुख्या.)-1, मुंबई

क्र.सं.	नाम तथा पदनाम (सर्वश्री/सुश्री)	कार्यालय का नाम	पुरस्कार की श्रेणी	पुरस्कार की राशि (रू)
1.	सचिन मौर्य, आयकर निरीक्षक	प्रधान आ.निदेशक (अन्वे.)	प्रथम	5000
2.	रवि दुबे, कार्यालय अधीक्षक	डीडीओ, आ.उपा. (प्रशा.)	द्वितीय	3000
3.	हेमंत खंडेलवाल, आ.निरीक्षक	अपर आ.आ., रेंज-4(1)	तृतीय	2000
4.	प्रशांत रावत, आशुलिपिक	संयुक्त आ.आ.(लेखा परीक्षा)-1	विशेष	1000

7. कविता पाठ प्रतियोगिता

निर्णायक : 1. श्री सौरभ कु. राय, अपर आ.आ., 2. सुश्री कविता कौशिक, अपर आ.आ., 3. सुश्री भूमिका पटेल, अपर आ.आ., मुंबई

क्र.सं.	नाम तथा पदनाम (सर्वश्री/सुश्री)	कार्यालय का नाम	पुरस्कार की श्रेणी	पुरस्कार की राशि (रू)
1.	आयुष कुमार, आयकर निरीक्षक	अपर आ.आ.(मु.)(कार्मिक)	प्रथम	5000
2.	किशोर शुक्ला, वरि.कर सहा.	एम.एस.टी.यू	द्‌वितीय	3000
3.	सत्यम ठाकुर, आ.उपा.(मु) (परि.व क.दा.से)	प्रधान मु.आ.आ., मुंबई	तृतीय	2000
4.	रेशमा जोशी, आ.अधि.(सतर्कता)	प्रधान मु.आ.आ., मुंबई	विशेष	1000

राजभाषा प्रोत्साहन योजना-2022-2023

पुरस्कार वितरण वर्ष-2023

क्र. सं.	नाम तथा पदनाम (सर्वश्री/सुश्री)	कार्यालय	शब्दों की संख्या	पुरस्कार की श्रेणी एवं राशि
	1. प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, मुंबई प्रभार			
1.	मित्रजीत एव. कांबले, प्रशा. अधिकारी	आ.आयुक्त (ले.प.)-2	10,74,406	प्रथम- रू.5,000/-
2.	विनायक अ.बोरहाडे, प्रशा. अधि.	आ.आयुक्त (ले.प.)-1	5,75,408	प्रथम- रू.5,000/-
3	लीना ना. काले, प्रशा. अधिकारी	अप.आ.आ.(मु.)(प्रशा.)	3,00000	प्रथम- रू.5,000/-
4.	रेनी शेरी मैथ्यू, आयकर निरीक्षक	अप.आ.आ.(मु.)(प्रशा.)	2,00000	प्रथम- रू.5,000/-
5.	सुनील ह.वाडेकर, कार्या. अधीक्षक	संयु.आ.आ.(छूट), रें.-2	1,80,000	प्रथम- रू.5,000/-
6.	दीपक रा. शिवलकर, कार्या. अधीक्षक	अप.महानिदे.(सतर्क.), पश्चिम, कें.प्र.क.बोर्ड	1,71,000	प्रथम- रू.5,000/-
7.	प्रज्ज्वला, आयकर निरीक्षक	आ.उपा.(मु.)(सतर्कता)	75,000	द्‌वितीय- रू.3,000/-
8.	सपना मोहिले, आयकर निरीक्षक	आ.उपा.(मु.)(सतर्कता)	75,000	द्‌वितीय- रू.3,000/-
9.	प्रिया साटम, आयकर निरीक्षक	आ.उपा.(मु.)(सतर्कता)	75,000	द्‌वितीय- रू.3,000/-
10.	सुरेश र. जाधव, कार्यालय अधीक्षक	अप.आ.आ.(मु.) प्रशा.	50,000	द्‌वितीय- रू.3,000/-
11.	विजय शिंदे, कार्यालय अधीक्षक	अप.आ.आ.(मु.) प्रशा.	20,000	द्‌वितीय- रू.3,000/-
12.	ज्ञानेश्वर मणि, आयकर निरीक्षक	अप.आ.आ.(मु.) प्रशा.	20,000	द्‌वितीय- रू.3,000/-
13.	प्रसाद सिरिमल्ला, वरि.कर सहायक	अप.आ.आ.(मु.) प्रशा.	20,000	द्‌वितीय- रू.3,000/-
14.	उमेश र. लूटे, विविध कार्य कर्मचारी	अप.आ.आ.(मु.) प्रशा.	20,000	द्‌वितीय- रू.3,000/-
	2. मुख्य आयकर आयुक्त-1, मुंबई प्रभार			
15.	संतोष मो. शिवलकर, प्रशा. अधि.	मु.आ.आ.(मु.)-1	67,988	प्रथम- रू.5,000/-
16.	मनीष ह. खिमोरिया, कार्या. अधी.	मु.आ.आ.(मु.)-1	40,987	प्रथम- रू.5,000/-
17.	प्राजक्ता चंदरकर, वरिष्ठ कर सहायक	आदा.व संवि.रेंज-1(1)	24,500	द्‌वितीय- रू.3,000/-
	3. मुख्य आयकर आयुक्त-2, मुंबई प्रभार			
18.	छाया सोनकुसले, प्रशा. अधिकारी	आ. आयुक्त (न्या.)	2,52,000	प्रथम- रू.5,000/-
19.	संतोष बा. कदम, वरिष्ठ कर सहायक	अप.आ.आ.रेंज-4(3)	63,089	प्रथम- रू.5,000/-
20.	सुनील र. यादव, कार्यालय अधीक्षक	अप.आ.आ.रेंज-4(3)	59,148	द्‌वितीय- रू.3,000/-
21.	वर्षा गणेश क्षोपकर, प्रशा. अधिकारी	अप.आ.आ.रेंज-4(1)	36,000	द्‌वितीय- रू.3,000/-
22.	अनिल कुमारन, प्रशासनिक अधिकारी	मु.आ.आ.-2 (मु.)	30,610	द्‌वितीय- रू.3,000/-
23.	विशाखा वि. मोरे, कार्यालय अधीक्षक	मु.आ.आ.-2 (मु.)	27,560	तृतीय- रू.2,000/-
24.	दत्ताराम गायकर, कर सहायक	प्र.आ.आ.-3	20,970	तृतीय- रू.2,000/-

4. मुख्य आयकर आयुक्त-3, मुंबई प्रभार				
25.	दिनेश रोहिरा, कार्यालय अधीक्षक	मु.आ.आ.(मुख्या.)-3	1,88,650	प्रथम- रू.5,000/-
26.	निलेश पवार, प्रशासनिक अधिकारी	मु.आ.आ.(मुख्या.)-3	1,83,550	प्रथम- रू.5,000/-
27.	अंकुश ध. मिसाल, कार्यालय अधीक्षक	प्र.आ.आयुक्त (मु)-27	1,20,356	द्वितीय- रू.3,000/-
28.	विलास सालवी, कार्यालय अधीक्षक	प्र.आ.आयुक्त (मु)-27	1,19,737	द्वितीय- रू.3,000/-
29.	नरेश के. म्हात्रे, कार्यालय अधीक्षक	प्र.आ.आयुक्त (मु)-27	1,12,527	द्वितीय- रू.3,000/-
5. मुख्य आयकर आयुक्त-4, मुंबई प्रभार				
30.	विकास मोरे, कार्यालय अधीक्षक	संयु.आ.आ., रेंज-5 (1)	64,046	प्रथम- रू.5,000/-
31.	आलोक सिंह, कार्यालय अधीक्षक	मु.आ.आ.(मुख्या.)-4	36,438	प्रथम- रू.5,000/-
32.	प्रशांत रा.चव्हाण, कार्यालय अधीक्षक	प्र.आ.आ.(मुख्या.)-5	23,980	द्वितीय- रू.3,000/-
6. मुख्य आयकर आयुक्त-5, मुंबई प्रभार				
33.	साक्षी मि. बाबंरकर, प्रशा. अधिकारी	मु.आ.आ.(मुख्या.)-5	75,000	प्रथम- रू.5,000/-
34.	सलिल कृ. अहिरे, आयकर अधिकारी	प्र.आ.आयुक्त-20	45,000	प्रथम- रू.5,000/-
35.	नुतन रा. शेलार, प्रशासनिक अधिकारी	प्र.आयकर आयुक्त-20	40,000	द्वितीय- रू.3,000/-
36.	प्रसाद टी. धुरी, कार्यालय अधीक्षक	प्र.आयकर आयुक्त-20	40,000	द्वितीय- रू.3,000/-
7. मुख्य आयकर आयुक्त-6, मुंबई प्रभार				
37.	प्रवीण व. गोवेकर, प्रशा. अधिकारी	प्र.आ.आ.मु-41	1,20,000	प्रथम- रू.5,000/-
38.	प्रकाश खि. जावड़िया, कार्या. अधीक्षक	मु.आ.आ.(मु)-6	1,00000	प्रथम- रू.5,000/-
39.	जानव्ही उ. मुरव, कार्यालय अधीक्षक	संयु. आ.आ.-41(2)	65,000	द्वितीय- रू.3,000/-
40.	राजेन्द्र गावड़े, कार्यालय अधीक्षक	प्र.आ.आ.(मु.)-17	22,860	द्वितीय- रू.3,000/-
41.	देवेंद्र ल. कुडतरकर, कार्या. अधीक्षक	अप.आ.आ.-17(1)	20,500	द्वितीय- रू.3,000/-
8. मुख्य आयकर आयुक्त-7, मुंबई प्रभार				
42.	संदीप व. पवार, प्रशा. अधिकारी	आ.आ.(अ.) यू. - 15	55,600	प्रथम- रू.5000/-
43.	शिला श. पाटील, वरिष्ठ कर सहायक	मु.आ.आ.(मुख्या.) -7	30,000	प्रथम- रू.5,000/-
44.	अश्विनी अ. खोपकर, कार्या. अधीक्षक	मु.आ.आ.(मुख्या.) -7	28,000	द्वितीय- रू.3,000/-
45.	सुरेंद्र, आयकर निरीक्षक	मु.आ.आ.(मुख्या.) -7	27,000	द्वितीय- रू.3,000/-
9. मुख्य आयकर आयुक्त-8, मुंबई प्रभार				
46.	घनश्याम डी तांबे, कार्यालय अधीक्षक	प्र.आ.आ.(नि.ई)-11	1,08,330	प्रथम- रू.5,000/-
47.	संजय अग्रवाल, प्र.आ.आ.(नि.ई)-12	प्र.आ.आ.(नि.ई)-12	78,452	प्रथम- रू.5,000/-
48.	राहुल, कर सहायक	प्र.आ.आ.(नि.ई)-9	68,000	द्वितीय- रू.3,000/-
49.	कविता मारियाप्पन, प्रशा. अधिकारी	प्र.आ.आ.(नि.ई)-12	66,838	द्वितीय- रू.3,000/-
50.	मुग्धा सं. मोरे, प्रशासनिक अधिकारी	आ.आ.(अ.) यू.-10	66,000	द्वितीय- रू.3,000/-
51.	गौरव जैन, वरिष्ठ कर सहायक	प्र.आ.आ.(नि.ई)-10	41,230	तृतीय- रू.2,000/-
52.	शशिधर पांडे, कार्यालय अधीक्षक	संयु.आ.आ.-11(3)	38,200	तृतीय- रू.2,000/-
53.	बिन्दु सु. कुमार, प्रशा. अधिकारी	प्र.आ.आ.(नि.ई)-10	37,567	तृतीय- रू.2,000/-
54.	संदीप पी. देसाई, प्रशा. अधिकारी	आ.आ.(अ.) यू.-27	28,885	तृतीय- रू.2,000/-
55.	डा. पल्लवी दराडे, आयकर आयुक्त	आ.आ.(अ.) यू.-27	24,286	तृतीय- रू.2,000/-
10. मुख्य आयकर आयुक्त-9, मुंबई प्रभार				
56.	राजकिशोर सिंह, आयकर अधिकारी	प्र.आ.आ.(मु.) (नि.इ.)-15	52,316	प्रथम- रू.5,000/-
57.	संजय कुमार, कार्यालय अधीक्षक	प्र.आ.आ.(मु.)(नि.इ.)-13	50,547	प्रथम- रू.5,000/-
58.	अशोक कुमार यादव, कार्या. अधीक्षक	प्र.आ.आ.(मु.) (नि.इ.)-15	42,804	द्वितीय- रू.3,000/-

59.	अनंत हरी भिड़े, कर सहायक	प्र.आ.आ.(मु.) (नि.इ.)-14	21,300	द्वितीय- रू.3,000/-
11. मुख्य आयकर आयुक्त-10, मुंबई प्रभार				
60.	शुभांगी दि.सोनावणे, प्रशा. अधिकारी	प्र.आ.आ.(स.ई.)-2	1,55,000	प्रथम- रू.5,000/-
61.	गौरव एन. ढ्वण, कार्या. अधीक्षक	प्र.आ.आ.(स.ई.)-2	1,05,000	प्रथम- रू.5,000/-
62.	प्रकाश सं. डोलस, कार्या. अधीक्षक	मु.आ.आयुक्त-10	50,000	द्वितीय- रू.3,000/-
63.	किशन कु.वर्मा, वरि. कर सहायक	मु.आ.आयुक्त-10	50,000	द्वितीय- रू.3,000/-
64.	आनंदा दादू फगरे, कार्यालय अधीक्षक	प्र.आ.आ.(स.ई.)-1	50,000	द्वितीय- रू.3,000/-
65.	अशोक एन. भोर, प्रशा. अधिकारी	आ.आ.(अ.) यू.-41	25,500	तृतीय- रू.2,000/-
66.	संध्या परमेश्वरन, प्रशा. अधिकारी	आ.आ.(अ.)-39	25,000	तृतीय- रू.2,000/-
12. मुख्य आयकर आयुक्त-11, मुंबई प्रभार				
67.	आनंदा का. शेलार, कार्यालय अधीक्षक	मु.आ.आ.-11	55,000	प्रथम- रू.5,000/-
13. मुख्य आयकर आयुक्त (केंद्रीय)-1, मुंबई प्रभार				
68.	भरत चै. कोली, कार्यालय अधीक्षक	प्र.आ.आ.(केंद्रीय)-1,	70,500	प्रथम- रू.5,000/-
69.	ईश्वर आर. पराते, प्रशा. अधिकारी	आ.आ.(अ.)-48	25,000	प्रथम- रू.5,000/-
14. मुख्य आयकर आयुक्त (केंद्रीय)-2, मुंबई प्रभार				
70.	राजेश चोरगे, कार्यालय अधीक्षक	मु.आ.आ.(केंद्रीय)-2	70,351	प्रथम- रू.5,000/-
71.	राहुल भारती, वरिष्ठ कर सहायक	मु.आ.आयुक्त(कें.)-2	61,356	प्रथम- रू.5,000/-
72.	दिनेश सोसा, कर सहायक	मु.आ.आयुक्त(कें.)-2	45,395	द्वितीय- रू.3,000/-
15. मुख्य आयकर आयुक्त (स्त्रोत पर कर कटोती), मुंबई प्रभार				
73.	गजानन एच. कोली, प्रशा. अधिकारी	प्र.आ.आ.(टीडीएस)-1	41,500	प्रथम- रू.5,000/-
74.	तुबिद सेलाय, कार्यालय अधीक्षक	प्र.आ.आ.(टीडीएस)-1	41,000	प्रथम- रू.5,000/-
75.	निखिल तुकाराम राउत, कर सहायक	प्र.आ.आ.(टीडीएस)-1	40,000	द्वितीय- रू.3,000/-
76.	रघुनाथ र. धोपटे, कर सहायक	अप.आ.आ.(टीडीएस)-1(2)	22,300	द्वितीय- रू.3,000/-
77.	स्मिता स्वप्निल रेजीज, कर सहायक	अप.आ.आ.(टीडीएस)-1(3)	20,000	द्वितीय- रू.3,000/-
78.	तुषार सिंह, कर सहायक	प्र.आ.आ.(टीडीएस)-2	20,000	तृतीय- रू.2,000/-
16. मुख्य आयकर आयुक्त (अंतर्राष्ट्रीय कराधान व मूल्य अंतरण)				
79.	सुभाष के. निकम, प्रशा. अधिकारी	मु.आ.आ.(अंत.करा.)	9,76,890	प्रथम- रू.5,000/-
80.	नंदकुमार रा. लाड, कार्यालय अधीक्षक	मु.आ.आ.(अंत.करा.)	1,70,325	प्रथम- रू.5,000/-
81.	मोहित अंतिल, कार्यालय अधीक्षक	आ.आ.(अंत.करा.)-1	1,03,000	द्वितीय- रू.3,000/-
82.	श्रद्धा एस. सावंत, प्रशा. अधिकारी	आ.आ.(अपील)-56	95,000	द्वितीय- रू.3,000/-
83.	संजय द. चोपडेकर, कर सहायक	मु.आ.आ.(अंत.करा.)	70,325	द्वितीय- रू.3,000/-
84.	गणेश पी. पाटिल, वरि. कर सहायक	अप.आ.आ.(मू.अं.)-4(1)	60,000	तृतीय- रू.2,000/-
85.	संतोष शं. आसई, प्रशा. अधिकारी	आ.आ.(अपील)-58	46,056	तृतीय- रू.2,000/-
86.	चंद्रकांत दे. चिखले, कार्या. अधीक्षक	आ.आ.(मू.अं.)-2	42,315	तृतीय- रू.2,000/-
87.	जयप्रकाश लि. सुर्वे, कार्या. अधीक्षक	अप.आ.आ.(मू.अं.)-4(1)	41,274	तृतीय- रू.2,000/-
88.	मुकेश जी इसरानी, प्रशा. अधिकारी	आ.आ.(वि.निरा.मं.)-1	23,823	तृतीय- रू.2,000/-
17. आयकर महानिदेशक (अन्वेषण), मुंबई प्रभार				
89.	जन्मेश कु. मीना, कर सहायक	अप.आ.निदे.(अन्वे.),यू.-5	47,850	प्रथम- रू.5,000/-

आयकर विभाग मुंबई में

राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह 2023

दिनकर ग्रंथालय का उद्घाटन समारोह

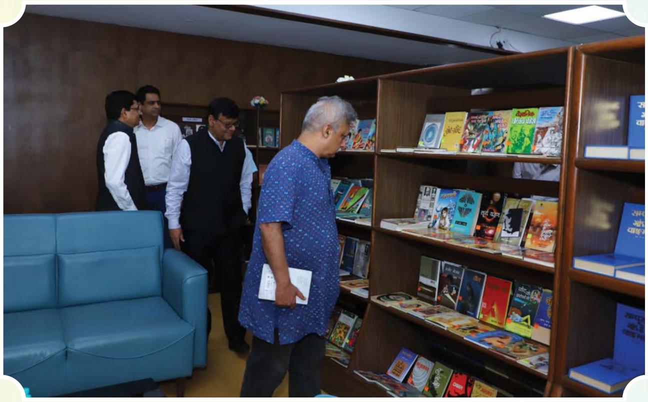

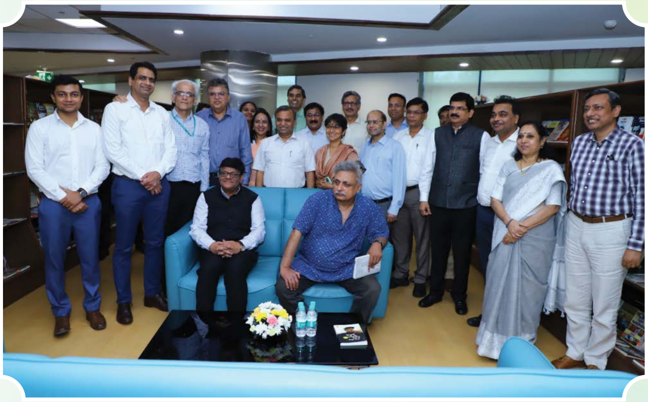

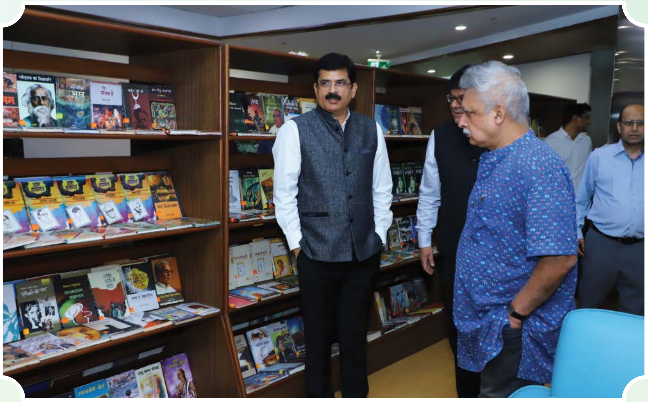

जिंदगी

मुकेश कुमार, कर सहायक

*जिंदगी के दौर ने
क्या हाल बना दिया ।
क्या दर्द बयाँ करू मैं अपना
क्या हाल बना लिया ।।*

*खुद को आईने में देख
मैं खुद से पूछता हूँ ।
क्या महफिल भी तेरे आने से
और दूर जा के क्या हाल बना लिया ।।*

*खुशमिजाज मुस्कुराते चेहरे ले चला था
खुशियों की उमंग की नई सोच थी।
पर घर छोड़ते ही
अपनी मुस्कान उड़ा लिया ।।*

*सोच के चले थे घर से
सपनों को सजाने के लिए
मासुमियत का फायदा उठा लोगों ने
गुलाम बना लिया।*

*अब तो अपने दर्द के आँसू
मैं खुद ही पोंछता हूँ।
ना हिम्मत हो पाती बताने की
घर-परिवार की कितनी याद आती है ।।*

*अंधेरे तो छोड़ो अब
उजालों से भी डर लगता है।
कब जिंदगी वो लौट आ पायेगी
बस यही सोच के जिंदा हूँ।*

*क्या दर्द बयाँ करू मैं अपना
क्या हाल बना लिया..*

निर्मूल्य

अनुज चौबे, आयकर अधिकारी

*वायु की धुन पर उछलता, कूदता, झूमता था,
मर्जी मुताबिक राहों में गति के नए कीर्तिमानों को चूमता था ।*

*जिद है मेरी, रहूँगा अपनी ही मस्ती में,
खबर आई है, रोटी का टुकड़ा पड़ा हुआ है पास वाली बस्ती में ।*

*उस टुकड़े को कौन पाएगा,
दौड़ में अव्वल आने वाला पहले अपनी भूख मिटाएगा ।*

*बिजली की रफ्तार को अपने पैरों में था पाया,
अचानक आँखों के सामने पता नहीं क्यों, अंधेरा था छाया ।*

*कुछ तो था जो मुझसे आकर था टकराया,
चार गुलाटी खाकर मुँह के बल गिरने पर लबालब खून था आया ।*

*रोया, बिलखा, चिल्लाया,
पर मेरी कराहट सुनकर भी मेरी जान बचाने कोई,
जाने क्यूँ नहीं आया।*

*मेरे तड़पते हुए पैरों को बांध कर सड़क किनारे फेंक दिया गया,
इंसान की जान होती तो शायद बचा भी लेते,*

*जानवर की तो निर्मूल्य है जनाब इसलिए सड़क किनारे मरने के
लिए छोड़ दिया गया।*

मेरा बुद्ध हो जाना

अजीत पाल सिंह दैया, *अपर आयकर आयुक्त*

मेरे माँ-बाप ने मेरा नाम सिद्धार्थ रखा
माँ ने नहीं, माँ ने शायद सहमति दी होगी
या शायद माँ की सहमति
या असहमति महत्वपूर्ण थी ही नहीं
मेरे पिता ने ही रखा होगा मेरा नाम

मेरे पिता कोई राजा नहीं थे
पर उनको यह ज़रूर मालूम था
कि बुद्ध बुद्ध होने से पहले सिद्धार्थ थे
इतिहास की स्कूली किताब से जाना होगा
मेरे पिता ने बुद्ध के बचपन का नाम
मेरे पिता ने सोचा था या नहीं
कि मैं सिद्ध करूँगा अपने होने का अर्थ
मुझे नहीं मालूम
पर जब मैंने बुद्ध को जाना
तो तय किया कि मुझे सिद्ध करना होगा अपना अर्थ
मतलब अपने होने का अर्थ

ढाई हज़ार साल पहले के सिद्धार्थ के बुद्ध होने की
कितनी बची है प्रासंगिकता अभी के समय में
यह प्रश्न मुझे कचोटता रहा बार-बार
राजकुमार सिद्धार्थ को जिस तरह मिले थे
दुःख और दुःख के कारण
महानगर के एक छोटे फ़्लैट में रहते हुए
मैंने देखीं दुःख की वे सभी अवस्थाएँ
और लोगों का दुःख,
मुझे लगा यही समय है
अपने अर्थ को सिद्ध करने का

एक रात मैं अपनी सोई हुई पत्नी
और सोए हुए पुत्र को छोड़कर
घर से निकल जाता हूँ
दुःख और दुःख के कारणों को जानने
और दुःख के निवारण के उपाय ढूँढ़ने
सतपुड़ा के घने जंगल में

एक जंगली पेड़ के नीचे बैठ जाता हूँ मैं
इस पेड़ का मैं नाम नहीं जानता था
पर यह पेड़ पीपल और बरगद नहीं था
मैं पद्मासन की मुद्रा में
न जाने कितने काल तक बैठा रहा
आँखें मूँदे हुए
सिद्धार्थ से बुद्ध होने की अभिलाषा में
पर मुझे बुद्धत्व नहीं मिला

एक दिन मैंने अपनी आँखें खोली
एक बाघ मेरे सामने खड़ा था
उसने कहा, 'चले जाओ वापस
जहाँ से आए हो तुम
नहीं तो मैं तुम्हें खा जाऊँगा'
मैं बाघ की धमकी से बिल्कुल नहीं डरा
पर मैं अभी तय नहीं कर पा रहा था
कि मुझे वापस लौट जाना चाहिए
या बाघ की धमकी की परवाह नहीं करते हुए
यहीं तपस्या करते रहना चाहिए
सिद्धार्थ से बुद्ध हो जाने तक

इतने में तांबई वर्ण वाली
एक आदिवासी लड़की ने देखा मुझे
उसने अपने सिर पर धरी
लकड़ियों की गठरी को नीचे फेंक दिया
और एक लम्बी कँटीली लकड़ी लेकर
वह लपकी बाघ की तरफ़
बाघ ने उस लड़की की तरफ़ देखा

बाघ उस लड़की से डरा या नहीं, मैं कह नहीं सकता
पर बाघ चार क़दम पीछे हटा
और पलट कर घने जंगल की तरफ़ चल दिया

वह आदिवासी लड़की मेरे पास आई
और उसने मुझसे कहा,
'तुम अभी भी बुद्ध बनना चाहते हो क्या ?
यदि तुम बुद्ध बनने की ज़िद छोड़ दो
तो मेरे साथ चलो'
मेरे निर्णय की प्रतीक्षा किए बिना
उस लड़की ने अपना हाथ बढ़ाया
मैंने उसका हाथ थामा और खड़ा हो गया

उसके खुरदरे हाथों की ऊष्मा ने
पिघला दी मेरी तृष्णा
'मेरी लकड़ियाँ उठाकर रखो
फिर से मेरे सिर पर
नहीं तो घर पर चूल्हा नहीं जलेगा,' उसने कहा
मैंने ज़मीन से उठाकर
उसके सिर पर रखी
उसकी चुनी हुई लकड़ियों की ढेरी

'चलो, इससे पहले कि अंधेरा हो जाए,' उसने कहा
उसके कहने में एक मनुहार थी
मैं चल दिया उसके पीछे पीछे
जंगली पगडंडी से गुज़रते हुए

जंगल की सीमा के पास
उसका घर था
उसने मुझे बताया कि वह अकेली रहती है
और मैं चाहूँ
तो उसके साथ रह सकता हूँ
कुछ दिनों तक
उस लड़की ने रात में खीर पकाई
उसकी खीर खाकर मैं गहरी नींद में सो गया

सुबह जागने पर मुझे लगा
कि मैं अब बुद्ध हो गया हूँ
मैंने उस लड़की से पूछा
कि तुम मुझे आज भी
खीर बनाकर खिला सकती हो क्या?
उसने कहा कि वह मेरे लिए रोज़ खीर बना सकती है
उसकी खीर में जैसे कोई ज्ञानामृत था
खीर खाने के लोभ में
मैंने तय किया
कि अब मैं उस लड़की के साथ ही रहूँगा

कुछ रोज़ बाद मैंने उस लड़की को कहा
'सुजाता,
कल से मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा
जंगल में लकड़ियाँ काटने'
सुजाता मेरे गले लग गई
और उसने कहा, 'मेरे लकड़हारे !
वादा करो कि तुम कभी
बुद्ध बनने की कोशिश नहीं करोगे'
मैंने अपनी आँखें झुकाकर हामी भर दी !

हिंदी में निहित हमारे संस्कार।
सबको हिंदी में नमस्कार।।

हिंदी सरल-सहज भाषा है।
सफलता की परिभाषा है।।

अग्रसर

आँखों में चमक है खुद को खुद से मिलाने की,
पाया है खुद को, तुम्हे खोकर, ये सबको बताने की,
नादानी, खुदगर्जी या मनमानी, तू जो भी कहे,
तेरा जाना..... तेरी नहीं, शिव की मर्जी थी,
क्योंकि तेरे जाने से, मेरे समय का, मेरे गुरूर का,
मेरी नासमझियों से समझ तक का मेरा हो जाना,
भला शिव के सिवा ये कर भी कौन सकता था,
सहजता की जंजीरों को तोड़ने से ज्ञान का सफर,
तय किया है मैंने खुद के साथ,
कहर हो हजार भले ही,
प्रहार हूँ मैं भी एक,
अपूर्णता तो है,
किन्तु, पूर्णता तो बस शिव से है,
शक्ति हो शिव के श्रृंगार से सुसज्जित,
ये कल्पना मात्र से ब्रह्मांड विचलित है,
अब तो परंपरा है, अग्रसर होने की,
अब कर्तव्य है श्रमिक होने का,
उस प्रकाश की प्राप्ति ही शिव-शक्ति का मिलन है,
इसी में मेरा सर्वस्व निहीत है।

कलम

ख्वाब था, तुमसे मिलने का,
मिल कर कुछ कहने का,
तुम्हे उस मैं से मिलाने का,
जिस मैं का अस्तित्व ही तुम्हारे होने से था,
उस मैं को तुमसे मिलता देखने का,
ख्वाब था,

ख्वाब था,
तुमको अपने अतीत की तस्वीर दिखाने का,
तुम्हे पाने के जो जतन किये,
उनसे बुनी टोकरी में शुकराने के फूल अर्पित करने का,
तुमको न केवल मैं से,
बल्कि मेरी माँ के ख्वाबों के पूरी होने की आस,
उनकी प्रार्थना, उनके मातृत्व के साकार होने की
ऊर्जा से उत्पन्न इत्मिनान से मिलाने का ख्वाब था,

मेरा तुम्हे पा लेने का ख्वाब था।
मेरा कलम को पा लेने का ख्वाब था।

माँ

ममतामयी तू, आनंदमयी मैं,
दानार्थी तू, शरणार्थी मैं,
सूर-ताल तू, अंतरा मैं,
बुनती तू, सँवरती मैं,

निवाला तू, रसमयी मैं,
चरखा तू, सूत मैं,
र्निलोभी तू, सांसारिक मैं,
स्पष्ट तू, अर्थहीन मैं,

जननी तू, तेरा अंश मैं,
मैया तू, तेरा कान्हा मैं,
वास्तविक तू, प्रतिबिंब मैं,

सर्वविद्या, नित्या, ज्ञाना, क्रिया, बुद्धिदा, बहुला तू,
तू लक्ष्मी, तू वैष्णवी, तू भैरवी, तू चामुंडा,
तू महेश्वरी, तू ब्राह्मी, तू सुंदरी, तू क्रूरा,
तू अनेकवर्णा, तू अनंतप्रिया, तू सदगति, तू अनन्ता,
तू सत्ता, तू अहंकारा, तू बुद्धि, तू मनः,
तू ही प्रत्यक्ष, तू ही अप्रत्यक्ष,
तू चिंता, तू चिंतहर्णा,
तू मुस्काती ममतामयी।

विशाखा (श्रमिका), निरीक्षक

महिला दिवस विशेष

मित्रता दिवस विशेष

इन्द्र सोलंकी, अपर आयकर आयुक्त

तू है प्यारी सबसे न्यारी
लेकर चलती सबको साथ
त्याग सरलता की हो मूरत
सदा बढ़ा देती हो अपना हाथ

परिस्थिति कठिन हो या जरूरत हो असामान्य
हर बार तू खरी उतरती, निभाती हो जो सबको मान्य

सास-ससुर हो या जेठानी-देवरानी,
कभी नहीं तूने किसी से ठानी,
साथ सभी को लेकर चलती
गलती से भी गलती नहीं करती.

बेटी-बेटे पर स्नेह लुटाती,
उनको सदा अच्छे पाठ पढ़ाती,
पर जब बच्चे करे शैतानी,
ठीक कर देती उनको बिन परेशानी.

सज धज के हर त्योहार मनाती,
सहेलियों संग तू सदा आती जाती,
संभाल लेती हो परिस्थिति को,
मकान को तू घर बनाती,
बस अपना ख्याल रखना भूल जाती

तेरे बिना मैं था अधूरा,
बनी जीवनसाथी, हुआ मैं पूरा,
बस एक आस है, हर बार मिले मुझे तू,
जीवनपथ पर संग चले तू ।

वाकपटु और सुंदर गायन करता
नृत्य और मिमिक्री बेजोड़
हँसना-हँसाना और गाने गाना
कोई न कर सकता जिसकी होड़

बहुमुखी प्रतिभा हो तुम
मात-पिता के आज्ञाकारी सपूत हो तुम
प्रेम-भाव से भरे दोस्त हो तुम
अपनत्व की एक मिसाल हो तुम

जिस भी क्षण किसी को देखो निराश
तुम करते थे कुछ ख़ास
खुशनुमा कर दे जो माहौल
ऐसे गणेश हो सबके पास।

भारतीय संस्कृति के अनोखे तत्व

प्रशांत कवडे, वरिष्ठ कर सहायक

ॐ असतो मा सद्गमय । ॐ तमसो मा ज्योतिर्गमय ।
ॐ मृत्योर्मा अमृतममय ।।

यही एक संस्कृत का श्लोक हमे इस आसेतू हिमाचल तक फैले हुए भारतीय संस्कृति का मूल तत्त्व बताता है। हमे असत्य से सत्य की ओर जाना है। हमे अंधेरा छोडक़र प्रकाश की ओर हमेशा मार्गस्थ रहना है। सबकी मृत्यु अटल है पर हमको मृत्यु पश्चात भी अपने अच्छे कर्मों से अमृतावस्था पानी है। यही हमारी संस्कृति का सार है। यही मूलतत्व जन-जन को हमेशा याद रहें इसलिए यहाँ हमारे देश में हर त्योहारों में इन विचारों का जाप होते रहता है।

यह भारतीय संस्कृति ज्ञान रुपी सूर्य पर आधारीत है। इस संस्कृति ने हमेशा ज्ञानी ऋषी–मुनीयों की पूजा की है। यह संस्कृति भले ही शतकों से परकीय आक्रमणों के कारण इसने अपने आपको बदला है, पर अपने जड़ो से हमेशा इसका जुड़ाव कभी टूटा नहीं है। इस संस्कृति ने माना है, एक प्रमुख तत्त्व जो है 'एकम सत' । भले ही इस संस्कृति में अनेक विचार– प्रवाह है, जैसे एकांतवाद, द्वैतवाद, अनेकांतवाद या चार्वाक का व्यक्तिविशेषवाद, पर सब रास्ते एक ही मूलतत्व जाते हैं जो है 'ज्ञान'। व्यक्ति को हमेशा ज्ञानप्राप्ति करके अपना जीवन और समाज जीवन को नई ऊँचाई पर ले जाने के लिए कार्यरत रहना चाहिए, यह भारतीय संस्कृति हमे बताती है।

भारतीय संस्कृति 'कमल' पुष्प को बडा ही सांकेतिक महत्त्व देती है। कीचड़ में उगे ये पुष्प जो अपने ऊपर कीचड.की बूंद भी टिकने नहीं देता, यह दृष्टांत हमें सांसारिक दुनिया से मोह त्याग करके आध्यात्मिक या संसार में जो पददलित है उनके कल्याण का आहवान करता है।

इस संस्कृति के रचयेता ज्ञानी ऋषि–मुनियों को पता था, मानव की इस सृष्टी में अवतार या जीवन कुछ सालों के लिए है उसको बाल्यावस्था, युवावस्था, प्रौढावस्था और वृद्धावस्था से गुजरना है। इन अवस्थाओं में वह अपना और अपना सामाजिक दायित्व भी जीवन भर उठाता है। इसी जीवन को अगर सही सूत्र में बाँधे तो उसका खुदका जीवन और समाजजीवन भी अर्थपूर्ण रह जायेगा। वही तत्व चार वेद, वेदांगे और आरण्यके, पुराणों मे बड़े खुलकर बताये हैं। यह ज्ञान उसके व्यक्तीत्व के सारे अंगो को छुआ हुआ है।

भारतीय संस्कृति में सोलह संस्कार बताये हुए हैं जो व्यक्ती के जन्म से शुरू होकर मृत्यु तक हर बदलाव के समय में करने के लिए बोला है। भारतीय संस्कृति में व्यक्ति के चार पुरुषार्थ बताये हैं, वह 'धर्म, अर्थ, काम मोक्ष'। जो व्यक्ति इस पृथ्वी पर जन्म लेता है, उसको यह पुरुषार्थ करने ही पडते हैं पर यह पुरुषार्थ करते वक्त व्यक्ती को जो कर्म करने चाहिए या जिस तरह से करने चाहिए यह हमें इस संस्कृति ने बड़े विस्तार से बताया है। हमेशा कर्म करते वक्त व्यक्ती को 'साधन–शुचिता' का मान रखना चाहिए यह हमें इस संस्कृति ने सिखाया है। महात्मा गांधी जी जो हमेशा अपने आचरण में यह चीज लाते थे। उनका कहना था की मुझे इस संस्कृति ने किसी भी तरीके से हिंसाचार को अस्वीकार करने को कहा है। वह वैचारिक या शारीरिक हो। अगर इन हिंसा के रास्तों से मुझे स्वतंत्र भारत मिल भी जाए पर मुझे वह स्वीकार नहीं है।

भारतीय संस्कृति ने व्यक्ति के जीवन में दुख तो हमेशा रहेगा यह जानते हुए उसको अपने जीवन में रुची हमेशा जागृत रहने के लिए कला – विद्याओं की ओर खींचा है। इन कला और विद्याओं को बड़ा महत्त्व दिया है। भगवान गणेश जी जो कला और विद्याओं के स्वामी हैं उनकी पूजा का बड़ा ही महत्त्व है। इस संस्कृति ने बताया है की "चरेति चरैवति" अर्थात जो चलता है वही चलता रहता है। इसलिए हर व्यकित को अपने जीवन में विविध प्रकार की यात्राए करनी चाहिए जैसे चारधाम यात्रा, नर्मदा पदभ्रमण यात्रा। इन यात्राओं का केवल धार्मिक महत्त्व नहीं है बल्की व्यक्ति

की मानसिक प्रगति भी होती रहती है। यह बात पुराणों में कई सदियों से पहले बताया गया है। इन यात्राओं से व्यक्ति की दृष्टी व्यापक होकर उसमें बदलाव होता है। भारतीय संस्कृति का 'आयुर्वेद' अभिन्न अंग है। इस वेद के ज्ञान प्राप्ति से मतलब उसके आचरण में लाने से व्याधि से हम बच सकते हैं। व्याधि होने के बाद उसका उपचार कैसे करना है यह केवल इसमे नहीं बताया है पर व्याधी ना हो इसलिए हमारा व्यवहार–आचरण कैसा हो यह इसमें बताया है। योगाभ्यास जो इसका महत्त्वपूर्ण अंग है। जिसमें जो अष्टांग योग सिद्धांत बताया है, वह बडा ही आज के दौर में उपयुक्त है।

हमारी भारतीय संस्कृति सारे विश्व का हर समय मार्गदर्शक रही है। इसने हमेशा सत्य की बागडोर संभाली है। यह संस्कृति बुराई पर अच्छाई की विजय की महिमा हमेशा गाती रहती है। आज हमारे देश को हमारी सनातन भारतीय संस्कृति को अपनाना चाहिए। इस संस्कृति के चिरंतन तत्त्वों ने हमें हमेशा से विश्वगुरु भारत बनाया हुआ है। इन अच्छे भारतीय संस्कृति के तत्वों की पुनःस्थापना करने की जिम्मेदारी हम सारे भारतीयों की है। इस संस्कृति ने हमेशा ज्येष्ठ लोगों का और समस्त नारी जाती का आदर करना विश्व को पहली बार बताया है। नारी केवल पत्नी या दासी नहीं होती वह 'काली' भी हो सकती है।

इसलिए अंत में यह कहना कोई गैर नहीं है, कि आज के दौर में 'भारत विश्वविद्याता' बन सकता है, जब वह इस संस्कृति को दृढता पूर्वक सारे जग में इसे फैलाकर, इसकी प्रचिती विश्व को दे तब।

बाबुल

प्रशांत पॉनीकर, निरीक्षक

याद है आया फिर से बाबुल
वो प्यार तेरा मेरे बचपन का,
खेलते हुए बिटिया संग मेरे
देख लड़कपन साजन का ....

चलकर गिरना फिर से सँभलना
आपने ही तो सिखाया था,
कैसे चलता चाँद गगन में
आपने ही तो दिखाया था ....

वो बारिश में भीग के आना
फिर भी उस पर कुछ न कहना
उल्टे कागज की नाव बनाकर
ठहरे पानी में बहाना ....

कैसे भूलूँ मैं आपकी हर बात
सच्चाई का जो पढ़ाया पाठ
जिंदगी फिर वही दोहराती है,
जब बिटीया याद दिलाती है ....

थके हुए जब घर तुम आते
ठंडे पानी का गिलास पाते
बिटिया भी मेरी यही सब करती,
बदले में बाबुल का प्यार है पाती ....

कैसे बताऊँ जबसे तुम बिछडे.
नैन मेरे बस थे तुझे ढूँढे,
बाबुल मेरा मैंने फिर से है पाया,
प्यार वही जब साजन लाया ....

याद है आया फिर से बाबुल
वो प्यार तेरा मेरे बचपन का,
खेलते हुए बिटिया संग मेरे,
देख लड़कपन साजन का ....

क्या लिखूँ?

किशोर शुक्ल, वरिष्ठ कर सहायक

*मैं दर्द लिखूँ या घाव लिखूँ
विच्छेद या लगाव लिखूँ?
रिश्तों में बिखराव लिखूँ,
या माँ के आँचल की छाँव लिखूँ?*

*डूबकर उसकी यादों में
उसकी नयन कटार लिखूँ
या हरे दरख़्तों पर चलते
मैं लोहे का हथियार लिखूँ*

*उसकी पतली काली भौंहों पर
मैं काजल का श्रृंगार लिखूँ
या दिल दहलाते सीमा पर
मैं तोपों का अंगार लिखूँ*

*पग-पग पर बिकने को आतुर
मैं दो-मुहाँ इंसान लिखूँ
या जकड़ रखा जिसने सबको,
वो इंसानी अभिमान लिखूँ*

*मैं प्रथम प्रेम की आह लिखूँ
लोगों से मिलते वाह लिखूँ
मैं लिखूँ हिमालय की दृढ़ता
या गंगा का प्रवाह लिखूँ*

*या कहो मौन ही हो जाऊँ.....अपना जीवन बेकार लिखूँ,
कुकर्मों को सहता जाऊँ.....और खुद पर धिक्कार लिखूँ?*

*मैं लिखूँ कोई आँसू की बूँदें......या चहकता संसार लिखूँ,
या ले सरकंडा हाथों में.........खुद ही को बार-बार लिखूँ?*

*लिखना चाहूँ संस्कार अगर, लोगों की कथा हज़ार लिखूँ,
या झाँककर खुद के भीतर......अपना ही किरदार लिखूँ?*

शाम, कलम और मैं

जसवंत चारण, विविध कार्य कर्मचारी

*मैं चूक जाता हूँ, कभी-कभार,
उगते सूरज को देखने में,
पर मैंने, ढलते सूरज को
हमेशा अलविदा किया है ।*

*पूरा दिन तेरी कैद में,
गुज़ार दिया है, ए 'जिंदगी'
पर शाम होते होते,
मैंने खुद को रिहा किया है ।*

*वक़्त के साथ, बदल जाते हैं
उसूल, आदमी और अहसास
अफ़सोस, ग़र कोई ना बदले,
तो उसने गुनाह किया है ।*

*मौसमों के साथ,
बदल जाता है फूलों का मिजाज़
बुरा वक़्त है,
फिर किसी ने दग़ा किया है ।*

*किसी बात का मतलब,
मुझसे ना पूछ मेरे मेहबूब
मतलब निकाल निकाल कर,
लोगों ने ठगा दिया है ।*

डिजिटल इंडिया – कितना डिजिटल हुए हम !

सुमित कुमार, कार्यालय अधीक्षक

प्रस्तावना – 'डिजिटल इंडिया' भारत सरकार द्वारा शुरू की गयी एक पहल है जिसका उद्देश्य भारत की जनता को आधुनिक तकनीक से जोड़ना है। इस कार्यक्रम की शुरुआत प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने इंदिरा गाँधी इंडोर स्टेडियम, दिल्ली में 1 जुलाई, 2015 को की। यह कार्यक्रम देश के शीर्ष उद्योगपतियों श्री साइरस मिस्त्री (टाटा ग्रुप चैयरमैन), श्री मुकेश अंबानी (रिलायंस इण्ड्रस्टरिज के अध्यक्ष), अजीज प्रेमजी (विप्रो के अध्यक्ष) की उपस्थिति में शुरू किया गया। संकेत साफ था कि भारत को डिजिटलाइज करने के लिए तथा भारत को डिजिटल प्लेटफार्म तैयार करने के लिए सरकार बडा निवेश करने जा रही है।

'डिजिटल भारत' का उद्देश्य सभी छोटे एवं बड़े सरकारी विभागों को देश की जनता से तकनीक (टैक्नोलॉजी) के माध्यम से कुशलतापूर्वक जोड़ना, आम लोगों तक आप्टीकल फाइबर एवं वाई–फाई के जरिये इटरनेट सुविधा को पहुंचाना तथा लोगों को आधुनिक समय की डिजिटल तकनीकों से जोडना है।

<u>कितने डिजिटल हुए हम :–</u>

"डिजिटल इंडिया" कार्यक्रम के अन्तर्गत शुरू हुई विभिन्न योजनाओं जैसे – आधार, ई–गर्वनेंस, ई–साइन, ई–आवास, पीएम–किसान, कॉमन सर्विस सेंटर (CSC), यू पी आई (UPI), आरोग्य सेतू, डिजिटल लॉकर आदि ने आम आदमी के सभी पहलुओं को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। भारत में पिछले 8 सालों में जब से डिजिटल इंडिया कार्यक्रम की शुरुआत हुई है, आम एवं खास सभी लोगों के जीवन में क्राँतिकारी परिवर्तन हुए है। इस कार्यक्रम की विभिन्न योजनाएं एवं उनके लाभ अनेकों हैं।

- आधार आधारित सेवाएँ लागू हुई हैं जिससे सरकार को जनता के सही आँकड़े मिल रहे हैं जिसके जरिये वो अपनी विभिन्न योजनाएं आम लोगों तक अधिक कुशलता के साथ पहुंचाने में सक्षम हुई है।
- ई–गवर्नेंस के जरिये सरकारी सेवाएं इलेक्ट्रानिक रूप मे जनता तक पहुंच रही हैं। कोई भी सरकारी प्रमाणपत्र इंटरनेट के माध्यम से आम लोगो को प्राप्त हो पा रहा है।
- पीएम– किसान योजना के द्वारा सुदूर क्षेत्र के किसानो को प्रत्यक्ष लाभ अंतरण की सुविधा मिल रही है। फसल बीमा राशी, फसल का भुगतान, किसानों को सीधा उनके बैंक खातों में मिल रहा है। इससे पारदर्शिता में बढ़ोतरी हुई है।
- कॉमन सर्विस सेंटर इस कार्यक्रम के अंतर्गत ही स्थापित किये गये हैं जो देश की लगभग 2.5 लाख पंचायतों को विभिन्न सेवाएं प्रदान करते हैं। आम नागरिक को यदि आधार कार्ड बनवाना हो, बिल भुगतान करना हो, पैसे का लेन-देन हो, गैस कनेक्शन, विद्युत कनेक्शन के लिए आवेदन करना हो आदि तो ये सभी कार्य एक ही जगह पर कॉमन सर्विस सेंटर के जरिये कम समय में कुशलतापूर्वक हो सकते हैं।
- यू पी आई (यूनाइटेड पेमेंट इंटरफेस) के जरिये रेहडी पटरीवालों से लेकर बड़े उद्योगपतियों, व्यापारियों ने नगदी लेन-देन की बजाय डिजिटल पेमेंट को महत्व देना शुरू किया है। इसके कारण भारतीय अर्थव्यवस्था में तेजी देखने को मिली है। प्रतिमाह डिजिटल लेन देन 8 हजार करोड.के पार पहुंच गया है। यू पी आई का प्रयोग भारत ही नहीं सिंगापुर, मलेशीया, नेपाल और भूतान जैसे देश में भी होने लगा है।
- कोविड–१९ की महामारी के समय भी डिजिटल इंडिया ने अपनी महत्वपूर्ण योजनाओं जैसे – आरोग्यसेतु, माय–गवर्नमेंट (My Gov) एवं विभिन्न सोशल इंडिया प्लेटफार्म के माध्यम से भरपूर योगदान दिया है। लोग महामारी के समय भी घर से ऑफिस का काम कर पाये हैं, छात्र अपनी कक्षाएँ, लेक्चरस सुन एवं देख पाये हैं। ई–अस्पताल योजना के माध्यम से मरीज टेली–कन्सलटींग कर पाये हैं। आरोग्यसेतु से लोग जान पाये कि उनके लोकेशन के पास कितने मरीज कोरोना पॉजीटीव हैं और उनसे सम्पर्क में आने से कैसे बचा जाए।
- डिजिटल लॉकर योजना के कारण लोग अपने विभिन्न दस्तावेज (जैसे– आधार कार्ड, पैन कार्ड, विभिन्न प्रमाण पत्र) सर्वर पर अपलोड कर उन्हें सुरक्षित रख सकते हैं। इन दस्तावेजों के खोने का डर नहीं रहेगा एवं वो आसानी से प्राप्त किये जा सकते हैं।
- आम नागरिक अब अपने रेलवे टिकट की बुकिंग एवं फ्लाइट टिकट की बुकिंग के लिए कतारों में नहीं लगते बल्कि अपने घर बैठे-बैठे ही ऑनलाइन टिकट बुकिंग कर सकते हैं। आई.आर.सी.टी.सी. को डिजिटलाइज कर अब और भी कुशल बनाया गया है।
- आम नागरिकों को अब बैंक लेन- देन के लिए बैंकों के चक्कर लगाने की जरूरत नहीं है वो अब विभिन्न एप जैसे – गुगल पे, फोन पे एवं बैंकों की विभिन्न ऐप के जरिये घर बैठे-बैठे पैसों का लेन - देन कर सकते हैं।
- डिजिटल इंडिया ने ई–शिक्षा के माध्यम से शिक्षकों के लिए एवं विद्यार्थियों के लिए डिजिटल प्लेटफार्म तैयार किये हैं जिसके जरिये वो सुदूर क्षेत्रों में रह रहे छात्रों को भी घर बैठे शिक्षा प्राप्त कराने में सक्षम हो पाये हैं। अब भारतीय शिक्षक यू. ट्यूब एवं अन्य माध्यमों से छात्रों को शिक्षा दे रहे हैं जिससे छात्रों का बड़े शहरों में आवास के खर्च की बचत हो रही है।
- डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के बलबूते ही प्रतियोगी परिक्षार्थी अब नौकरियों की रिक्ति संबंधी जानकारी एवं उनके लिए आवेदन कुशलतापूर्वक कर पा रहे हैं।
- डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के तहत भारत सरकार ने लगभग 5 लाख गाँवों को आप्टिकल फाइबर एवं फ्री वाई फाई से जोड़ा है। बड़े उद्योगपति मुकेश अंबानी की कम्पनी रिलायंस जिओ ने भारत में बेहतर इंटरनेट की सुविधा प्रदान की है।

अतः हम कह सकते हैं कि पिछले 8 सालों में ई–गवर्नेंस, ई-अस्पताल, ई–स्वास्थ, ई–शिक्षा आदि के माध्यम से डिजिटलाइजेशन ने भारत के लगभग हर क्षेत्र को छुआ है।

डिजिटल इंडिया की चुनौतियाँ :-

डिजिटल भारत के सपने को पूरा करने एवं भारत को ग्लोबल मानकों की श्रेणी में खड़ा करने में हमें कुछ चुनौतियों का सामना भी करना पड़ रहा है।

- अधिकांश लेन-देन ऑनलाइन होने से ऑनलाइन धोखाधड़ी के मामलों में बहुत तेज़ी आयी है। इस चुनौती को सरकार को साइबर सुरक्षा के माध्यम से दूर करने की आवश्यकता है।
- डिजिटल निरक्षरता भी एक बहुत बडी समस्या है। भारत के अभी बहुत बड़ी जनसंख्या को डिजिटलाइजेशन के प्रति जागरूक करने की आवश्यकता है।
- भारत विभिन्न भाषाएं बोलने वाला देश है। ऐसे में सरकार को क्षेत्रीय भाषाओं में विभिन्न ऐप एवं प्लेटफार्म प्राप्त करवाना भी एक चुनौती है। हालांकि भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों ने अपनी वेबसाइट हिन्दी मे भी लॉन्च की है परन्तु देश की बाकी भाषाओं के लिए अभी भी कुछ ठोस कदम नहीं उठाये गये हैं।
- आम नागरिक की निजी जानकारी को सार्वजनिक होने से बचाना भी एक चुनौती है। डिजटलीकरण से निजी जानकारी सार्वजनिक होने का खतरा बना रहता है।
- सरकार को सोशल मिडिया साइट्स पर आने वाली सामग्री को भी नियंत्रित करने की जरूरत है जिसके लिए सरकार प्रयासरत भी है परन्तु उसको और अधिक संवेदनशीलता के साथ नियंत्रित करने की चुनौती है।

उपसंहार:-

डिजिटल इंडिया अपनी पहल में बहुत हद तक कामयाब रहा है। इसने भारत को दुनिया के तकनीकी देशों की सूची में लाकर खड़ा कर दिया है। डिजिटल भारत नवीन पीढ़ी के साथ-साथ भारतीय अर्थव्यवस्था को भी मजबूती प्रदान कर रहा है। डिजिटल भारत इस आधुनिक दुनिया जो तकनीक से परिपूर्ण है। उसमें एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। हालाकि डिजटलीकरण में कुछ खामिया भी हैं परन्तु उनको दूर किया जाये तो भारत कुछ वर्षों में डिजिटलीकरण के दम पर उज्जवल भविष्य की ओर बढ़ेगा और दुनिया की अग्रश्रेणी में जाकर खड़ा हो जायेगा।

हुआ चूरा-चूरा

परवेज़ खान, निरीक्षक

अधूरी ग़ज़ल है, हूँ मैं अधूरा,
बे-साज़ है, जीवन का तानपूरा।

मिटने लगे हैं, लफ़्ज़ कलम से
नहीं होता, तुझ बिन कोई शेर पूरा।

बेबस बेचारा, वो जो है बेघर,
मन का घरौंदा, हुआ चूरा-चूरा।

कहने को अब भी, है रूह बाकी
मिट तो चुका हूँ, मगर पूरा-पूरा।

तेरा हूँ, तुझ ही में है समाना,
होना है ये जब, हुआ व्यक्त पूरा।

चले थे जहां से, है जाना वहीं,
होगा समय का, जब चक्र पूरा।

बेकल हिया है, उसके दरस को,
महकने लगा है, पी का कस्तूरा।

हिंदी की उपस्थिति

कुमार गौरव, वरिष्ठ कर सहायक

है धरा साक्ष्य और धरोहर भी,
हिंदी के गुणगान को,
क्यों दिए हैं संपूर्णता,
कभी सोचे हो हिंदुस्तान की,
ये भाषा है अलौकिक,
और दिव्य है इनकी गुणवत्ता,
आसान है सबके लिए भी,
और विकट रूप विद्वान को,
है धरा साक्ष्य और धरोहर भी,
हिंदी के गुणगान को,

दे दिए मणि और विशिष्ट विलक्षण,
महादेवी, दिनकर और पंत को,
विभूषित किया इन्होंने भी,
भ्रमण कर गा कर मंच को,
कोई लिखा वीर गाथा,
तो कोई श्रृंगार रस और व्यंग को,

बस उनकी यही थी आशा,
की हिंदी जागरूक हो हर कंठ को,
पर अब जैसे विलीन हो गई,
हिंदी की महत्वकांक्षा अपनाए बैठे हैं पश्चिम को,
और कर रहे खुद की गाथा,
पर ये दिख न रहा हम सबको,
हिंदी की दुर्दशा।

पर अब जागरूक होना है,
अभियान हिन्दी पखवाड़ा को बोना है,
अब उगाना है फिर से हिन्दी को,
और फलित करना है भारत को,

आइए हम सब साथ चलें,
जो छूटा है उनको साथ लिए,
महत्ता को अब बढ़ाना है,
हिंदी को अब जिताना है।

राजभाषा हिन्दी

बीरेन्द्र कुमार त्रिपाठी, विविध कार्य कर्मचारी

जब हिन्दी में मैं करता काम,
कार्यालय हो या घर, धाम ।
सब कुछ हो जाता आसान,
कहीं न लगता पूर्ण विराम ।।

बस थोड़ी सी मेहनत करो,
हिन्दी को अपने दिल में भरो ।।
आज से ही शुरुवात करो,
हिन्दी के प्रति जज़बात भरो ।।

अपनी 'राजभाषा' में जो ताकत है,
अन्य भाषा में कहाँ वो दम है।
करो अब सब काम हिन्दी में,
हटाकर फुल स्टॉप लगा पूर्ण विराम हिंदी में ।।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का भविष्य

धीरज झांबरे, कार्यालय अधीक्षक

एक जमाने में इंसान जैसे दिखने वाली, इंसान जैसे सोचने–वाली और इंसानों की तरह फैसले लेने वाली मशीने इंसानी कल्पना या फिक्शन और सिनेमाओं का हिस्सा हुआ करती थी। पर आज ऐसी मशीने इंसानी सभ्यता का एक अविभाज्य अंग बन गयी हैं। या कहिए की इंसान इनके बिना रहने का सोच भी नहीं सकता। 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' अर्थात 'आर्टिफिशीयल इंटेलिजेंस' का मतलब एक ऐसी बुद्धिमत्ता या बौधिक क्षमता से है जिसे इंसान ने मशीनों, संगणक के माध्यम से कृत्रिम तरीके से बिठाया है। अब इंसान जब अपने इर्द–गिर्द नजर घुमाता है तो उसे ऐसी मशीनों का भंडार नजर आता है।

'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' अर्थात 'आर्टिफिशीयल इंटेलिजेंस' इस संज्ञा का आविष्कार पहली बार 1955 में जॉन मैकार्थी ने किया था। उसके बाद 1970 में जापान ने इस पर जमीनी तौर पर काम करना शुरु किया। संगणक के आविष्कार के बाद यह उपविज्ञान तेजी से आगे बढने लगा । और आज ये इंसान के नीजी या सार्वजनिक जीवन का अटूट अंग माना जाता है। इंसान को प्राचीन काल से मशीनों में काफी रूची रही है, जिससे वह अपने जीवन को अधिक सुखप्रद बना सके। इंसान को लगता था की जो काम भारी मेहनत का और समय लेने वाला है, वह काम मशीनें उसे चंद मिनिटों में और बिना किसी कष्ट के कर के दे। इसी मानवी सुप्त इच्छा से 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' संगणक विज्ञान की 'अति–विकसित' शाखाओं में से एक है। यह विज्ञान 'कोड' और अल्गोरिदम का इस्तेमाल कर 'डेटा प्रोसेसिंग' कर के नई चिजों का आविष्कार करने में माहिर है। दरअसल यह प्रणाली इंसानी मस्तिष्क की भांती सोचने और निर्णय लेने के कार्य को दोहराने का प्रयत्न करती है। "मशीन शिक्षा" पर आधारित यह प्रणाली आज के दौर में 'विश्वव्यापी' स्वरुप में मौजूद है। हर वह चीज जिसे पहले इंसान किया करता था, अब वह चीजें 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' पर आधारित मशीनें कर रही हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने वर्तमान में इंसानी सभ्यता के विकास में भाग लेने वाले हर एक पहलू को छुआ है। इनमें से कुछ के बारे में इस निबंध में छोटी सी समीक्षा करते हैं।

1. चिकित्सा विज्ञानः इंसान और पेड़–पशुओं को होने वाले रोगों का जल्दी इलाज करने में यह सहायता प्रदान कर रही है। चिकित्सा अनुसंधान के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का महत्व आने वाले समय में बढ़ रहा है। स्वास्थ्य और चिकित्सा सेवाओं को बेहतर और सुचारू बनाने का काम मशीनें कर रही हैं।

2. ऊर्जा स्वावलंबनः देश के विकास के लिए ऊर्जा क्षेत्र का बड़ा महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है। देश की बढ़ती आबादी और उद्योगों को नियमित रूप से ऊर्जा की आवश्यकता होती है। इस ऊर्जा के स्त्रोतों का नियमन बेहतर तरीके से करने में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का बहुत बड़ा योगदान रहने वाला है। ऊर्जा स्वावलंबन के माध्यम से देश बड़े तेजी से विकसित हो सकता है।

3. उत्पादन क्षमता में वृद्धीः मशीनों से उत्पादन कार्यो को बड़े ही तेजी से स्वचालन प्रणाली के माध्यम से बढ़ाया जा रहा है। उत्पादित की गई वस्तुएँ देश–विदेशों में बेचकर आर्थिक विकास की दर और मानवी जीवन का रहन–सहन का स्तर भी बढ़ाया जा रहा है। उत्पादन के साथ उत्पादकता बढने से भारत का 5 ट्रिलीयन डालर वाली अर्थव्यवस्था बनने का सपना जल्द ही साकार हो जाएगा।

अंतरीक्ष विज्ञानः भारत ने हाल ही में चंद्रयान – 3 का सफल प्रक्षेपण और चंद्रमा की सतह पर लैंडिंग किया। चंद्रयान–2 में रही प्रतियों में सुधार करके विक्रम लैंडर में मौजूद संगणक को पहले से ही 'कोड्स' के माध्यम से स्वयं शिक्षा प्रणाली द्वारा 'चंद्रयान-3' को लैंड कराया गया।

जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर आधारीत विज्ञान की सबसे बड़ी जीत मानी जा रही है। इस प्रकार भारत चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग करनेवाला दुनिया का पहला देश बन

चुका है। आनेवाले दिनों में अंतरिक्ष विज्ञान में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का महत्व और बढ़ने वाला है।

5. यातायात प्रणाली: जैसे ही इंसान कृत्रिम बुद्धिमत्ता के दायरे को बढ़ाता जा रहा है वैसै ही नई चीजों में मशीनों द्वारा स्वचालन बढ़ रहा है। अमेरिका में मोटर कार में अब ड्राइवर की जगह संगणक जी.पी.एस.प्रणाली और प्रॉक्झिमीटी सेंसर्स का इस्तेमाल करके सुरक्षित रूप से गाड़ी चला रहे हैं। यातायात प्रणाली को नियंत्रित करने वाली सिग्नल प्रणाली को भी मशीनों द्वारा चलाया चा रहा है। यातायात प्रणाली देश के आर्थिक विकास का मूलभूत ढ़ाँचा मानी जाती है।

इसके साथ ही शिक्षा प्रणाली, आर्थिक नियोजन, निवेश सलाह और विनियमन, बैंक एवं बीमा संस्थान प्रोद्योगिकी, जैव-प्रोद्योगिकी, नैनो-प्रोद्योगिकी, व्यापार, सीमा सुरक्षा, कृषि एवं मौसम विज्ञान, जी.पी.एस. दूरदर्शन और ऐसे अनगिनत क्षेत्रों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का परचम लहरा रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता याने 'ए.आइ' के माध्यम से विकासशील भारत को विकसित भारत बनाने की पहल की जा चुकी है। डिजीटल इंडिया, मेक इन इंडिया, आत्मनिर्भर भारत, स्टार्ट अप इंडिया जैसी योजनाएं भारत का पूरा रूप ही बदल रही हैं। गाँव और देहात में भी 'ए.आई.' के फैलाव से लोगों का जीवन सुखद हो गया है। शहरीकरण, औद्योगीकरण और यांत्रिकीकरण से विकास की दर में तेजी आई है। आने वाले समय में 'ए.आई.' स्वंयशिक्षा के माध्यम से खुद को और बेहतर और निर्णयक्षम बनाके इंसानी मस्तिष्क जैसा व्यवहार करना संभव है।

हालांकि संगणक विज्ञान की इस शाखा ने मौजूदा स्थिति में कई सवाल भी खड़े किये हैं। जैसे 'मशीनों' द्वारा स्वचालित प्रणाली से किए जानेवाले कार्यों के कारण अब इंसानों को नौकरियां मिलना बंद हो जाएंगी। अगर मशीन किसी वजह से इंसान को अपना शत्रु मान ले तो फिर इंसानी सभ्यता पर आपत्ती आ सकती है। मशीनें इंसानों के सारे बुनियादी स्त्रोतों पर कब्जा करके उन्हें परास्त कर देंगी।

इन्ही आशंकाओं के बीच भी 'ए.आई.' पर आधारित मशीनों द्वारा काम लिया जाना बंद नहीं हुआ है। उलटा आने वाले समय में हर एक क्षेत्र में मशीनों का शामिल होना लाजमी है। मशीन लर्निंग के इस प्रयत्न से, विज्ञान से इंसान और भी तरक्की करके मानवता को नया आयाम दे देगा। पृथ्वी के बाहर भी जीवन ढूँढने का प्रयास और तीव्र कर देगा। आपत्तियों के पूर्वानुमान से इंसानों की जानें बचाएगा और अचल संपत्ति की भी सुरक्षा करेगा। नवीनत्तम ड्रोन और हवाई निगरानी से देश को आतंकवादियों से मुक्त करेगा। बढ़ती हुई आबादी को संतुलित आहार देने हेतु कृषी क्षेत्र में नए अनुसंधान करेगा।

इस प्रकार से मानव विकास को संतुलित और तीव्रता से बढ़ाने में 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' एक अहम किरदार निभाएगी।

समाप्त

स्लोगन

कार्यालय में बैठक, कार्यशाला का आयोजन नियमित है। आयकर के हर पदधारी राजभाषा हिंदी से परिचित हैं।

हिन्दी पर विचार करें, आओ फिर एक बार हिन्दी में संवाद करें।

स्वच्छ भारत, आत्मनिर्भर भारत से देश आज प्रफुल्लित है। देश के निरंतर विकास में हिंदी सम्मिलित है।

स्मिता सु. कातोरे, प्रशासनिक अधिकारी

कविता

सुनीता कुमारी, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

कविता पर कविता
क्या है कविता
अनसुलझी गुत्थी है कविता,
मैं तो मात्र शिल्पकार हूँ,

परिंदों द्वारा बिखराये
बीजों से स्वतः अंकुरित
स्फुटित गीत है कविता,
मैं तो मात्र कथाकार हूँ,

मन के भावों में बिखरे
निर्झरित स्वतः स्फूर्त
आवेग है कविता,
मैं तो मात्र रचनाकार हूँ,

पंच तत्व में बिखरे
स्वतः निर्मित प्रकृति है कविता,
मैं तो मात्र कुंभकार हूँ,

बंद दरवाजों के पीछे
पीड़ित दिलों के
काँपते हाथों के
दशा पढ़ा जाए जिसे
वह पत्र है कविता
अक्षर-अक्षर में ध्वनित
मैं तो मात्र शब्द हूँ ।

नया सफर

रोहित कुमार साहू - विविध कार्य कर्मचारी

निकली हूँ एक नये सफर पर
घरवालों से लड़-झगड़कर
इतनी बड़ी दुनिया में खुद को तलाशने
कुछ पाने की चाह जहाँ लेकर जा रही है
सच कहूँ तो तुम सबकी बहुत याद आ रही है
रोती नहीं हूँ कि कहीं टूट न जाऊँ
लेकिन नम आँखें मुझे
अक्सर घर की ओर रही हैं
इस शहर की आवाजों के बीच
एक अजीब सी खामोशी है
जहाँ मैं अपना
अतीत, वर्तमान और भविष्य
देखने में खो जाती हूँ
मैं सब समझती हूँ..
माँ अब मैं बड़ी हो गई हूँ
तुम्हारी बैचैनी को जानती हूँ माँ
माना अभी छोटी हूँ मैं
और पापा जितनी मजबूत भी नहीं
लेकिन उम्मीदों के भार से मैं झुकूँगी नहीं
चाल भले ही धीमी हो
पर मैं रुकूँगी नहीं
मुझे किसी को कुछ नहीं दिखाना है
बस सिर्फ अपना अस्तित्व ही बचाना है
ताकि मैं रह सकूँ, जग में मुक्त होकर
इतने दिनों में न जाने कितनों ने
क्या-क्या समझाया
मैं बंद मुँह से सिर्फ सुनती गई
जो तुमने बताया
बस इतना कहूँगी कि विश्वास नहीं तोडूंगी
...............................शेष फिर कभी

हिंदीः राजभाषा से विश्व–भाषा की ओर।

निकिता टाक, आशुलिपिक

1. **प्रस्तावना**

मानव को अपनी अभिव्यक्तियों को व्यक्त करने के लिए भाषा की आवश्यकता होती है, बिना भाषा के मानव बिल्कुल गूंगा होता है। भाषा अपनी भावनाओं को व्यक्त करने व दूसरे लोगों से सम्पर्क करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम होती है। यही वह जरिया है जिससे लोग एक–दूसरे से जुड़ पाते हैं अर्थात भाषा, मानव के जीवन का अभिन्न अंग है।

जनतान्त्रिक रूप से देखा जाए तो हिन्दी, संसार की तीसरी भाषा है, जो सबसे अधिक लोगों द्वारा बोली – समझी, पढी–लिखी जाती है। भारत में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है, लेकिन हिन्दी, भारत के अलावा भी विभिन्न महाद्वीपों में बोली–पढी–लिखी व समझी जाने वाली भाषा के रूप में उभर कर सामने आई है।

2. **हिन्दीः विश्व भाषा के रूप में**

किसी भी भाषा का महत्वपूर्ण गुण यह होता है कि वह लोगों के बीच सम्पर्क स्थापित कर सके। वर्तमान समय में संचार के माध्यम से देशों–विदेशों की दूरियाँ एकदम खत्म सी हो गई हैं। आज कोई भी, कहीं भी, किसी भी तरह का सम्पर्क, किसी भी दूर स्थित व्यक्ति, संस्थान आदि से आसानी से जुड़ सकता है।

विश्वभाषा के कुछ महत्वपूर्ण गुण होते हैं, जिनमें से प्रथम गुण यह है कि यह भाषा एक से अधिक देशों, महाद्वीपों में प्रचलित हो और वहाँ के लोगों के द्वारा इस भाषा का उपयोग अपने कार्यों के निष्पादन हेतु किया जाना चाहिए।

हिन्दी भाषा लगभग 132 देशों में बोली–समझी, पढ़ी–लिखी जाती है। भारत से निकलकर जो लोग इन 132 देशों में जाकर बस गए हैं, उनकी संख्या 2 करोड़ से भी अधिक है। इन लोगों के माध्यम से यह भाषा अन्य देशों में पहुँच गई है। इससे अन्य देशों में हिंदी भाषा का प्रचार–प्रसार हुआ है। यह भाषा मुख्यतः मलेशिया, सिंगापुर, थाइलैंड, कनाडा, इंगलैंड, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका व अन्य कई देशों में एक सशक्त भाषा के रूप में उभर के सामने आई है।

इस भाषा का उपयोग – व्यावसायिक कार्यो, आधिकारिक कार्यों, व्यापारिक सम्बन्धों,जनता से सम्पर्क, साहित्यिक कार्यो, संशोधन, वैज्ञानिक कार्यांमें किया जाता है, जिस प्रकार एक विश्वभाषा का उपयोग होता है।

एशियाई संस्कृति में हिन्दी का महत्वपूर्ण स्थान है। एशिया की अन्य भाषाओं के स्थान पर हिन्दी एशियाई संस्कृति का अधिक प्रतिनिधित्व करती है।

विश्वभाषा का दूसरा गुण है – इसका भौगोलिक विस्तार।

भौगोलिक विस्तार की दृष्टि से देखा जाए तो हिन्दी, संसार में तीसरे स्थान पर आने वाली भाषा है। विभिन्न देशों में व्यावसायिक, प्रशासनिक, व्यापारिक कार्यों में हिन्दी का उपयोग अधिक किया जाता है। वैश्वीकरण के दौर में जहाँ सम्पूर्ण विश्व को एक गाँव की तरह स्थापित कर दिया गया है उसमें महत्वपूर्ण हिस्सा भाषा का भी है। बाजारवाद व वैश्वीकरण के व्यापारिक कार्यों में प्रगति हुई है। अपने व्यापारिक कार्यो को बढ़ावा देने के लिए विज्ञापनों की भाषा हेतु अधिकाधिक हिन्दी का उपयोग करते हैं।

विश्वभाषा का तीसरा गुण है - इसका लचीलापन।

हिन्दी भाषा ने अवधि, ब्रज, भोजपुरी, राजस्थानी, पहाडी भाषाओं के शब्दकोष, मुहावरों व लोकाक्तियों को खुद में समावेशित कर लिया है। इसीलिए यह भाषा ज्यादातर लोगों के समझने हेतु एकदम सुगम होती जा रही है। किसी भी महाद्वीपीय, प्रांतीय भाग में, हिन्दी भाषा के प्रति उदासीनता खत्म होती जा रही है।

उक्त गुणों का समावेश हिन्दी में होने के कारण यह कहा जा सकता है कि हिन्दी को राजभाषा के साथ – साथ विश्वभाषा का दर्जा भी मिलना चाहिए।

3. **संयुक्त राष्ट्र संघ और हिन्दी भाषा :-**

संयुक्त राष्ट्र संघ की संवैधानिक नियम प्रक्रिया के 51 से 57 तक के भाग में विश्वभाषा के बारे में जानकारी दी गई

है। संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रथम विश्व-सम्मेलन अधिवेशन में पाँच भाषाओं को विश्व–भाषाओं का दर्जा प्रदान किया गया था – जिनमें अग्रेजी, फ्रेंच, रूसी, चीनी वा स्पेनिश भाषाएँ शामिल थीं। उसके थोड़े समय के पश्चात् 'अरबी भाषा' को भी विश्व भाषा का दर्जा दिया गया था।

10 जनवरी सन् 1977 में व उसके पश्चात् 2002 में श्री अटल बिहारी वाजपेयी के द्वारा विश्व-हिन्दी सम्मेलन में हिंदी को विश्व-भाषा बनाए जाने की बात उठाई गई। इसके पश्चात 2018 में लोकसभा में विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज से जब इसके बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि हिन्दी को विश्व – भाषा बनाने के लिए बहुत प्रयास करने होंगे और अगर इसे विश्व–भाषा का दर्जा प्राप्त हो जाता है तो इसे लागू करने के लिए खर्च भी भारत सरकार को ही वहन करना होगा, जो कि अरबों रूपयों का होगा।

4. **<u>हिन्दी को विश्व–भाषा बनने की राह में समस्याएं-</u>**

हिन्दी किसी एक देश की राजभाषा तो है लेकिन इसे विश्व–भाषा का दर्जा नहीं मिल पा रहा है।

सन् 2018 में श्रीमती सुषमा स्वराज ने कहा था कि हिन्दी को विश्व–भाषा बनाने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ के 573 देशों में से दो–तिहाई देशों अर्थात 129 देशों के बहुमत की आवश्यकता है।

हिन्दी को आधिकारिक भाषा तो बना दिया गया है, लेकिन सरकारी कामकाजों में हिन्दी का उपयोग बहुत कम किया जाता है। इसका प्रमुख कारण है हिन्दी भाषा का या देवनागरी लिपि का मानकीकरण सही तरीके से न किया जाना। कुछ प्रांतीय न्यायालयों को छोड़ दिया जाए तो अन्य न्यायालयों में हिन्दी का उपयोग ना के बराबर होता है, जैसे– सुप्रीम कोर्ट। सुप्रीम कोर्ट की आधिकारिक भाषा के तौर पर संवैधानिक भाषा अर्थात् अंग्रेज़ी का ही उपयोग किया जाता है।

इसके लिए आवश्यक है कि हिन्दी भाषा के स्पष्ट मानक तैयार किए जाएं। प्राशासनिक कार्य हेतु हिन्दी के मानक मसौदे इतने कठिन व अजीबो–गरीब बनाए जाते हैं कि वे समझ में नहीं आते हैं या समझाए भी नहीं जा सकते हैं।

आधुनिक जगत में व्यापार को बढ़ावा देने के लिए अनेकों कम्पनियां विज्ञापनों का सहारा लेती हैं, प्रचार - प्रसार करती हैं, लेकिन उन विज्ञापनों की पृष्ठभूमि अंग्रेजी में ही तैयार की जाती है और उसके पश्चात् सभी लोगों तक अपने व्यापार को पहुँचाने के लिए इन विज्ञापनों को टूटी–फूटी या अजीबों–गरीब हिन्दी में अनुवाद कर लोगों तक पहुंचा दिया जाता है।

5. **<u>हिन्दी को विश्व – भाषा बनाने हेतु सुझाव-</u>**

हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने के लिए प्रतिवर्ष 10 जनवरी को अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी दिवस मनाया जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर 'हिन्दी एवं संस्कृत' प्रभाग की स्थापना की गई है ताकि लोगों में हिन्दी भाषा के प्रति रुचि उत्पन्न की जाए।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर यह प्रयास किए जाने चाहिए कि हिन्दी भाषा को व्यावसायिक व तकनीकी स्तर पर अधिक–से–अधिक उपयोग में लाया जाना चाहिए। हिन्दी से सम्बन्धित पाठ्यक्रमों, पुस्तकों को सरल व सुगम बनाया जाना चाहिए ताकि हिन्दी को विद्यार्थी अच्छी तरह से पढ़ सकें व समझ सकें। हिन्दी हेतु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर 'प्रशिक्षण व शिक्षण संस्थानों' की स्थापना की गई है। इन संस्थानों की ओर अग्रसर होने के लिए लोगों को प्रेरित किया जाना चाहिए।

हिन्दी को व्यावसायिक तकनीकी व अनुसंधान से संबंधित कार्यों में उपयोग किया जाए तो लोगों के अन्दर जो यह भाव है कि हिन्दी माध्यम के द्वारा जिन्दगी में सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती, वह पूर्णतः समाप्त हो जाए और निरर्थक साबित हो।

6. **<u>उपसंहार</u>**

आज के समय में सभी माता–पिता अपने बच्चों को अच्छे विद्यालयों में भेजने का प्रयास करते हैं, लेकिन इन विद्यालयों में हिन्दी भाषा पर ध्यान न देकर, अंग्रेजी भाषा पर अत्यधिक ध्यान दिया जाता है और हिन्दी भाषा की पुर्णतः उपेक्षा कर दी जाती है।

इसी के साथ अधिकांश लोगों की अवधारणा यह बन चुकी है कि अगर कोई व्यक्ति हिन्दी भाषा का उपयोग करता है तो वह कभी भी जीवन में बुलन्दियों को नहीं छू सकता, जो कि पूरी तरह से गलत है। लोगों के मन में यह जागृती लाना आवश्यक है कि हिन्दी भाषा वह माध्यम है जो सभी में सम्पर्क स्थापित करने में अहम भूमिका निभाता है।

इसीलिए आवश्यक है कि व्यावसायिक, व्यापारिक, तकनीकी, आधिकारिक, अनुसंधान संबंधी सभी स्तरों पर हिन्दी को महत्व दिया जाए ताकि हिन्दी भाषा का प्रचार–प्रसार बढ़े और हिन्दी भाषा, विश्व–भाषा बनने के पथ पर अग्रसर हो।

माझी डायरी

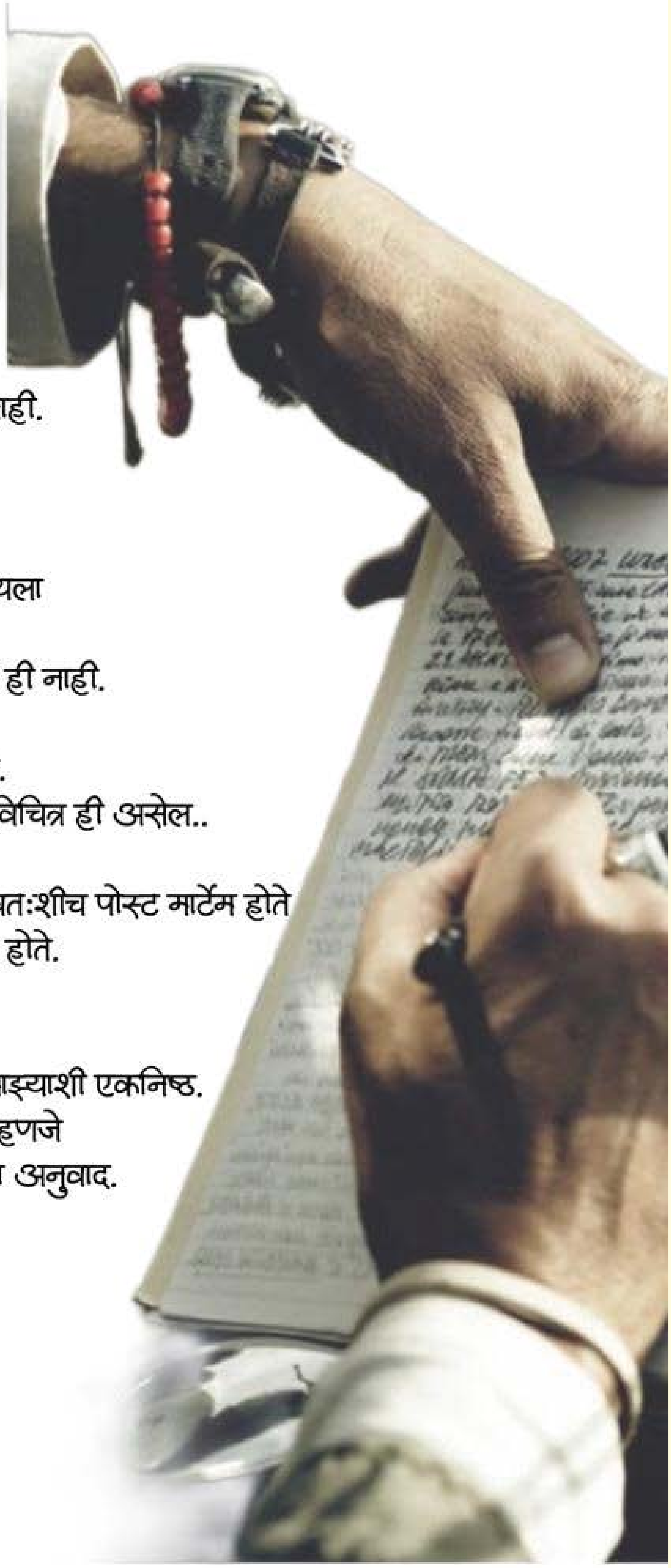

माझी डायरी
मनातलं माझ्या सगळंच बोलते असे नाही.
पण माझ्या विचारांना
वाट मोकळी करून देते हे नक्की.

कधी काय घडलं तारखेनुसार हे सांगायला
ती बखर नव्हे.
त्यामुळे दररोज लिहिलंच पाहिजे असं ही नाही.
जे ज्या क्षणाला वाटेल
ते त्या क्षणाला व्यक्त होतं आलं पाहिजे.
मग ते कदाचित चुकीचं असेल किंवा विचित्र ही असेल..
पण सत्य असेल.
काही वेळाने लिहिलं की मग त्याचं स्वतःशीच पोस्ट मार्टेम होते
आणि मग त्या विचारांचं गाळलेले दूध होते.
त्यातली मलई निघून जाते.

माझी डायरी माझीच असायला हवी. माझ्याशी एकनिष्ठ.
इतरांच्या विचाराने लिहिलेली डायरी म्हणजे
स्वतःच्याच विचारांचा दुसऱ्याने केलेला अनुवाद.

माझी डायरी...
माझ्या आयुष्यासारखीच असते.
कधी कधीच ती मी असते.

मनीष कासोदेकर
आयकर उपायुक्त

मनीष कासोदेकर
आयकर उपायुक्त

सरकारी फाईल्स

सरकारी फाईल्स...मला इंद्रधनुष्यासारख्याच वाटतात.
ते पिवळे, निळे फोल्डर्स.. डाव्या बाजूला हिरवा कागद..
उजवीकडे पांढऱ्या कागदांची गर्दी..
या सगळ्यांना एकसंध ठेवणारे रंगबिरंगी धागे
अन् त्यावर लाल फित.

सरकारी फाईल्स मधले कागद दररोज माझ्याशी बोलतात..
काही स्वत:ची बाजू मांडतात तर काही गुपिते दडवतात.
प्रत्येक फाईल ची आपली स्वतंत्र कहाणी.
प्रत्येकीचे आपले प्रश्न आणि....
त्या प्रश्नांची सापडूनही न सापडलेली उत्तरे..

या फायलींची लवचिकता मात्र वाखाणण्यासारखी....
हवे तसे वळण्याचा,
परिस्थितीशी जुळवून घेण्याचा गुण घेऊनच
जन्माला आलेल्या असतात.

पांढऱ्या कागदावर काळी अक्षरे छापून काळ्याचे पांढरे
करण्याची यांची क्षमता प्रचंड.
त्यांच्याशी वाद घालता घालता माझीच दमछाक होते.

लोक म्हणतात आता की सरकारी कामकाज बदललंय.
पण वाटतं नाही तसं...
तेच प्रश्न, उत्तरे ही तशीच...तोच पगार..

हा..सरकारी कागद तेव्हढा आता डिजिटल झालाय!

कॉफी

ज्योती रविंद्र जाधव, आयकर अधिकारी

सकाळी तिने लावलेल्या मोबाईलच्या गजराने त्याला जाग आली. त्याने कालच ठरवलं होतं, उद्या ऑफिसला दांडी मारायची. तिला मस्त सरप्राईज द्यायचं. दोन - तीन महिने टार्गेटच्या नावाखाली कपंनीने घाण्याला जुंपल होतं. सालं आयुष्यच राहील नाही हल्ली. गहाण पडलं होतं जबाबदारीच्या हातात. कितीही आटापिटा केला तरी हया जबाबदाऱ्या संपायचं नावंच घेत नाहीयेत. मारुतीच्या शेपटीसारख्या वाढतंच चालल्या आहेत.

मला आठवतं लहानपणी आमची परिस्थिती अतिशय गरीब, बाबांची तुटपुंज्या पगाराची नोकरी. महिन्याच्या शेवटी शेवटी हातात पैसाच उरायचा नाही. काही काही वेळा जेवणाची भ्रान्त व्हायची. 'खिशात पैसा नसला तरी कटिंग चहाला काट मारुन वर्तमानपत्र वाचणाऱ्या पिढीतले बाबा' त्यामुळे 'नवाकाळ' पेपर ते घेऊन यायचे. महिन्याच्या शेवटी शेवटी आई ती रद्दी विकत असे. तेवढ्यानं काही भागात नसे मग आई घरात असेल ते गावात गहाण टाकायची पितळेचा हंडा, बादली कळशी असं काहीही. जेवढ्या पैशाची गरज असेल तशी वस्तू गहाण ठेवायची आणि व्याजाने पैसे घ्यायची. वस्तू गहाण पडायच्या पण आयुष्य कधी गहाण टाकायची वेळ आली नाही. आल्या दिवसाची गरज भागली, दिवस संपला की बस. त्यावर अतीव समाधान मानणारी पिढी आयुष्य खऱ्या अर्थाने जगली. त्याच्या मनात येऊन गेलं.

गजराने त्याला जाग आली. जानेवारी महिना थंडीला नुकताच सुरुवात झाली होती. त्याने डोळे किलकिले केले आणि तिच्या अंगावर हात टाकला. झोप गं निवांत आज. मी ऑफिसला जात नाहीए आज. त्याने तिला जवळ घेतलं. तिने हळूच त्याचा हात दूर केला आणि त्याच्या कपाळावर ओठ टेकत ती पुटपुटली 'चिऊची टेस्ट आहे रे आज. लवकर शाळेत सोडायचं आहे तिला.' दोन्ही हातानी मोकळ्या सुटलेल्या केसांचा बुचडा बांधत तिने त्याच्या अंगावरील रजई नीट केली. तिच्या ह्या अंथरुणात बसून दोन्ही हात वर करून बुचडा बांधायच्या लकबीच्या आपण प्रेमात पडलो होतो पण हल्ली ती जवळून कधी उठून जाते माहीतच पडत नाही. ती उठते तेव्हा आपण गाढ झोपेत असतो. ती उठून गेली आणि त्याने मऊ, उबदार रजईत स्वतःला गुरफाटून घेतलं. जाग आली तेव्हा उन्ह वर चढली होती. बेडरूमच्या खिडकीतून आत आली होती. स्वयंपाक घरातून लगबगीचा आवाज येत होता. तो उठला त्याने आज निवांतपणे छान आंघोळ केली. घरात मटार घालून केलेल्या उपम्याचा सुगंध दरवळत होता. उपम्याचा वासानेच त्याची भूक अजून चालवली. तो डायनिंग टेबलवर येऊन बसला. तिने गरमागरम उपमा आणून समोर ठेवला. त्याने उपम्याचा घास घेतला. उपमा अतिशय चविष्ट झाला होता. टेबलावर नेहमी सारखा पडलेला पेपर त्याने हातात घेतला आणि पेपर वाचता वाचता उपमा संपवला. त्याच्यासाठी कॉफी घेवून ती बाहेर आली तिच्या हातात एकच कप बघून तो म्हणाला "हे काय एकच कप ? तू नाही घेणार आहेस का कॉफी ? निदान सोबत बसून कॉफी तरी घे. किती दिवस एकत्र अशी कॉफी घेतलीच नाही आपण." तिच्या डोळ्यात

अजीजी होती. "बाबांचा काढा बनवायचा आहे. काढा घेतल्याशिवाय त्यांना चहा ही घेता येत नाही, शेजारच्या जोशी काकांनी सांगितलेल्या काढ्यानं त्यांना बराच आराम आहे, वाट बघताहेत बाबा" असं बोलून ती परत लगबगीने किचनकडे गेली. बाबांचा नाश्ता झाला. त्याचाही पेपर वाचून झाला होता. थोडावेळ बाबांशी आणि आईशी गप्पा मारल्या. ती मात्र किचनमध्येच होती. आईसाठी वेगळं पथ्याचं जेवण आणि त्यांच्यासाठी अर्थात त्याच्यासाठी त्याच्या आवडीच्या

डाळिंब्याची उसळीचा तिने प्लॅन केला. सोबत तोंडी लावायला भजी असा घाट घातला. सासूबाईंनी वाल सोलून दिले. तो आणि आईबाबा गप्पा मारत असताना मध्येच एक दोनदा ती त्यांच्या संभाषणात डोकावून गेली. तो शाळेत निघाला. चिऊला घरी आणायचं होतं. जेवताना आज खूप गप्पा मारायच्या त्याने मनात ठरवलं. किती दिवस झाले बरं तिच्याशी मनमोकळ्या गप्पा मारून? त्याने आठवायचा प्रयत्न केला. त्याला आठवत ही नव्हतं. आज कसर भरुन काढायची. टार्गेटने मागचे दोन -तीन महिने त्याचे रविवारही गिळंकृत केले होते. तिची मात्र काहीच तक्रार नव्हती.

तो चिऊला घेऊन शाळेतून घरी आला तर त्याच उपनगरात शिक्षिका असलेली ताई शाळेतून परस्पर घरी आली होती. बऱ्याच दिवसांनी बहिणीला बघून त्याला आनंद झाला. तरीही तो थोडासा हिरमुसलाच . गप्पा मारता मारता त्यांची जेवणं आटोपली. ताई आणि ती बोलत बसल्या. चिऊच्या गाण्याच्या क्लासची वेळ झाली. ताई आणि ती एकत्र बाहेर पडल्या. जेवण अंगावर आलं होतं. त्याने ताणून दिली. जाग आली तेव्हा चहाची लगबग चालली होती. तो उठला किचनमध्ये गेला. चहा झाला की तयार हो, जरा बाहेर जाऊन येऊ या. आई क्लासमधून चिऊला आणेपर्यंत आपण परतही येऊ. त्याच्या डोळ्यासमोर त्यादिवशी काचेत मॉडिलने नेसलेली गर्द जाभंळी साडी होती. "आज नको प्लीज, मंदिरात पारायणे चालली आहेत आईना तेथे जायचं आहे. त्यांच्या सगळ्या मैत्रिणी जातात." त्याने चहा घेतला आणि एकटाच घराबाहेर पडला. रस्ता दिसेल तसा चालत सुटला. एकटाच समुद्रावर जाऊन बसला. पाणीपुरी, भेळपुरीच्या स्टॉलवर लोकांची गर्दी झाली होती. पाणीपुरी सुलुचा वीकपॉईंट आहे. उगीचच त्या गर्दीकडे तो बघत राहिला. त्याने आजूबाजूला नजर फिरवली. कितीतरी जोडपी तिथे हितगुज करत बसली होती. हल्ली सुलु आपल्या वाट्याला येतंच नाही. खूप लांब गेल्यासारखी वाटते. तिचं आपल्यावर पूर्वीसारखं प्रेमचं राहिलं नाही. त्याच्या घशात आवंढा दाटून आला.

तो घरी आला. बाबा बाहेर पेन्शनरच्या ग्रुपसोबत बागेत गेले होते. आई मंदिरात गेली होती आणि चिऊ शेजारच्या घरात खेळायला गेली होती. तो येऊन सोफ्यावर शांत बसला . ती जवळ आली आणि ओठाच्या कोपऱ्यातून हसत म्हणाली 'कॉफी घेशील ना रे ?' तिच्या बोलण्यात सहजता होती. तो हो नाही काहीच बोलला नाही. ती कॉफी घेऊन आली. आत्ताही तिच्या हातात सकाळसारखा एकच कप होता. त्याला तिच्याशी बोलावसं वाटलं नाही. तिने कॉफीचा कप पुढे केला व समोर उभी राहिली. त्याने नाईलाजस्तव कॉफीचा कप हातात घेतला. एक घोट घेतला कॉफी अप्रतिम झाली होती. दूध आणि कॉफी एकमेकांत घट्ट विरघळून गेली होती. एक घोट घेऊन त्याने कप खाली ठेवला. तिने त्याचा उष्टावलेला कप उचलला. ओठाला लावत, डोळ्यात पाणी आणून ती म्हणाली "रागवलास?" तिच्या डोळ्यात बघून तो म्हणाला अहं.

त्याचा राग 'उष्टावलेल्या' कॉफीच्या गरम कपात शांत झाला होता.

मुंबईची लोकलराणी

मुंबईची लोकलराणी, आम्हां सा-यांची तू जीवाभावाची सखी
आयुष्याच्या प्रवासातली तू सच्ची पाठराखी

धाडधाड धावतेस पोटामध्ये भरून प्रचंड ओझं
प्रवाशांना इच्छित स्थळी पोहोचवण्याचं थोर ध्येय तुझं

मुंबईकरांची मान ताठ ठेवणारी तू जान आणि शान
वर्षानुवर्षांचे जुळले आपले सुरेल जीवनगान

विद्यार्थी, स्त्रिया, पुरूष, वयस्क सा-यांचीच तुला काळजी
दिवस रात्र अपडाऊन करायला तू नेहमीच राजी

कोट्यवधींचे संसार तरले, फुलले तुझ्याचमुळे
पोटापाण्याच्या तरतूदीला हातभार लागला तुझ्याचमुळे

प्रवाशांच्या सुखदुःखात सहभागी होणारी गोड परी तू
असंख्य मुंबईकरांची गुपितं जपणारी विश्वासू मैत्रिण तू

मध्य रेलवे, पश्चिम रेलवे, हार्बर रेलवे धावते इकडून तिकडे
मुंबई मेट्रो आली तरी मुंबई लोकलराणीचे नाव चोहीकडे

वर्षा गणेश खोपकर
प्रशासनिक अधिकारी

नातीचरामी

ज्योती रविंद्र जाधव, आयकर अधिकारी

आज तिला एका लग्नाला जायचं होतं. तिने रजा घेतली होती. बाहेर आभाळ दाटून आलं होतं. नेहमीच्या वेळेला ती उठली पण शरीर जडावल्यासारखं झालं होतं. वॉकिंगला जायचा विचार बदलून परत तिने बेडवर अंग टाकून झोपायचा प्रयत्न केला पण झोप आली नाही. ती डोळे मिटून झोपेची प्रतीक्षा करत तशीच पडून राहिली. शेवटी कंटाळली आणि तिने अंथरूण सोडलं. उठून ती स्वयंपाकघरात आली आणि नेहमीच्या सरावाने मध आणि लिंबूचा रस टाकून ग्लास भर कोमट पाणी पिऊन बाथरूममध्ये गेली. फ्रेश झाल्यावर हॉल मधल्या बाल्कनीत चहाचा कप घेऊन आली. बाल्कनी तशी खुपशी मोठी नव्हती. एक छोटंसं टीपॉय आणि दोन समोरासमोर खुर्च्या राहतील आणि छोटीशी घरगुती बाग होईल एवढीच बाल्कनी होती. खेडेगावातून आल्यामुळे निसर्गाची ओढ असल्यामुळे बाल्कनीत आवडीची फुलझाडं लावली होती. कुंडीत बटमोगरा फुलला होता. बाल्कनीत त्याचा सुगंध पसरला होता. हातात कॉफीचा मग आणि लोकसत्ता पेपर घेऊन ती बाल्कनीत आली. माहेरी राजकारणाचं वातावरण असल्यामुळे तिला राजकीय घडामोडीत अधिक रस होता. शाळेला निघण्याअगोदर लोकसत्तेतील अग्रलेख आणि राजकीय विश्लेषण वाचल्याशिवाय तिचं पाऊल बाहेर निघत नसे आणि ह्या वेडामुळे कधी कधी तिची नेहमीची ट्रेन मिस होत असे. मग चिडचिड व्हायची पण पेपर वाचण्याचा नाद काही सुटत नव्हता. गिरीशला तिच्या नवऱ्याला मात्र मात्र लोकसत्ता पेपरचं वावडं होतं. म्हणायचा कसले धीर गंभीर विषय आणि बोजड भाषा असते आयला उगीच डोक्याला कसलाच शॉट लावून घ्यायचा नाही. ज्या गोष्टी आपल्या हातात नाही त्या गोष्टीसाठी वेळ का दवडवा असं त्याचं म्हणणं होतं त्यामुळे म. टा. मधील हलकं फुलकं वाचण्यात त्याला जास्त स्वारस्य होतं. तिने टीपॉयवर कॉफीचा मग ठेवला आणि तिच्या लक्षात आले कालचे वाळलेले कपडे अजून तेथेच कोपऱ्यातील दोरीवर होते. तिच्या लक्षात आलं हल्ली आपण पूर्वीसारखं हातासरशी काम संपवत नाही. आपल्या मनासारखीच कामंही रेंगाळत राहतात. पूर्वी घर कसं एकदम टापटीप असायचं. ते तसं राहावं म्हणून मग जीवाचा आटापिटा. विस्कटलेलं घरं तिला अजिबात आवडायचं नाही. विस्कटलेलं घर तिला सावरता आलं पण विस्कटलेला संसार मात्र तिला सावरता आला नाही. गिरीशला तिच्या ह्या टापटीपचं काहीचं घेणंदेणं नव्हतं. अंग पुसलेला त्याचा ओला टॉवेल नेहमी गादीवर लोळण घेत असायचा.तिच्या अंगाचा मग तिळपापड व्हायचा मग त्यावरून अगदी कधीतरी त्यांचे वाद व्हायचे.

घर दोघांचं असतं, दोघांनी सावरायचं एकाने पसरलं की दुसऱ्यांनी आवरायचं. चंगोची ही चारोळी तिच्या तोंडावर फेकत, एकाने पसरलं तर दुसऱ्याने आवरायचं असतं हे जरा मोठ्याने बोलायचा.तशी ती जास्त बोलकी नव्हती त्याच्याशी वाद घालण्यापेक्षा घरं आवरायला कमी वेळ लागेल असं तिला वाटायचं.कुणीही घरी आलं की म्हणावं शिलूचं घर कधीही जा आरश्यासारखं लक्ख असतं. आपला उर भरून यायचा. आता वाटतंय खरंच घर आपलं होतं का? नवीन ट्रेंड प्रमाणे दारावराची नावाची साधी पाटी दोघांच्या नावाची बनवू म्हटलं तर गिरीश म्हणाला होता कशाला? आपण दोघं काही वेगळे आहोत का?साधं बँक अकाउंट एकटीच्या नावाने उघडायला त्याने किरकिर केली होती.त्याने मात्र उघडलं होतं एक वेगळं स्वतःच्या नावाचं पण आपल्याला कधी स्पष्टपणे बोलताच आलं नाही. परिणामाचा विचार नाही करता बोलायचं ठरवलं तर ते बोलणं कधीही सोप्पचं असतं म्हणा. पुस्तकातले धडे नाही का मोठ्याने वाचता येतात. दुसऱ्याचा विचार नाही केला तर काही काही गोष्टी सहज जमून जातात माणसाला.गिरीशचं बोलणंही तसंच.तिला तो बोलण्यात नेहमीच निरुत्तर करत असे. बोलायचं असून बोलता आलं नाही की मनाची घुसमट ही ठरलेली.पण हल्ली कंटाळा आलाय सगळ्या गोष्टीचा. मन कशातच रमत नाही. तिच्या मनात येऊन गेलं. आभाळातील विजेच्या लोळानं झरकन खाली यावं

तसं सगळं मनात येऊन गेलं. लहान असताना खेडेगावातील घरावर वीज पडू नये म्हणून बाबा आपट्याची पानं घरावर ठेवत. आपट्याच्या पानांचा आणि घरावर वीज पडण्याचा संबंध काय हे तिला आयुष्यभर कळलं नाही पण आता घरावर वीज पडणार नाही ही भाबडी आशा असायची. आता सारासार विचार करतो म्हणून जीवनाला कोणत्याही संकटात तरुन जाता येईल असा आशावाद म्हणा की भाबडा विश्वास म्हणा राहिलाच नाही आणि मनात नको नको ते विचार. पूर्वी मन रमण्यासाठी पुस्तकांचा आधार वाटायचा म्हणून घरात भारंभर पुस्तकं जमा केलीत. लहानपणापासून वाचण्याचा तिला अतोनात छंद होता. इतर बायकांसारखं तिला साड्या, दागिने नटणं मुरडणं तिला जमलं नाही. ती पुस्तकात जगत गेली.कुठे पुस्तक प्रदर्शनात गेली की आधाश्यासारखी पुस्तकं गोळा करत असे.पण हल्ली एखादं उचलून वाचावंसं सुद्धा वाटत नाही एवढा उबग आलाय. मन नसलेलं शरीर झालो आहोत का आपण? तिच्या मनात येऊन गेलं. पूर्वी पुस्तक हातात घेतलं की मग ते वाचून संपेपर्यंत जीवाला थारा नसायचा. गिरीश घरात आला आणि ती जर पुस्तक वाचत असेल तर त्याचा संताप होतं असे. बाईच्या जातीनं कसं घरदार सांभाळावं.नोकरीं करणारी बाई असं ही घराला किती वेळ देते? असा फावला वेळा तिने घरकामात सत्कारणी लावावा असं त्याचं स्पष्ट मतं होतं.घरात कामं पडली असताना पुरुषासारखं पायावर पाय टाकून वाचत बसलेलं त्याला अजिबात रुचत नसे.तो घरी आला की तिला वाचताना किंवा निवांत बसलेली बघितली की बोलायचा काही नाही पण बोलायची ती त्याची भेदक नजर.आरपार जाणारी.त्याला दारात बघितलं की मग गडबडीत खुणेचं बुकमार्क ठेवून उठायचं आणि लगबगीने त्याच्या हातातली बॅग घ्यायची. तिच्या हातातलं ओझं... हातातलं कशाला मनावरचं ओझं ही कधी त्याला कमी करता आलं नाही. बॅग घेऊन जाग्यावर ठेवायची आणि अगोदरच भरून ठेवलेला पाण्याचा ग्लास त्याच्या हातात द्यायचा आणि तो फ्रेश होईपर्यंत चहाचं आंधण ठेवायचं झटपट काहीतरी नाश्याला बनवायचं असा शिरस्ता होता. काही काही शिरस्ते... नियम कुठे लिहून ठेवलेले नसतात ते आपले आपण ठरवून घेतलेले असतात. त्याला पाणी द्यायला, चहा द्यायला पुस्तक मिटायचं त्या मिटलेल्या पुस्तकाबरोबर हळू हळू मन कधी मिटून गेलं कळलंच नाही. मिटलेल्या कमळात भुंग्याने जसं अडकून जावं तसंच आपल्या भावनांही मिटत गेल्या. इंटरेस्टिंग कादंबरी असेल तर आपण रात्री सुद्धा वाचत बसायचो. गिरीशची चरफड व्हायची. चिडचिड करायचा तो. त्याला जे हवं ते हवं त्या क्षणी मिळायला हवं असा त्याचा अट्टाहास असायचा. मग पुस्तकाच्या पानांबरोबर भावनाना मुरड घालूनआपण अंथरुणात जायचो मग पुढचा नुसता सोपस्कार व्हायचा. शरीर अंथरुणात आणि मन मात्र कुठेतरी भरकटत जायचं. त्या क्षणी एकरूप होताच यायचं नाही. गिरीशचं प्रेम म्हणजे त्याला हवी असलेली अंथरुणातील सोबत असं वाटायचं. खूप अपमानीत झाल्यासारखं वाटायचं. स्त्रीवर प्रेम करायचं म्हणजे तिच्या शरीरावर प्रेम करायचं असं पुरुषांना वाटतं असावं.आपण म्हणजे मन नसलेला स्त्री देह आहोत ही भावना तिला नेहमीच प्रचंड यातना द्यायची. एखाद्या अतीव दुःखाच्या क्षणी सांत्वनासाठी म्हणून जवळ घेतलं असतानाही परिणीती अंथरुणातच व्हायची. गिरीश झोपून जायचा पण आपल्याला झोपचं यायची नाही. विचारांच्या वादळात मन भरकटत जायचं. गिरीशचं आपल्यावर प्रेम नव्हतं असं नाही पण त्याचं प्रेम मालकी हक्काचं होतं. आपल्या बाबतीत तो खूप पसेसिव्ह होता.आपलं आखीव रेखीव शरीर आणि मादक डोळे, पारदर्शी नितळ गुलाबी ओठ कोणत्याही पुरुषाला आव्हान देण्यासारखं आहे असं त्याला नेहमी वाटायचं. तसं तो बोलूनही दाखवत असे.एखादं सगळ्यात जास्त आवडत खेळणं एखादं बालक हातचं सोडत नाही तसंच काहीसं. त्याचा हा पसेसिव्हपणा आपल्याला माणूस म्हणून जगू देतं नाही असं तिला वाटायचं इतर पुरुषांशी कसं कामापुरता बोलावं. पुरुष कसे असतात तुला माहीत नाही म्हणायचा. तोंडावर गोड बोलतील पाठीमागे माल मस्त आहे असं म्हणतील. चार लोकांत तू कशी त्याच्यावर फीदा आहेस हे सांगत मोठेपणा करतील. तिला गिरीशचा असा स्वभाव आवडत नव्हता पण त्याला विरोध करायचा म्हणजे भांडणाला निमंत्रण देण्यासारखं असायचं.वाद नको म्हणून ती गप्प बसायची. गिरीशला वाटायचं आपण योग्य तेच बोलतो.

सगळेच पुरुष सारखेच नसतात. जगात स्त्री पुरुषांची निव्वळ छान मैत्री असू शकते असा तिचा प्रचंड विश्वास होता. मागे तिच्या खास मैत्रिणीचा नवरा हॉस्पिटलमध्ये वारला. खासगी हॉस्पिटल. बिलही भरमसाठ होतं. प्रेमाविवाह केला होता म्हणून सासरचे आणि माहेरची दोन्ही नाती दुरावली होती. मुलं शेजारी ठेवलेली होती. काय करावं तिला काहीचं सुचेना तिने

तिच्या ऑफिसमधल्या मित्राला अनिलला कॉल केला अगदी तासाभरात अनिल बायकोला घेऊन हॉस्पीटलमध्ये हजर झाला. पुढच्या सगळ्या जबाबदारीचा ताबा त्याने घेतला. लाखभर झालेलं बिल पुढे परत मिळतील की नाही ह्याचा विचार न करता भरून टाकलं. पुढे मेडिक्लेमचे पैसे मिळाल्यावर तिने त्याचे पैसे देऊन टाकले ती वेगळी गोष्ट पण प्रसंगाला मागाचा पुढचा विचार न करता तो तिच्या मागे खंबीरपणे उभा राहिला होता. पण आपल्याला मात्र अशी मैत्री कुणाशी करताच आली नाही तरीही संशयला जागा नको आणि आणि एवढ्या निगुतीने बांधून ठेवलेलं घर संशयाच्या वाऱ्यात डगमगायला नको म्हणून तिने सर्वांशी बोलताना सुद्धा स्वतःभोवती संयमाचं आपण वर्तुळ आखून घेतलं. सहज सहज गप्पा मारता मारता आपल्या मनातून काही तरी वेगळं काढता येईल का असा गिरीशचा प्रयत्न चाले. खरंतर त्याने प्रयत्न करून तिच्या मनातून काढून घेण्यापेक्षा जास्त ती त्याच्याशी मोकळी होतं असे. दिसायला अतिशय सुंदर असलेली शिलू आपल्या पंचेचाळीतही तिशीची वाटतं असे.आपण अजूनही तिशीचे दिसत आहोत ह्याचं तिला स्वतःला मात्र काहीचं वाटतं नसे. गिरीश जवळ असताना पुस्तकं वाचण्यासाठी आसूसलेले आपण तो हल्ली सोबत नसतानाही पुस्तकाला हात लावत नाही आणि पूर्वी सारखी आपल्याला झोपही येत नाही. विचारांच्या भोवऱ्यात तिने भरकन वाळलेले कपडे काढले आणि घरात सोफ्यावर नेऊन टाकले. पावसाच्या पाण्यात कपडे भिजू नये म्हणून काळजी घेता येते पण आठवणींच्या पावसाने भिजणार मन मात्र बाजूला काढून ठेवता येते नाही. तिने उसासा सोडत कॉफी घेतल्यावर निवांतपणे घड्या घालता येतील असा विचार केला. गेला पूर्ण मे महिन्यात उन्हाने कहर केला होता. सूर्यदेव सगळ्यांना पोळून काढत होता. आभाळ दाटल्यामूळे वातावरणात हलकासा गारवा आला होता. कोणत्याही क्षणी पावसाला सुरवात होईल असं वाटतं होतं. घरात काही आणायचं राहिलं नाही ना? तिच्या मनात विचार येऊन गेला. आपल्याला एकटीला असं कितीसं लागतंय?तिच्या चेहऱ्यावर खिन्न हसू आलं माणूस हा सवयीचा गुलाम असतो तिच्या डोक्यात येऊन गेलं.पावसा अगोदर सगळ्या वस्तूंची बेगमी करताना ती आईला बघायची.पावसाळा सुरु व्हायच्या आत आई सगळं सामान सुमान घरात भरून ठेवायची. आईची सवय तिला ही लागली होती. गिरीश आणि पल्लवी तिला नेहमी चिडवत "अग आज काल कुठेही कधीही काहीही बाजारात सहज मिळतं त्यासाठी साठा करून ठेवायची काय गरज आहे? ती मात्र त्यांचं ऐकत नसे.एप्रिल महिन्यात पेपर चेक झाल्यावर शाळेचा निकाल जाहीर झाला की ती निवांत असे आणि मग शाळेला सुट्टी पडली की डोळ्यासमोर येणारा पावसाळा ठेवून हव्या त्या वस्तूंची जमावाजम करून ती बेगमी करत असे मग त्यासाठी घरच्या घरी वेगवेगळी लोणची, पापड, कुरडया अगदी सगळं सांग्रसंगीत बनवत बसे. तिचा तो पसारा बघून गिरीश तिच्यावर वैतागत असे. अग चांगली सुट्टी मिळतेय तर एन्जॉय करायचं सोडून हे काय करत बसतेस? ह्या सगळ्या वस्तू पैसे टाकले की बाजारात मिळतात. काही काही दुकानात तर चांगलं घरगुती बनवलेल मिळतं. आपण इनमीन तीन माणसं. आपल्याला असं कितीक लागतं? मला तर वाटतं हे सगळं नातेवाईकांना वाटायला मिळावं म्हणून तू हे सगळं करतेयस. नातलगाना आयंत करून मिळतं म्हणून ते म्हणतात शिला अग तूझ्या हाताची चव कुणाच्याच हाताला नाही. त्यांचं साधलं जातं तू मात्र बसते राबत त्यांच्या दोन कौतुकाच्या शब्दासाठी. गिरीश बोलायला लागला की ती निमूट ऐकून घेत असे आई म्हणायची शब्दाने शब्द वाढतो आणि भांडणाला निमित्त होतं. समोरची व्यक्ती जेव्हा चिडते तेव्हा आपण पॉज घ्यायचा. रागाच्या वेळी माणसाचं डोकं आणि मन ठिकाणावर नसतं. आपल्या आणि त्याच्यामध्ये त्यावेळी एक अदृश्य भिंत असते त्यामुळे आपलं म्हणणं त्याच्या पर्यंत पोहचत नाही राग शांत झाला की मग आपण आपलं म्हणणं मांडायचं पण आयुष्यभर पॉज घ्यायची वेळ फक्त आपल्यावरचं येईल असं तिला लग्न करून गिरीशच्या आयुष्यात आली तेव्हा वाटलं नव्हतं.गिरीशला नेहमीच मी केलं तेच योग्य किंवा माझंच बोलणं बरोबर आहे असं वाटायचं. म्हणतात ना की झोपलेल्या माणसाला उठवता येते पण ज्याने झोपेचे सोंग घेतलंय त्याला उठवणं कठीण तशीच काहीशी परिस्थिती होती.मैत्रिणीच्या लग्नात मुंबईवरून आलेल्या तिच्या मामेभावाने.....गिरीशने तिला पहिल्याच भेटीत जिंकून घेतलं. त्याच्या काळ्या सावळ्या रुबाबदार रूपाने तिला मोहिनी घातली होती. आत्मविश्वासने भरलेल्या देहबोलीतून त्याचा पुरुषार्थ ओसंडून वाहत होता. तिला तो आवडला अगदी त्याची सिगारेट पिण्याच्या लकबी सोबत. तिच्या कल्पनेतला रांगडा पुरुष तेवढाच जीव ओतून प्रेम करणारा पुरुष गिरीशच्या रूपात तिच्या आयुष्यात आला आणि त्याच्या प्रपोजला होकार दिला. गिरीश आयुष्यात आल्यापासुन

ती गिरीशमय झाली होती. गिरीशच्याही त्याच्या आत्याकडे कधी नव्हे त्या फेऱ्या वाढल्या होत्या.तालुक्याच्या रितिरिवाजप्रमाणे आजूबाजूच्या गावातील कितीतरी स्थळ तिला मागणी घालत होते.आई बाबा तिला उजवायच्या मागे लागले होते.

बाजूच्याच गावातील शंकर पाटलाने आपला मुलगा संदीप ह्यासाठी तिला मागणी घातली. शंकर पाटलांचे पंचक्रोशीत दानशूर म्हणून नाव होते. घरात पैशाला ददात नव्हती. संदीप एकूलता एक मुलगा नुकताच तालुक्याच्या शहरात एम टेक करून नोकरीला लागला होता. स्थळाला नाव ठेवायला कुठेच जागा नव्हती. बाबांच्या ते स्थळ मनात भरलं होतं.

रात्री जेवण झाल्यावर घरातील सगळे माजघरात बसले होते. बाबांनी विषय काढला

शिलू, शंकर पाटीलांनी संदीप साठी तुला मागणी घातली आहे त्यांना आपल्या घरी कधी बोलावायचं? तिने खाली मान घातली. आईने मध्येच तोंड घातलं कुणाच्या प्रेमाबीमात तर नाही पडलीस ना?

बाबा माझं गिरीशवर प्रेम आहे.

गिरीश.. कोण गिरीश?

संध्याचा मामेभाऊ. बाबांनी जास्त काही त्यांच्याबद्दल विचारलंच नाही.

तू विचार करूनच निर्णय घेतला असशील असं मी समजतो, बाबांच्या बोलण्यावरून तिचा निर्णय त्यांच्या पचनी पडलेला तिला दिसला नाही. ती हिरमूसली.बाबा जुन्या मताचे होते असंही नाही. खेडेगावात राहूनही त्याची विचारसरणी पुरोगामी होती. तिला त्यांनी सर्व स्वातंत्र्य दिलं होतं. तालूक्याच्या गावी कधी मधी त्यांना कोर्टात जायची वेळ आली होती. जज समोर आपलं मत आपली बाजू ठामपणे मांडणाऱ्या वकिलांनी त्यांना भुरळ घातली होती. आपल्याही मुलीनं वकिली करून आपलं नाव गाजवावं असं त्यांना वाटत असे. कधीतरी ते ते बोलुनही दाखवत पण जेव्हा तिने बी ए नंतर एल एल बी न करता बी एड ला ॲडमिशन घेऊन शिक्षिका व्हायची इच्छा व्यक्त केली तेव्हा त्यांनी तुला योग्य वाटतंय ना मग माझी काही हरकत नाही असं तिला सांगितलं एवढंच बोलून ते थांबले नाही तर तिला पुण्याला घेऊन गेले व तिचं ॲडमिशन घेऊन राहण्या खाण्याची सोय करून परत आले होते. त्या काळात मुलीला शिक्षणासाठी एवढं लांब कुणी ठेवत नसतं. मोठ्या चुलत्यानी त्याना समजवायचा प्रयत्न केला पण त्यांनी कुणाचंच ऐकलं नाही. तिच्या प्रेम विवाह करण्याला त्यांनी नकार दिला नाही पण एकेदिवशी त्यांना आईशी बोलताना तिनं ऐकलं. शिलू कुणाच्या प्रेमाबिमात पडेल अशी शंकाही कधी आली नाही. शंकर पाटीलाचा संदीप माझ्या मनात भरला होता खूप सालस मुलगा... शिलू ने राज्य केलं असतं. आपल्या आजूबाजूच्या गावातील मुलाशी तिने लग्न केलं असतं तर बरं झालं असतं.

आपण बाबांचं मन दुखावलं ह्याची तिला जाणीव झाली पण गिरीशवर असलेलं तिचं प्रेम तिला माघारी येऊ देतं नव्हतं. नुकताच माहेरपणाला आलेली संध्या बोलली. प्रेमाविवाहत विरोध असतोच. लग्न झाल्यावर सगळं सुरळीत होईल. एवढ्याश्या धीरानेहेर ती जराशी शांत झाली. एका चांगल्या मुहूर्तावर शिला धर्मधिकाराची गरिमा सोनटक्के झाली. तिचं माहेरचं नाव पुसलं गेलं. फक्त नावंच पुसलं गेलं नाही तर त्या घराने आपलं अस्तित्वचं पुसलं हे लक्षात येईपर्यंत बराच वेळ निघून गेला.गिरीश एका नामांकित कॉलेज मध्ये प्रोफेसर होता. मुंबईत चांगला तिनं बेडरूमचा फ्लॅट होता. सासरेबुवा नुकताच इंडियन ऑइल सारख्या मोठ्या कपंनीतून रिटायर झाले होते त्यामुळे पैशाची ददात नव्हती. इंडियन ऑइल कंपनीतून मोठ्या कंपनीतून रिटायर झालेल्या सासरबुवांना तशी घरात किंमत कमीच होती. जे काही निर्णय घ्यायचे ते सासूबाईच घेत असतं. गिरीशचे बाबा जेव्हा मुंबईला आले तेव्हा त्यांना डोकं टेकायालाही कुठेही जागा नव्हती. दूरच्या नातलगाच्या चाळीच्या लांबसडक व्हारंड्यात झोपायला जागा मिळाली आणि सार्वजनिक नळावर अंघोळ आणि सार्वजनिक असलेल्या संडासामध्ये रोजचा नित्यक्रम आटोपयला मिळालं एवढ्यावर ते समाधानी होते. मुंबईला आले तेव्हा खिशात कवडी नव्हती. एका खाणावळीत वाढप्याचं आणि छोटी मोठी काम करायची नोकरीं मिळाली. ते त्याच्यावर खुश झाले निदान पोटाची ददात मिटली होती. पोटभर खायला मिळतं होतं आणि दोन पाच रुपये घरी मनिऑर्डर करायला मिळत होती. गिरीशचे वडील दहावी होऊन शहरात आले होते. खाणावळ चांगली फेमस होती कधीतरी बाजूच्या ऑफिसमधली चांगली रुबाबदार माणसंही कार घेऊन जेवायला येत. त्यांच्या कारकडे बघत आपल्याला कधीतरी अश्या कारमध्ये बसता येईल का ह्या विचारत ती गुंग होऊन जातं असे. एकेदिवशी जेवणाचा वेळ संपतं आला होता. बाजूच्या

ऑफिसमधला एक माणूस कार घेऊन जेवायला आला. पांडुरंग सारखं त्या कार कडे बघत होता. खाणावळीत जेवायला आलेल्या माणसाने त्याला जवळ बोलावलं आणि विचारलं काय बघतोस रे एवढा कार कडे? कधीतरी माझ्याकडं अशी कार असेल. त्याच्या त्या आत्मविश्वासने समोरचा माणूस चकीत झाला. ह्या गाड्या अश्याच चालवायला मिळत नाही कष्ट करावे लागतात त्याला. करेन मी कष्ट .कोणतही काम करण्याची माझी तयारी आहे.

तुझं शिक्षण किती झालंय

मट्रिक पास आहे साहेब. घरच्या पाचवीला पुजालेल्या दारिद्रामुळे पुढील शिक्षण घेता आलं नाही.

रात्रीच्या कॉलेज मध्ये जाशील का?

मागाचा पुढचा विचार न करता त्याने होकार दिला. शिक्षणासाठी लागणारा खर्च त्या भल्या माणसाने उचलला. रात्रीचा दिवस करून त्यांनी शिक्षण घेतलं. पदवी मिळवली.त्या माणसाने आपल्याच कंपनीत इंडियन ओईल मध्ये त्यांची शिफारस केली .खेडेगावातून आलेला मुलगा इंडियन ओईल मध्ये कामाला लागला नंतर त्याने मागे वळून बघितलं नाही. खाणावळीच्या मालकाची मुलगी सविता सोबत प्रेम विवाह केला. नोकराशी आपल्या मुलीने लग्न करणं तिच्या आईवडिलांना आवडलं नाही. दोघांनी पळून जाऊन लग्न केलं. लग्न झालं तरी आपला नवरा आपल्याकडे नोकर होता हे सविता कधीच विसरली नाही आणि घरात तिचाच वरचष्मा राहिला. खानावळीत वाढ्प्याच कामं करताना असलेली खाली मान स्वतःच्या घरातही कधी वर झाली नाही. घरातील सर्व निर्णय आईचं घेत होती.गिरीशला कोणत्या शाळेत टाकायचं त्यापासुन त्याने कोणत्या क्षेत्रात करियर करायचं हे सगळं सगळं आईने ठरवलं होतं गिरीशने कितीतरी विनवण्या केल्या तेव्हा कुठे तिने गिरीश आणि शिलाच्या लग्नाला परवानगी दिली होती. शिलाच लग्न गिरीशशी झालं पण संसार मात्र सासूबाईच्या हाताखाली झाला. गिरीश नामांकित प्रोफेसर असून साधी एखादी साडी बायकोच्या वाढदिवसाला आणायची त्याची हिंमत होतं नसे. बायको साठी आणलेला गजरा बेडरूम मध्ये हळूच हातात द्यायचा आणि रात्र संपली की सरत्या रात्री बरोबर त्या गजऱ्याचं अस्तित्व संपून जायचं. शिला गिरीशच्या प्रेमापोटी सगळं सहन करत गेली. गिरीषचं तिच्यावर असलेलं प्रेम मात्र वादातीत होतं. लग्नाची विस वर्ष अशीच निघून गेली. सासूच्या तालावर नाचताना शिला थकून गेली होती. सासू सासऱ्याच्या मृत्यू नंतर तिने सुटकेचा निश्वास सोडला होता.आपल्या आईसमोर बाबांची झालेली घुसमट, अगतिकता गिरीशने लहानपणापासुन पाहिली होती. त्याच्या मनात न्यूनगंड तयार झाला त्यामुळे तो शिलू आपल्याशी आईसारखी वागू नये म्हणून तो काळजी घेऊ लागला. तिच्यावर एका बाजूला जीवापाड प्रेम करायचं पण तिला कधीच वरचढ होऊ द्यायचं नाही असं तो वागत असे. त्याच्या ह्या वागण्याने शिलू आणि त्याच्यात हळूहळू अंतर वाढत गेलं. गिरीशला नेहमी वाटायचं की आपण एवढं हिच्यावर प्रेम करतो पण हिला आपल्या प्रेमाची कदर वाटत नाही.ती पूर्वीसारखी आपल्याशी एकरूप होतं नाही ह्याचा सल त्याच्या मनात सलू लागला होता. बरं तिच्या आयुष्यात अजून कुणी आलं आहे का ह्याची ही त्याने पडताळणी केली पण तेथेही त्याला काहीचं आढळून आलं नाही. आपण तिला नकोसे झालो आहोत ही भावना दिवसेंदिवस त्याच्या मनात घर करत होती. अश्यातच मुलगी पुढील शिक्षणासाठी बंगलोरला गेली. घरात असलेली शांतता त्याला छळू लागली. तश्यातच संस्थेने नवीन उघडलेल्या कॉलेजात त्याला प्रिंसिपलची ऑफर दिली. शिलू पासून लांब राहून बघू या असा विचार करून गिरीश पुण्याला निघून गेला. जाताना त्याने त्याच्या कॉलेजचे, राहण्याचे डिटेल्स शिलूला दिले नाहीत आणि शिलूनेही ते मागितले नाही. त्यांच्यात आपोआपच अलिखित डिवोर्स झाला होता . गिरीश पुण्याला गेल्यावर पहिल्यांदा शिलुने सुटकेचा निश्वास टाकला होता.आता आपण आपलं आयुष्य आपल्या मनासारखं जगायचं असं तिने ठरवलं पण महिनाभरात तिला जाणवलं की गिरीशची आपल्या जवळ नसल्याची पोकळी आपल्याला जाणावतेय. आपल्याला गिरीशची किती सवय झाली होती. आपल्या आजूबाजूला असलेल्या हवेचं अस्तित्व आपल्या जीवनात किती महत्वाचं असतं हे आपल्याला कळू नये असंच काहीसं तिच्या मनात येवून गेलं.

एकदा तिला भयंकर ताप आला.तिला अंथरुणातून उठताही येईना. तिला उगीच जाणवत गेलं. आपल्याला साधा ताप आला तरी गिरीशच्या जीवाची घालमेल व्हायची.

किती अंग गरम झालंय तुझं. थांब पहिला डोलो घे

कुठे ठेवली आहेत गं औषधं? तो तिलाच विचारायचा.

घरातलं काही काही म्हणून तुला माहीत नाही. पेईंगगेस्ट

सारखं सगळं विचारत राहतो.

ती वैतागयाची.

किचनच्या फडतळात शेवटच्या खणात आहेत बघ. गिरीशच्या आठवणीने का कुणास ठाऊक तिचे डोळे भरून आले. कितीतरी वेळ ती रडत राहिली पण निर्जीव भिंतीने तिची दखल घेतली नाही. ती आजारी पडल्यावर त्याला चैन पडत नसे. काहीचं न बनवता येणारा गिरीश अश्यावेळी धावत स्वयंपाक घरात जाऊन खुडबुड करत असे तिला आठवलं. गिरीशला आपण समजून घेतलं नाही का? पत्नीचं नातं निभावायला आपण कमी पडलो का? तिच्या मनात येवून गेलं. पतीपत्नीच्या नात्याचा डोलारा फक्त भावनावर उभा राहतो का? अतीव प्रेमाने केलेला स्पर्श.. आणि समागम हे नातं भक्कम करतं हे आपल्या कधी लक्षातच आलं नाही.गिरीशचं कायम आपल्या भोवती पिंगा घालणं आपल्याला आवडत नव्हतं. आपण त्याच्या सोबत फक्त शरीराने जगत राहिलो.त्याच्या सोबत राहूनही आपण अलिप्त राहिलो. कादंबरीतील पात्राच्या छोट्याश्या दुःखात ही समरस होवून जगणारे आपण गिरीशशी असंवेदनशील वागलो का ?तिच्या मनात विचार येऊन गेला. गिरीशच्या आपल्याला न आवडणाऱ्या गोष्टींची आपण दखल घेत राहिलो. त्याचं भांडवल करत राहिलो.नाण्याची दुसरी बाजू आपण कधी बघून घेण्याचा प्रयत्न केला नाही. गिरीशचा पॅसेसिव्हपणा आपल्यावरील अति प्रेमाने आला होता. त्याने लाख चुका केल्या पण आपल्यावर प्रीत केली. गिरीश आता तिच्या सोबत राहतं नसल्याचं कळल्यावर लोकांच्या नजरा तिला वेगळ्या वाटू लागल्या होत्या.

विचारांच्या भोवऱ्यातून बाहेर येवून तिने तयारी केली. पूर्वी ती तयारी करत असताना गिरीश तिच्या आगेमागे रेंगाळत राहायचा. तिच्या सौंदर्याला दाद देणारी नजर आता तिच्या आजूबाजूला नव्हती. ती थोडीशी हिरमुसली.आपल्याला लग्नात गिरीश बद्दल कुणी विचारला तर त्याला सुट्टी मिळाली नाही सांगायचं आणि वेळ मारून न्यायची असं तिने ठरवलं.

ती हॉलवर पोहचली. सगळ्या नातेवाईकानी हॉल खचाखच भरला होता. तरीही तिला एकट पडल्यासारखं वाटतं होतं.ती निमूट एका खुर्चीवर बसली आपल्याच विचारांत. तिच्या जवळच्या खुर्चीवर कुणीतरी बसल्याचं तिला जाणवलं.नेहमीच्या सेंटच्या वासाने तिने चमकून बाजूला बघितलं. बाजूला गिरीश येवून बसला होता. समोर लग्न लागत होतं. समोर वधू वर शप्पथ घेत होते

धर्मेच अर्थेच कामेच नातीचरामी

धर्म, अर्थ आणि काम ह्याच्यामध्ये मी अतिचार करणार नाही.कोणत्याही परिस्थितीत मी माझ्या जोडीदाराचा हात सोडणार नाही

दोघांची नजर एकमेकांत गुंतली होती. लग्न लागल्यावर ती गिरीश सोबत जेवायला डायनिंग हॉल मध्ये गेली.तू बस ती येतो ताट घेवून. मी येते म्हणत असे पर्यंत तो पुढे निघून गेलाही. त्याचं हे असं वागणं तिच्यासाठी नवीन होतं.दोघांसाठी त्याने ताटे भरून आणली .तिला आवडणारी बासुंदी जरा जास्तच वाटीत दिसत होती.

कशी आहेस? त्याने हळुवारपणे विचारलं.

ठीक आहे.तू कसा आहेस? तुझा जॉब कसा चाललाय. जबाबदारीचे पद तू सांभाळतोयसं हल्ली.

खरं सांगितलं तर विश्वास ठेवशील ? तिच्या नजरेत बघत त्याने विचारलं.

तुझ्यावर मी कधी अविश्वास दाखवला होता का ?ती त्याच्या डोळ्यात बघत बोलली.

खरं सांगू शिलू तुझ्या पासून लांब गेलो आणि सहजीवनाचा अर्थ मला समजत गेला.

तू आईबाबांची इच्छा नसताना माझ्या जीवनात आलीस आणि माझ्या जीवनाला अर्थ आला पण मी तुला कायम गृहीत धरत आलो.संसार म्हणजे एकमेकांवर मालकी हक्क नव्हे तर एकमेकांना आपापली स्पेस देवूनही एकमेकांत समरस होणं म्हणजे संसार हे मला कधी कळलंच नाही.

गिरीश माझाही चुकलंच न , मी कादंबरीतल्या पात्राचा आदर्श रूप तुझ्यात शोधायचा प्रयत्न करत गेले. पुस्तकातल्या पात्रांच्या स्वप्नात मी रंगून गेले पण स्वप्न आणि वास्तव ह्यातला फरक मला कळलाच नाही. मला तू एक आदर्श नवरा म्हणून हवा होतास पण संसार हा कधीच स्वप्नांच्या चौकटीत फीट बसत नाही हे मला कळलंच नाही. संसारात लागतो तो एकमेकांना आहे तसा स्वीकारण्याचा भाव. हे स्वीकारणं ज्याला जमलं त्यांचं सहजीवन फुलत.जर स्विकारण जमलं नाही तर नंदनवनाच विराण माळ व्हायला वेळ लागत नाही .

शिलू, तू प्रेयसीची बायको झालीस आणि मी नवऱ्याच्या भूमिकेत शिरलो. आमच्यासाठी तुझं धडपडणं मला तूझ्या कर्तव्याचा भाग वाटत होता त्यामुळे त्याचं मोल मला कधी कळलंच नाही. बायको म्हणून तू नेहमी मला available असावी असं मला वाटत राहायचं. तूझ्या

सौंदयामूळे मनात न्यूनगंड आला होता. पण त्याचं वेळी तुला कुणी फसवू नये ह्याच्यासाठी मी सतर्क राहायला लागलो.माझ्या ह्या स्वभावामुळे तू माझ्यापासून लांब चाललीय हे मला कधी कळलं नाही. मला वाटायचं की मी तुला नकोसा झालोय.

शिलू, लग्न हे रूप पाहून केलं जातं पण संसार टिकतो तो मात्र विचारांच्या देखणेपणावर हे मला आता उमगलंय.

मी तुझ्यावर बळजबरी करत नाही पण जमलंच तर मला माफ कर.

तिने त्याच्या हातावर हात ठेवला. घरी आपण ट्रेनने जायचं कि ओलाने? तिच्या डोळ्यात प्रीती आणि ओठांवर स्मित फुललं होतं.वाऱ्याने ढगांची पांगापांग झाली होती आणि आभाळ निरभ्र झालं होतं.

ईश्वरतुल्य बाबाआई

वर्षा कुळकर्णी खोपकर, प्रशासनिक अधिकारी,

जगप्रसिद्ध जितक्या आईच्या अमर प्रेमाच्या व
त्यागाच्या अगाध गाथा
बाबाच्या मायेच्याही तितक्याच थोर, अनमोल,
अजरामर कथा

नऊ महिने पोटात वाढवून, असंख्य कळा सोसून आई
देते जन्म
गोड बातमी ऐकून तृप्त बाबा कर्तव्यपूर्तीसाठी तत्पर
आजन्म

लेकरांच्या येण्यानी आईबाबा मनोमन हसतात,
सुखावतात
वाढत्या जबाबदा-यांनी डगमगून न जाता जीवाला
अधिकच कष्टवतात

बाळांच्या गोंडस बाळलीला, हुंकार साठवतात अंतरंगात
आईबाबाचे सारे विश्व सामावते बाळांच्या समीप,
बाळांच्या डोळयांत

आईबाबाची व लेकरांची जोडलेली असते
मायेची अतूट नाळ
पोटच्या गोळयांच्या सुखासाठीच आईबाबाची धावपळ
चालू अखंड काळ

तडजोड करतात आईबाबा स्वतःच्या पोटांना
चिमटा लावत
पिल्लांचे हट्ट व लाड पुरवायला बिनाआराम अविरत
चालूच असते मेहनत

लेकरांच्या काळजीनी, आईबाबाचे काळीज
सदैव तुडुंब भरलेले
लेकरांस जरा जरी ठेस लागली तरी
आईबाबाचाच जीव गलबले
भविष्याची तजवीज व तरतूद पोटच्या मुलांसाठीच सारी
स्वतःच्या प्राणांची आहुती द्यायचीही आईबाबांची
बिनतक्रार तयारी

प्रेमस्वरूप, वात्सल्यमूर्त, तीर्थरूप आईबाबा दोघं
त्यांच्या प्रेमाच्या ऊबदार सावलीत फुलतं मुलांचं
जीवनरोप अवघं

जगण्यासाठी संघर्ष करतात, सचोटीनी लढतात
प्रामाणिकपणाचे धडे स्वतःच्या वागणुकीतूनच देतात

घरकुलासाठी शून्यातून विश्व निर्माण करायला
झटतात अहोरात्र
लेकरांच्या आयुष्यात सुगंधी बाग फुलवत स्वतः
काट्यांचं कुंपण झेलतात दिवसरात्र

ऊच्च संस्कारांची व ङऊत्तम शिकवणींची
मुलांना देतात शिदोरी
म्हणूनच आत्मविश्वासानी यशस्वी होत मुले मारतात
विश्वभरारी

ईश्वरासमान पुण्य थोर दोघे ङबाबा आणिक आई
सात जन्म घेऊन सुद्धा रूण त्यांचे कोणी फेडू शकत
नाही.

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2024-25 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र. सं.	कार्य विवरण	'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
1.	हिन्दी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 100% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1. 'ख' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 90% 2.'ख' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को90% 3.'ख' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 55% 4.'ख' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के 90% राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 55% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति
2.	हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जिनमें कंप्यूटर भी शामिल है, की खरीद।	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं।	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण।	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें			
	(क) हिंदी सलाहकार समिति	वर्ष में 2 बैठकें		
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)		
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहाँ संपूर्ण कार्य हिंदी में हों।	40%	30%	20%
		(न्यूनतम अनुभाग) सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, 'क' क्षेत्र में कुल कार्य का 40% 'ख' क्षेत्र में 25% और 'ग' क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए।		

प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, मुंबई प्रभार में आयोजित विविध गतिविधियाँ

पलास, छूल, परसा, ढाक, टेसू,
किंशुक, केसू या कह लो मुझे पलाश
आया फाल्गुन, फैली लालिमा सबको
मेरी तलाश